A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 301 Subject HINDI KAVYA

Name of MSS भ्रमर गीत

Author परमानन्द

Period Folios 94

Script DEVANAGIRI Source Prithi Pal Singh

Missing Folios N.A.

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Hindi Ms.
8 H1
B575
301

भ्रमरगीत ; परमानन्द कृत
६५ पत्रक ॥ ल० म० १५ पं० प्र० पृ०

ह० लि०

No 2

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Brahman-Situ stu DA

A. no. 301

॥श्रीकृष्णायनमः॥ ॥रागगोरी॥

वछोरीमाधोसूँसनेहरा॥नेहीं नहीं

नहीं नंदनंदनरानकरोयहगेहरा॥१॥

अबतोजियएसीवनिआईकियोस

मर्पनुदेहरा॥परमानंदचलीभीजै

नहीं बरसनलाग्योमेहरा॥२॥ ॥२८॥

नंदनंदनप्रियभावतनेरेंवंचलडो

ल॥इंदुबदनभ्रूअनासिकासुभगचा

रुकपोल॥१॥भालतिलकअलका

वलीकुटिलकुंडललोल॥अधरदस

नछबिमोहनीमृदुमीठेबोल॥२॥अं

गबासरसरंगहेमधुपनिकेरोल॥

परमानंदप्रभुलेमिलीनवउरजअमृ

मोल॥३॥ ॥२८५॥ ॥फिरिफिरिकहा

सिखावतिहेरीमाई॥कोप्रीतमम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१

हैं आवतु है मानौं कुंवर कन्हाई ॥ गोरस बेचन च
ली मधुपुरी पाई पाइ परत न हिं आगें ॥ एसौ ठग
री मेलीयोंकों ने मनु तरस तता ही लागें ॥ देखि स
रूपा चिंकृत चितु लाग्यो ताके हाथ बिकानी ॥ प
रमानंद स्वामी मनमोहन सौं रलि सोई सखी सया
नी ॥ १८६ ॥ ॥ बेधी हों पद अंबुज मूल ॥ रह्यो न
परै स्याम सुंदर बिनु नैंना सुख देखत नही भूल
॥ नारिका बृंद संग करि लीने खेलत है कालिं
दी कूल ॥ बलिहारी मनमोहन मूरति नांहि नें
को दूसे मतूल ॥ मारग चलत आपेन्तुक सख्
री लागी कुसुमबांन की हूल ॥ परमानंद हस्यो
मन केसें लोचन चारु कमल के फूल ॥ १८७ ॥
बिहबल भई संभारन ललनको सुंदर छूटे बा
र सकेलि ॥ टूटत हार चलत कुच अंचल मोर
त चुरी खसत सिफूल ॥ बंदन मिटत सरस उर
चंदन देखत मदनमहीपति भूल ॥ अधरपा
न परिरंभन चुंबन परम महोछव रास बि
लास ॥ सुर बिमांन सब गोतिग भूल्यो एक
रूस केलि परमानंददास ॥ १८८ ॥ ॥ नेकु उ
ठाइ देऊ मेरी गगरी ॥ बलि बलि जाउं नंद के
नंदन ढीठ्यो देनि अचगरी ॥ जमुनां भरन न आ
के लीआई दूसरी नांहि नें कोइ ॥ जासौं कहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्यॉम घन सुंदर संग नॉहि नैं सोइ ॥ हसि ब्रजनॉ
थ कह्यो नैं कुछढीकछुक बात कहिलीजे ॥ परमाँ
नंद स्वामी के संग मबचननि के सुख जीजे ॥ ॥
२८९ ॥ ॥ जमुना जलघट भरि चली चंद्रावलि
नारि ॥ नैंननि सौं नैंना मिले मन रह्यो लुभाइ
॥ मोंहन मूरति जिय बसी पगु चल्यो न जाइ ॥
नबलैं प्रीति अधिक बढी यह पहली भेट ॥ प
रमॉनंद एसी भई जैसें गुर चेंट ॥ ॥२९०॥ ॥
हरि सौं एक रस भीतिरहीरी ॥ तनमन प्राँन स
मर्पन कीनो अपनों नैं सुब्रत ले निबहीरी ॥
मरजादा उलंघि सबनकी लोक बेद उपहा
ससहारी ॥ कहत सुनत चितु अनंनन दासो
सोई हि लगज्यो पेंड गहीरी ॥ प्रथम भयो अनु
रागदृष्टि नैं मनऊँ रांक निधि लूटि लहीरी ॥
परमाँनंददास गोपनिकी प्रेम बिथा सुकब्या
स कहीरी ॥ ॥२९१॥ ॥ जसोदा नंद नंदन आ
वे ॥ हरि रूप देखि जीजे ॥ सादर अवलोकनि
नखि नैंन पॉन कीजे ॥ स्वेद प्रस्वेद बंदा बिंदु मं
डित तन जोती ॥ बिकसित कमल पत्र ऊपर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२

रूलकतजनुमोती॥धातुप्रवालगुंजाहारमोर

चंदसोहे॥बनमालामधुपलुब्ध उपमाको

कोहे॥नृत्यतगावतबैंनुबजावतरव्योरवप्र

वेसकीनो॥परमानंदस्वामीगोपालसंतनि

सुखदीनो॥ ॥१८२॥ ॥नेरीनालनागोमो

हिबलाइ॥बालगोपालछगुनुआंमेरेचल्ल

ऊनप्रंगनोधाइ॥लटलटकनसोहकरपक

वीनूंपुरबाजतपाइ॥चुटकीदेदेग्वालिन

चावतिमुदितनसोदामाई॥आनंदभरीनं

दजूकीरांनदेखिअनूपमभाइ॥परमानंदनं

दनंदनकोंगरवोंगीउरलपटाइ॥ ॥१८३॥ ॥

आउहोआउगुसांईनंदकेनंदलेधेंनु॥सां रू

क्रूस्न: परतिहेभैयारानेंकहाबनावतबेंनु॥ सारसिंघ

२ बनबऊतबसतहैंबिगतिनकोडरूनोहिनांही॥

वृंदावनघनस्यांममनोहरचलऊवेगिघरजा

हीं॥भवनचतुर्दशजाहिसबमानेनिगमपारू

नहीपावे॥परमानंदप्रभुत्रिगुर्मनरहितहरिता

हिग्वालडरपावें॥ ॥१८४॥ ॥प्रीतमदेखत

हीपेरहिये॥नेंननिकोसुखकहतनआवेना

कारणसबसहिये॥सुनऊँगोपाललालपा
इलागेंभलीपोचलेबहियें॥हूँआसक्तभईइहिं
रूपेंबडेभागनेंपइये॥तुमबऊनाइकचतुरसि
रोमनिमेरीबाँहदृढगहिये॥परमांनदस्वामीम
नमोहनतुमहीतेंनिरबहिये॥२८५॥ ॥मैया
होआजुबनीगोपालमंडलीबोलतआवेंधेनु
॥परमकोलोहलकमलनेंनसंगबाजतआवे
बेंनु॥बर्हामुकुटश्रवणगुंजामनिअंगरागबन
धात॥कियेसिंगारसबगोपमंडलीमिलिलिलि
तबजावतपात॥कोऊकाहूकोंगारिदेतुहेंको
उमिलिगावतगीत॥निर्गुनब्रह्मसगुनतन
काछेंयहलीलारसरीति॥गोपीएककहतिस
खियनिसोंचलोआगेंह्वेलीजे॥परमानंदस्वा
मीकेउपरप्रांनन्योछावरिकीजे॥२८६॥ ॥
रहेंगहिभाँमिनीकीबाँह॥मदनगुपालचतु
रचिंतामनिजानतहेंसबमांह॥ठाढेबातक
हतराधासोंतहांजसोदाआई॥जहेंईमिस
करिरोंबनलागेइनिमेरीगेंदचुराई॥कों
नसुटेवपरीयाढोटाहिबरजतकाहेनमाई॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

3 कमलनैंनयागोकुलहीमेंउलटीचालचला
ई॥सुनिमदुबचननंदनंदनकेमहरिचलीमु
सिकाई॥परमानंदप्रटपरीहरिकीसबेबात
मनभाई॥ ॥१८७॥ ॥बिमलजसुहंदाबनके
चंदको॥कहांप्रकाससोमसूरजकोजोमेरेगो
बिंदको॥कहतिजसोदासखियनिआगेंबैभ
वआनंदकंदको॥खेलतफिरतगोपबालक
संगठाकुरपरमानंदको॥ ॥१८८॥ ॥रहोबलि
माधोरुगरोनकीजे॥चुंबनकरिकरिकंठलगा
वतिमोपहिंओररिलोंनालीजे॥कनियांलि
येंजसोदाठाढीअंगुरिनिकरिकरिचंदुदिखावे
॥कमलनैंनखेलनकोंमांगेवहप्रकाससो
हांक्योंआवे॥जाकेउदरबासबसचराचरसो
कृष्ण: हरिबालकव्हैसाजनावे॥परमानंदस्वांमीमन
२ मोंहनकोंजसुमतिकांकुकाकुकहिगावे॥ ॥
॥१८९॥ ॥रागकल्यान॥हरितेरीलीलाकीसु
धिआवेत॥कमलनैंनमोंहनमूरतिकोंमन
मनचित्रबनावत॥एकबारजाहिमिलतमृ
पाकरिसोकेसेबिसरावत॥मउमुसिकांनिबे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

4

कन्अवलोकनिचालमनोहरभावति॥कबहुँ
कनिविडतिमिरआलिंगनकबहुँकपिकसुर
गावति॥कबहुँकसंभ्रमक्कासिक्कासिकरिसं
गहीनउठिधावति॥कबहुँकनेंनमूंदिअंत
रगतिबनमालापहरावति॥परमानंदप्रभु
स्यांमध्यांनकरिबासनैरबिरहगंवावति॥
॥ ॥२००॥ ॥कांनरो॥इहिंगोकुलएअनो
खेढ़ाँनी॥चलेजाऊअपनेरसढोटाहमसोंको
नचतुराईठांनी॥कोंनहालकीनेहरिमेरेफिरि
फिरिकहतिअटपटीबांनी॥एबातेंसबब्योरिक
हांगीबेठीकेंजहांजसोदारांनी॥अंतरगतिहरि
कोसंगभावतदेखउग्वालिनिमुखहरिसांन
॥प्रांनबसततेरेकमलननेंनमैंजियकीजन
परमानंदजांनी॥ ॥२०१॥ ॥गोडी॥मनजुपरा
एंबसपर्योइननेंननिकेंघालें॥स्यांमधांम
मेंगडिरह्योपर्योगरूवेंपालें॥१॥बिछुरतक
ठिनकहाकरोंसमुझायोनमांने॥कमल
पंकमेंगडिरह्योसुखदुखनहिंजानें॥२॥सु
खपायोआनंददेखिमुखससिहिजुमानों॥
परमानंदउपज्योजहांसोतहींसमानो॥२०२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

5

माईकोतुमिलनवेनंदकिसोरहि॥एकवारकोतुनेंनसिखावकुमेरेमनकेचारहि॥जागनगगनगगनतनहीं॥खूटनक्योंपाउंगी भोरहि॥कहारीसखीतवकैसेंजीजेसुनितमचुरकीरोरहि॥जोपैप्रीतिहोइअंतरगतिजिनिकारूबनिहारहि॥परमानंदप्रभुआनिमिलहिगेसखीसीसजिनिढोरहि॥ ॥२०३॥ ॥रागकल्याण॥

सिखवातिकेतीरातिगई॥चंदउदोबरहीसनलाग्योतूंनहीआरभई॥सुनिमनमुगधकहोनहींमांनतिनमींहृदयकई॥परमानंदस्वामीकोंनमिलतीतोप्रतिकूलुदई॥२०४॥ ॥भरीदोंहनीदूधहाथतेंबरबटहीलेजातछिनाइ॥इतनीडिलोजानिकछैयाकीयोतेंढोठजसोदामाइ॥वांटिवांटिदेतओरनिकोंसुनिरीमहरिआपुपैंनखाइ॥अनओसरबछरुवाछोरतुहेतारीठोकिविडारातुगाइ॥नंदरारइकोएकहीढोटातासोंमेरीकछुनबसाइ॥परमानंदप्रभुआंखिदिखावतबदनसरोजदेखिमुसिकाइ॥२०५॥ ॥रागकांनरो॥जोविंदप्रीतिकेबसकीनो॥अंतरगतितेंस्यामनोहरअनतजांनन

कृष्ण:
८

दीनो॥ नहिं सहि सकति बिछुरि बो घटु भरि

भलोने मुतें लीनो॥ परमानंद प्रभु मोहन मूर

ति चरन कमल चित दीनो॥२०६॥ ॥ कहे राधे

देखउ गोविंद॥ व भलो बनाउ बन्यो हे बन को

पूरन राका चंद॥ मंद सुगंध सीतल मलयानि

ल कालिंदी के कूल॥ पाई बडाई महि त्रिकाल फूत्या

नि फूले निर्मल फूल॥ सबे अभिलाख हो तहें

नही मन केरै मति जियसाधा॥ तुहरी समीप कोन

रमनो ही नाथ सकल सुख साधा॥ सुनि

कें बचन बहुत भलो मानो अंक भरी भुजा

रि॥ परमानंद प्रभु प्रीति गोनि करि नागर र

सिक मुरारि॥२०७॥ ॥ मेगोरा॥ ने कुल ला

ट कुमेरी बांहियां॥ ओ घर घाट च धो नहीं

जाई रपटति हों कालिंदी महियां॥ सुंदर स्याम

कमल दल लोचन निरखि रूप ग्वारि अरुरो

नी॥ उपजी प्रीति कों मचित अंतर नवनाग

रि नागर पहिचानी॥ हसि ब्रजनाथ गह्यो क

र पध्नव मेरी गगरी गिरन न पावे॥ परमानं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

5

दसयानीग्वारिनिइहिंमिसहींकरपरसुक
रावे॥२०७॥ ॥कानरो॥तुमबनवारीहोबन
बासी॥बिनांबिनोदुरहोनहिंआवेकरतअ
टपटीहाँसी॥कहिहोंकछूछाडिदेअंचलतेरे
बबाकीदासी॥अपनेंरंगतुमछेलछुटोंनां
गेलचलोकिननासी॥एसीओरकोंनजेसे
तुमकहाभयोजोत्रासी॥परमांनंददासस
लोनेबनबनफिरतमवासी॥२०८॥ ॥दोउ
नैंननिमेंलायोतेंटकुरुकु॥बारंबारद्वारह्वे
गोंकतिमदनगुपालकीमूरतिकोतकु॥जो
लौंहरिकोसरूपुनदेखतिहुदेंतलाबेलीआ
गी॥परबसबासुहमारोतेरोग्वालिनिचर
नकमलअनुराग॥तूनागरीओरसबमू
रखअपनोंसहजसुभाऊंनावति॥परमानं
दस्वांमीरसअटकीताकीबीथीदिनउठिआ
वति॥२१०॥ ॥रसिकसिरोमनिनंदनंदन॥
रसमेंरूपअनूपबिराजितगोपबधूउरसी
तलचंदन॥नेननिमेंरसुचितवनिमेंरसु

पत्र:
५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6

गावनिमेंरसुथकितमनुजपसु॥ बातनि
मेंरसुमिलवनिमेंरसुबेंनमधुररसुप्रगट
पावनजसु॥ जिहिंरसमंत्रफिरतमुनिम
धुकरसोरससींचतब्रजवृंदाबन॥ स्यांम
धामरसरसिकउपासकप्रेमप्रवाहदासप
रमांनंदमन॥२११॥ ॥बदनकेंहोंरूपराा
ची॥ आउगोपालखेलिमेरेआँगनइहिमि
सलालप्रातिकरिसांची॥ अबकेंदुरएँक्यों
बदुरतिहेप्रगटभईसबगोकुलमांची॥ घर
घरघेरमथनसबहिनिकेअकेलीमातज
सोदाबाची॥ ऐसीकरिसुंदरब्रजनायकम
रकतमनिकंचनज्योंपाची॥ परमांनंदप्रभु
लोकुहसनदेहोंतोदृढनांहिनेंमतिकाची॥
२१२॥ ॥लालतुम्हारीबातमोहिभावति॥
बारबारजसुमतिकेअंगनांयहहोंसुननहों
आवतिआल॥ पारपरोसिनिअनखमरतिहें
औरेकछूलगावति॥ ताकीसाखिबिधाता

6

नानें जिहिं लाल चतुरहि धावति ॥ दधिको

मथन तजि गृहको कारज तुलसी रे प्रेम बिसरा

वति ॥ परमानंद प्रभु कुवर लाडिलो देखत

नहीं सुख पावति ॥२१३॥ ॥ मानें रसु रहे

गोपाल लाल सोई सयानी तु मकरहु ब

सीठी ॥ यह अपराध परयो अनजानन तन अ

लक लडी कछु बात अडीठी ॥ के घेरो के रहे

सकल सखी नंदनंदन सों मेरी नाहि ढीठी ॥

जुवती जाति दोस को भाजन समुझति नाँ

हि कछु करई मीठी ॥ अब अभिमान करौं

कृष्णः ६ नहीं कबहू तेरे हाथ दें उलिखि दीठी ॥ पर

मानंद प्रभु आनि मिलावहु कमलनेंनकी

महिमा दीठी ॥२१४॥ ॥ सब भांति छबीली

कांन्हकी ॥ नंदनंदनकी आँखनि छबी

ली मुख छबि बीरा पांनकी ॥ अलक छबी

ली तिलक छबीले पाग छबीली बांन

की ॥ भोंह छबीली दृष्टि छबीली सहज छ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बीलीसाँनकी ॥ चरनकमलकीचारु
छबीलीसबअंगसोभाठाँनकी ॥ परमाँ
नंदप्रभुबेंनुछबीलोसुरतिछबीलीगाँ
नकी ॥ २२५ ॥ ॥ राधामाधोकोमुखनी
को ॥ देखिनेंनभरिमोहनमूरतिमिल्यौ
भाँवतोजीको ॥ सघननिकुंजपुंजद्रुम
बेलीमेंलेठोरनेंऔंयो ॥ नानीजुप्रीति
चोंपमेंतेरीआँनिसमीपबसायो ॥ अब
जिनिटरनदेऊइहाँतेंजोभावेसोकोजे
॥ परमानंददासकोठाकुरसरबसुदे
रसुलीजे ॥ २२६ ॥ केता ॥ नेरीसोंअपनेबा
बाकीसोमेरेंमदनगोपालपियारे ॥ नं
दकेलालहहसेमेरोबंध्यौलागेरीमदन
बांनअनियारे ॥ निसिअंधियारीकछू
नसूझतअरुनबसनतेरेदेखियतकी
रे ॥ परमानंदस्वामीलेमिलहूज्योंनजा
नेंरीनभकेतारे ॥ २२७ ॥ ॥ गोविंदको

7

कुलकी जावनि॥ अबवे बातें क्यों बिस
रनिहैं दूधपतूकि निपावनि॥ यह तो देखौ
दसा हमारी जोग ग्यां न किहिं लेखें॥ अं
तरगति का हिलगा विचारो जीवहिं गो
पाल हिंगोपाल देखें॥ जिहिं मधुकर अं
बुनरसचाख्यो क्यों करई रतिमानें॥ ता
कीसाखि दास परमांनंद भेद बिरह को
जानें॥ २८॥ ॥ राग सारंग॥ ग्वालिनि

तो पें ऐसो क्यों कहि आयो॥ मेरें घर घर खा
न स्यांम घन ताहि तें दासु लगायो॥ घर
हाको मां खन दूध न भावे ते रो दह्यो क्यों खा
यो॥ वारिजा रों को टितो सी तिय जि नि मेरो
ल ल न न खि जायो॥ कटु क बचन सुनि ग्वा
लिनि बोल्ली हरि सों नेह बढायो॥ परमां
नंद प्रभु बत रस अटकी घर को काज बि
सरायो॥ २९॥ ॥ ग्वालि नि तेरी ना कौ
छी छि॥ कहा दूध में घालि जमायो सां चु क

कृष्ण:
९

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

8

होमेरीबाछि॥ औंनैंभांतिचितेबोतेरो मोंहचलतिकछुआछि॥यहठकुरकु मेंकरूंनदेख्योतूजुरहीकछुकाछि॥र हसिकाककरकुचगहिबूरुतक्योंबप रतिपरुपाछि॥परमांनंदगोपालआलिं गीगोपबधूहरिणाछि॥२२०॥ ॥रूठेंहोंहों सगोपालहिलावति॥जहींजहींखेलेमेरो मोंहनतेहींतहींउठिधावति॥कबतेरोमां खनदधिखायोएसैंहीआवतिहाथनचा वति॥परमांनंदमदनमोहनकोंब्रजका लालाभावति॥२२१॥ ॥आउहोआउल लाकिनिएसेढंगलायो॥उगरछाडिउठि चतुरगुसांईचाहतिगारिदिवायो॥कोतु हारोकुलभयोअचगरोगोरसदांननिवारो॥ ॥सोंनचलोज्योंनंदभलोमानेतेंब्रजबा ससवारो॥दारुनकंसबसतुहमथुरांताह कीसंकनमानें॥नंदगोपकेकुंवरुलडैले

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

8

आपुबकूतकरिजानें॥बानेंकरतप्रेमरस
बाद्योनेंनरहेअरुभाई॥परमानंददासव
ह्ग्वालिनिघरहिकोंनविधिजाई॥२२२॥
॥ ॥ढाढीजसोदाकहें॥यासबब्रजकोलो
गुलालकोगोंहनलाग्योरहे॥कान्हकेंआं
गनाछइचलेनहिं्रूठासांचोआनिकहे॥ए
कगांउएकठांउसरवारीएसेंक्योंनिवहे॥सु
निजसोदातोहियहनबूझियेसबकोजीव
नियहे॥परमानंददृष्टिचेजरेताकीतुबोंक
दृष्टिचहे॥२२३॥ ॥मेरोकांन्ह हिंकलुएन
लागेगंगाकोसोपांन्यो॥पांचबरसकोसु
तसांवरोतेंकतबिरवईजांन्यो॥नितउठि
आवनिहाथनचावनिकोंनसहेनंकवां
न्यो॥तूरीफोरतबांहमरोरतमोंटदहीको
भांन्यो॥ढाढीहसतिनंदजीकोरांनीग्वालि
निबचनमांन्यो॥परमानंदमुसिकाइचली
तबदेखिमहरिघररानों॥२२४॥ ॥गोबिं

कृष्ण:
८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

दुनाइ लो जडबोरा॥ अपनें रंग फिर लगो
कुलमें स्यांम बरनने सो भोंरा॥ जब मुसिक्या
इ चलन गाजकी गति मेरो मन नांहि नें ठोरा
॥ चितवनि चारु बंक अवलोकनि जियभाव
तु नहिं ओरा॥ ताकी चितवनि सब ब्रज मो
ह्यो सकल देव सिर मोरा॥ परमांनंद दा
स को ठाकुर संग दुरौं नागोरा॥२२५॥ ॥
चलि सखी देखन कुंजकुटी॥ मदनगोपाल
मनोहर मूरति मनमथ कोनलुटी॥ सुरतस
रमें लरत सखी की मुकतामाल टुटी॥ उर
जतेज कंचुकी चुरुकुटु भई कटिपट ग्रंथि
छुटी॥ रसिक सिरोमनि सूरनंदसुत लीनी
अधर घुटी॥ परमांनंद ग्वालि गोविंद रसन
की जोरि जुटी॥२२६॥ ॥ एढोटा हठि हरत
परायो मन॥ देखत रूप ठगोरी लागी ज
गत बिमोहन स्यांम बरन तन॥ दिन दि
न चोंप चोगुनी बाढति पावस रितु मानों
नौतन घन॥ दामिनि कोटि पीतांबर की छबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१ परमानंदराजतवृंदाबन॥२२७॥ ॥गोबिंदु
चलनतदेखियतनीके॥मध्यगोपालमंडली
मोहनकांधेनधरिलए छीके॥बछराहंदहा
किआगेदेजनजन्नश्रृंगबजाए॥जनुबनक
मलसरोवरतजिकेंमधुपउनीदेआए॥वृं
दाबनप्रवेशअघमर्दनबालकलीला भा
वे॥प्रेमसमुद्रलोकत्रैपावनजनपरमानंद
गावे॥२२८॥ ॥ग्वालिनिहसतिहसति
घरआई॥कहांगयोमहरितुह्मारोढोटा
मेरोमोतियनलरतोरी॥वेऊवेधाटपियाव
तगाइनिहोंओझिलकेझाई॥करलपेटिउ
कृष्णः ८ ठाइकरअंगियांअरबराइउठिधाई॥नाहें
गयोतिहारेचोरीमोकछुरेऊबधाई॥यहकुमा
रलीलामोहनकीजनपरमानंदपाई॥२२९॥
॥ ॥आईहोंइनहोपाइनिदोरी॥घरकेकोक
जसबेबिसराएनंदनंदनरसबोरी॥गईगि
राइहाथतेंककनांघरहीजाइसंभार्यो॥ढी
लीकीलनिकसिपरोकितहूजसुमतिबिचारेंउ

10

स्यो॥ठाढी हसति नंदनी कारौं नीह्यौं ते रोक छु
वेन जाई ॥ परमानंद अस्तुति करैं गोपी इहिं
घर सदा बस आई ॥२३०॥ ॥करन दे लोग नि
कौं उपहास ॥ मन क्रम बचन नंदनंदन को
निमरवन छाडौं पास ॥ यकु टुंब के लोग चि
कनियां मेरैं भाएं घास ॥ अब जिय एसी बनि
आई क्यों मानों गीत्रास ॥ अब क्यौं रह्यो परेस्यौं
मसुंदर बिनु एक गांउ को बास ॥ ए बातें नीकें
जानतु हे जन परमानंद दास ॥२३१॥ ॥प्र
थम सनेह कठिन मेरा माई ॥ दृष्टि परी ह्व रवमों
न नंदनी अरु जैनें न निवारे न्माई ॥ बछ
रा छोरि रवरिक में दीनो आपुनु रुम किति
री छी आई ॥ नौंव त ह्व रवभ गई चलि गेया
हसत सरवा कहा दुहत कन्हाई ॥ वास्यो नैन
भऐ न बसन मुख नंदनंदन सों रुचि उपजा
ई ॥ परमानंद स्वांमी रति नागर नागरि सों
मन साअरुझाई ॥२३२॥ ॥कमल दल नैं
ना मोहना ॥ अचकां दृष्टि परे में देखे जहां के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

10

रनगोदोंहनों ।।स्यामबरनतनकटिपीरोपु
दुहाथपारकीनोई।।वाँमपाँनिदोंहनीकन
कको।निरखिरही मुखुसोई।।घरबिसर्यो तन
की सुधिभूली प्रीतिनिरंतरबाढी।।परमानंद
प्रभुजहाँखेलतहेंनिरखिरहीमुखुठाढी।।।
।।२३३।। ।।गावतिमुदितखरिकमेंगोपीसा
रंगरागमोंहनी।।बारबारहरिबदननिहार
निहाथकनककोदोंहनी।।कनकलतासीचं
पकबरनी।स्यामतमालगोपालकीजोरी।।
ठाढी।निकटमिलीसोतनमननंदनंदनसोंं
प्रीतिनथोरी।।कमलनेंनहरिवेमृगनेनी।उ
भैसरूपनागरीनागर।।प्रीतिपरस्परग्रंथि
नछूटनपरमानंदस्वामीसुखसागर।।२३४।।
।। ।।सिरधरेंपखौवामोरके।।गुंजाफलफ
लनिकेलटकनसोभितनंदकिसोरकें।।
ग्वालमंडलीमध्यदेखिसखिकोतुकमाँख
नचोरके।।नाँचतगावतबेंनुबजावतअंस
भुजासखाअंसके।।तैसेईफरहरातरसभी

छस:
१०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नेछबिपरीतां बछोरके॥परमांनंदस्वामीम
नमोंहनहरतनेंनकीकोरके॥२३५॥ ॥खे
लतचलेबजावनतारी॥खाततालफल
करतकोलाहलदेतपरस्परगारी॥बहूत
घासराख्योबनरासभअबकेंमारनपायो॥
जेजेरामकृष्णदोउभैयासबग्वालनिजसु
नायो॥अबयहगोधननिर्भयचरिहेतुअप
नापनोबिंदा॥एसबकथाचलहिंगीआगेब
लिबलिपरमानंदा॥२३६॥ ॥अबडरु
कोंनकोरभैया॥गलगरलोगोकुलमेंबेठे
हमरोमीतुकन्हैया॥एसबग्वालकहतमों
हनसोंहेत्रिभुवनकोरैया॥गिरिउदृरोबका
सुरमास्योकोकहिसकेगमैया॥नांचकुगा
वऊकरऊबधाईचोरीधोरीगैया॥परमांनं
ददासकोठाकुरसबप्रकारसुखदैया॥२३७॥
॥ ॥खेलतमेंकोकाकोगुसैया॥श्रीदामांज
त्योतुमहारेबरबटहीहठकरतबडेया॥जा
तिपांतिकुलबड़ेनतुमतेंछैजद्यपिबसत

तुम्हारीछैंहियां॥याहीतेंअधिकईजनाव
तहमतेंबकुनतिहारीगैया॥हूटिकरेतोसों
कोखेलरहेहोसखाठांउकेठैया॥परमांनंद
प्रभुखेल्योईचाहतपोतदेंनकस्योनंदढुहे
या॥२३८॥ ॥राधेहरितेरोबदनसराह्यो
॥बारबारसुनिसारंगनेंनीयहेईध्यांन
अवगाह्यो॥नंदरपतुआपनोमुखुदेखो
निरखिनेंनमुसिकानें॥यहमेंसमुझीसारं
गनेंनीतेराहीहाथविकानें॥करतप्रसंसा
बारबारमोहूतेंप्रतिनीकी॥परमांनंदप्र
खेल्योचाहत भुअंनिमिल्याओपरमभांवतीनीकी॥२३९॥
॥ ॥राधामाधोसोरनिबाढी॥चितवतितहां
कृष्णः जहांनंदनंदनसबतेंलियोमनुकाढी॥एक
११ घ्यासजमुनामजनकरिनिकसितीरमई
ठाढी॥सुकवतिकेसबांमकरसिरधरिबन
हेकंतुकीगाढी॥स्योंमानवरचंपकबर
नीनागरिमनसिजडाढी॥चाहतिमिल्योप्रा
नप्यारेकोपरमांनंदगुनआढी॥२४०॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऽपरैं नांस्यां मतमालको॥ कहिधौंकहांन
होव्रजसुंदरिचंचलनैंनविसालको॥ सुभग
कलेवरप्रगटदेखियतहाथनिकंकनहाल
को॥ सूरसमगनभईनहीजाननितललितत्रि
भंगीलालकों॥ निसिदिनफिरतिगोपगाइ
निसंगबालकेलिव्रजपालको॥ परमांनंद
स्वामीचितचोर्यौमंदगयंदगतिचालको॥
२४१॥ ॥राधेमांनिरीमांनिमेरोकह्यो॥ मोंह
नमदनगोपालमिलेंविनुअंजनतउपरिहनर
ह्यो॥ प्रथमहेमंतुमासव्रतुआचरिकथ्यजमु
नाजलसीतसह्यो॥ नंदगोपसुतमांगिभलौ
बरुभागिआपनेंतैंलुलह्यो॥ जोहरिपठईतौ
हींआईपाॅंनिपांनिव्रजनाथकह्यो॥ परमां
नंदप्रभुप्रीतिमांनिकेयहरसुजातुअकाथव
ह्यो॥२४२॥ ॥काहेकोंग्वालिसिंगारबनावे
॥सांचीबातगोपालहिभावे॥ कंकनन्पुर
धरऊउतारी॥ पहलेंवसनपहरिब्रजनारी॥
एकप्रीतितेंसबनीगुननीके॥ प्रीतिबिनांआ
भरनसबफीके॥ हरिनागरसबहीकोजानें॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

12 परमांनंदहिहीकीमांने ॥२४३॥ ॥मनावति
हारिपरारीमाई ॥नूचठनेमठहोतिनसुंदरिका
नहरिलेंनपठाई ॥राजकुंवरिहोइतोमानेंउर
काहोतिमिठाई ॥नंदनंदनकोजांनिमहात
मअपनोराखिबडाई ॥ठोडीहाथचलादेहूती
तिरछेनेंनचलाई ॥परमांनंदकरोंउलनहिनो
तोबाबाकीजाई ॥२४४॥ ॥राधारीतूमदनकला
॥देखिसरूपचिऊटिचितलाग्योपरमरसिक
नंदनंदलला ॥वारवारहरिचाहकरतहैंज
हांनिकुंजनिवासभला ॥जमुनांतीरसमा
रसुसीतलमगुनोवेंलावेंनपला ॥रितुबसं
तरतिनायकुराजाभेंवरनिचयकूजितको
रुलः किला ॥परमांनंदस्वांमीकेसंगमहिलनतमि
१२ जतसुभगचंचला ॥२४५॥ ॥चारुकपोलनि
कीरुलक ॥सुंदरसुखकमलदेखतलागतनां
हिनेंपलक ॥कुंकुमकोतिलकबन्योकुटि
लनिबिचअलक ॥मोरचंदसीसमुकुटमन
सिजकीढलक ॥स्यांमसुंदरदेखनकीआव
तिजियललक ॥परमांनंदस्वांमागेपालनै

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ननिकोसलका॥२४६॥ ॥गोपालमाईरी
लतहें चुकजोरि॥लरिकासतपचाससंग
लीनें निपटसांकरीखोरि॥चाल्योनें नमिले
नबसन मुखचतुरहसीमुखमोरि॥ठाँई
भएँ बलैयालीनी अपनों अंचलछोरि॥चढिधा
रहरऊरोखांचिलयोसखीलियोचितचोरि
॥परमानंदस्वामीरननिनायकचितेलईर
तिनोरि॥२४७॥ ॥हमारें गोपालआनं
दचाउ॥दुहवतगाइदूधपरिपूरनकीनो
कछूपसाउ॥कहें ग्वालसबआनंदमांते
आंनिबन्योहेदाउ॥कहाकरेंगोकंसुहमा
रोजोमथुराकोराउ॥केसीआदिसकलरि
पुमारेमें होतएकोघाउ॥आनंदभयोदा
सपरमानंदगोपीमंगलगाउ॥२४८॥ ॥
अपनेंगोपालकीबलिहारा॥नांनांविधिर
चिफूलबनाएभलीबनीहेधारा॥सोधेस
हितसुदेसकेसबिचबांकीकुलहबियारा॥
गोपीनकेअनुरागभागसबबांधीसुहयसें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

13 वारी॥ निरखि निरखि फूलति नंदरानी सुख

को रासि बिहारी॥ परमानंद स्वामी के उपर

सरबसु देहों वारी॥ २४८॥ ॥ मैं तुम देखे स्याँ

म मनोहर रूप थतका ह्लको बेनी॥ जद्यपि बे

गुन न्यों न तिना गरि सो हकरतिक वल्लेनी॥ मु

खओरे अंतर गति ओरे ताहि बनाई देनी॥ प

रमानंद स्वामी पाइ लागो भेपर उरवका तर ह्लै

नी॥ २५०॥ ॥ अरीत क्यों आवति है इहि ओर

॥ गोचारन की बाट रोकि के ठाढी आइ भई

भोर॥ के मुसिकाइ करी बस अपने चपल नैनें

न की कोर॥ के कछु पढि डाऱ्यो सखिनो परका

हूँ कुवर चित चोर॥ के घन स्याम भुज निषनि

रनि रख्यो पीत बर को छोर॥ के कबहूँ तें मु

नी अचांनक बा मुरली की घोर॥ के बनमाल

जाल उर मलंपट अटक्यो अलि मन तोर॥

परमानंद प्रभु देख्यो ई चाह तिनाग रनंद कि

सोर॥ २५१॥ ॥ वृंदाबन चंद माई आवत

है॥ गुंजाफल सिर मुकुट बिराजित बैं नु रसा

हस्त:
१३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

लवजावतहैं॥मिसुसंगलियेंपरस्पर खेल
नरचिरचिचित्रबनावतहे॥ज्यौंदांमिनिकों
धतिवाईमेंएसोरूपुदिखावतहैं॥स्यांम
सुभगतनगोरननमंडितपीतबसनछबिपा
वतहैं॥परमांनंददासकोठाकुरसुरनरमुनि
जसुगावतहे॥२५२॥ ॥ढोटाकौंनकोमन
मोहन॥संध्यासमैंखरिकमेंठाढोसहीकरत
मोदोहन॥एतोनंदराइकेढोटाकान्हकुंवर
हेनाम॥सबगोकुलकेप्रांनजीवनधनकम
लनैनघनस्याम॥ग्वालिनिएकपऊंनईआई
रहीठगीसीठाढी॥चितुगडिगयोमदनमूरति
प्रीतिनिरंतरबाढी॥चलिनसकतिपरगरेकें
आगेंमनुलीनोब्रजनांथ॥परमांनंददासज
नतुहेजोरवेंस्योमिलिसाथ॥२५३॥ ॥स्यांम
तुमजुभलेहोरतिनागर॥अबकेंदुराएक्यौं
बदुरतिहेप्रीतिजुभईउजागर॥अधरकालि
माँनैंनरंगमगेरवीकपोलनिपीक॥उरन
खरेखप्रगटदेखियततुहेपरीमदनकीलीक॥
पलटिपस्योपटतिलकगयोमिटिजहांतहां

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कंकनगाढ॥ परमानंदस्वामी मधुकरगति
कौं नैं हमारी चाढ॥२५४॥ ॥नवरंगकंचुकी
तनगाढी॥नवरंग सुरंग चूनरी ओढे चंद्र
वधूसी ठाढी॥ नवरंगमदनगोपालमनोह
रप्रीति निरंतर बाढी॥ स्यामतमालकौ नउ
रलपटति कनकलतासी चाढी॥ अस ब
अंगनि पुनचतुर अति नागरि को कंकना
गुनपाढी॥ परमानंदस्वामी जीवनि रससा
गरमथि काढी॥२५५॥ ॥जहीं जहीं चरनक
मलमाधोके तहीं तहीं मनमोर॥ जे पद क
मलफिरतवृंदावन॥ कगोधनसंगकिसोर
॥ चिंतानकरो जसोदानंदन सांझ सवारें भो
र॥ कमलनैंनघनस्याममनोहरपीतांबर
कीछोर॥ इष्टदेवतासबदिनमेरैं जे माखन
के चोर॥ परमानंददास को जीवनि गोपिन प
रुकझोर॥२५६॥ ॥कमलनैंनं राधिका
मनावत॥ मृगनैंनी मुखनिरखि मनोहर म
नमांहकितो सुखुपावत॥ इतनों भेउप्री
तिकों लछन स्यामसुंदरअंनरगति भावत॥

कृष्ण:
१४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बालबिनोदनंदनंदनकेहसनतचतुरचितवौ
हछिदावत॥उठिजबचलेचरनलपटांनीभी
तभईकछुबोल्योनआवत॥क[redacted]अप
नैठाकुरकीप्रमुदितजनपरमानंदगावत॥
॥२५७॥ ॥हूंतोइहिबैननिहूंकोचेरी॥नंद
नंदनकेअधरनिलागनिश्रवनसुनतसुख
केरी॥रातिद्योसमनुउहांईरहतुहेबादीप्री
तिघनेरी॥परमांनंदगोपालहिभावतिल्ना
खबारहितमेरी॥२५८॥ ॥कौंककमलदल
नैंनतुम्हारे॥अरुनबिसालबंकअवलोक
निहछिमनुहरतिहमारे॥भ्रुअपरबनीकुटि
लअलकावलिमनऊंमधुपझंकारे॥अतिर
सरसिकरसालरसमसेजियतेंटरतनटारे॥
मदनकोटिरबिकोटिकोटिससितेतुमरूपर
वारे॥परमांनंदस्वामीसुखसागरमोंहननंददु
लारे॥२५९॥ ॥रंचकचाखनदेरीदह्यो॥अनु
तस्वादसुन्योमैंश्रवननिनांहिनैंपरतुरह्यो
॥ज्यौंज्योंकरअंबुजदापनिहेत्यौंत्योंमरमुल
ह्यो॥सुंदरस्यांमछबीलेकोटअंचलुरबकिग

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हो॥ हरिहठुकरनदासपरमानंदकापेंपर
तसहो॥ इनिबातनिरखायोचाहृतहोसेंतिही
नातबहो॥२६०॥ ॥अबकोंहरिआइएं॥
होंदर्पनलेमांगसँवारतिचाख्योनेंनएकम
ए॥नेंकचितेमुसिकाइमनोहरमेरेप्रांनबो
राइलए॥अबतोभईचोंपमिलिबेकीबि
सरेदेहसिंगारठए॥तबतेंकछुनसुहाइबि
कलमननमिलेनंदसुतस्यांमनए॥परमा
नंदस्वांप्रभुसोंरतिबाढीसुखसरूपआनंद
भए॥२६१॥ ॥राधामाधोकुंजबुलावे॥सु
निरीसखीमुरलिकाद्वारेंतेरोनांउलेलेगावे
॥कोंनसुकृतफलतेरोमाईबदनसुधाकरभावे
॥कमलाकोपतिपाँवनलीलालोचनप्रगट
दिखावे॥अबचलिमुग्धबिलंबनकीजेचरन
कमलरसुलीजे॥एसीप्रीतिकरेजोमांमिनिता
कोंसरबसदीजे॥सरदनिसाससिप्रगट्योचंदा
खेलुबनेगोमाई॥यासुखकीपरमितिपरमां
नंदमोपेंकहीनजाई॥२६२॥ ॥देब्रजनाथ
हमारीआंगा॥नोंतरुरंगुसुरंगुहोइगोकेबारि

कृस्नः
२५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यामेंमांगी॥ ब्रजकेलोग कहा कहे सब देखि
परस्परनांगी॥ खरेचतुर हरिहो अंतरगतिरें
निपराघरकवजांगी॥ सकलसूतकंचनके
लागेबिचबिचरतननिहागी॥ परमांनंदप्र
भुहा जनुकाहेन प्रेंमसुरंगरंगरागी॥ ३६३॥ ॥
प्रथमगोचारनचलेकन्हाई॥ कुंडलश्रवन
कपोलबिराजतसुंदरताचलिआई॥ माथें
तिलकपीतांबरकीछबिउरमालापहराई॥
ग्रहग्रहतेंदधिछाकलेतहेसंगसखासुख
दाई॥ आगेंधेंनुहांकिसबलीनेंपाछेंबेंनुब
जाई॥ परमांनंदप्रभुमदनमोंहनब्रजबासि
निसुरतकराई॥ ३६४॥ ॥ ढोटाकोंनकोहे
री॥ श्रुतिकुंडलमंडितमकराकृतकनककं
ठजुलरी॥ घनतनस्यांमकमलदललोचन
चारुचपलचलरी॥ चंदवदनमुसिकाइमाधु
रीललरलटकनछूलरी॥ उरमोतिनकीमाल
पीतपटमुरलीकरतलरी॥ पगनूंपुरनिनं
दितकुनितरवकटिकिंकिनिझलरी॥ बाल
कवृंदमध्यबिराजितसोभाकोबलरी॥ परं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

16

मोंनंददासकी जीवनिनंदसुकृतफलरी॥ ॥
॥२६५॥ ॥मनुहरिलेगएनंदकुमार॥बारक
दृष्टिपरीचुरननितनंदेखननहपायोहरि
बदनसुचारु॥ हौंअपनेंगृहसनुसोंबैठीपो
वतिहीमोतिनकोहारु॥कांकरडारिद्वारव्है
झांकेनिकसेबिसरिगएतनकरनसिंगारु
॥कहाकरोंकैसेंमिलहिंमनोहरकोंनमिस
जसोदागृहजाँउ॥परमांनंदस्वामीठगीहौंअ
वानकमदनगोपालभांवतोनांउ॥२६६॥ ॥
सुंदरमुखकीहौंबलिबलिजांउ॥लावनि
निधिगुननिधिसोभानिधिदेखिदेखिजीव
तुसबगांउ॥अंगअंगप्रतिअमितमाधुरीप्र
कटितरस्मिरुचिरठांउठांउ॥तामेंमृदुमुसि
कांनिहरतिमनुन्माइकहतकहतकबिमो
हननांउ॥पियाअंसपरबांमबाहूधरेंयाछ
बिकीबिनुमोलबिकांउ॥परमांनंदनंदनंद
नकोंनिरखिनिरखिउरनैंनसिरांउ॥२६७॥
॥ ॥मेरोलालदिखाईदेदेजात॥आवतहैं
अरवमांनकेंद्वारेंसकुचतकाहेडरात॥अब

क्ल:
१६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तोआइवनीनंदनंदननेंननिनेंनसमात॥
जहांसंकेतबद्दोगेमोंहनतहांस्नेहकीबात
॥मेरोमनतुमहींलोंबांध्योछूटतकेसेंनां
त॥परमांनंदप्रभुहोंजानतिहोंखेलनकों
अकुलात॥२६८॥ ॥संदेसोराधिकाकोल
जे॥तुमदुरिबेठेसघनबनमांहीएसोखे
लुनकीजे॥वहफिरिगईचाहिसबकोंनन
चंदबदनीसुकुमार॥रहेमोंनधरितांहि
देखिहरिकठिनसु'कामसरमार॥बेगि
चलउगहरुकरउकतवहकदंबतरठा
ढी॥परमांनंदप्रभुतुलरेरूपसोंप्रीतिनि
रंतरबाढी॥२६९॥ ॥गोपालमाईखेलत
हेंचोगांन॥ब्रजकुमारबालकसंगलीनें
वृंदावनमेंदान॥चंचलबाजिनचावत
आवतहोडलगावतपांन॥सब्यइतरगें
दचलावतकरतबबाकोआंन॥करत
नसंकनिसंकमहाबलहरतनपतिकु
लमांन॥परमांनंददासकोठाकुरगुनआ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

17

नंदनिधांन ॥२९०॥ ॥राग बिलावल॥ ॥
काहेकों दुराउ करत हो मोहि घोमें तुम देखे अपनी आंखि ॥ जो नपत्याउ कहो न हिमां नैकों और सखी बूझो एक साखि ॥ नवगृह में दधि मंथन लागी तब तुम चित यो धकों रे झांकि ॥पीसब दूध घरां ची [illegible] री ऊपर चले दोहनी ढांकि ॥ करन सों हजसुमति के आगे हम बलदेउ एक ऊते साथ ॥ परमांनंद ग्वालिनी रूठी बितु हीकों मन चावत हाथ ॥२९१॥
॥ ॥ तनक कनक की दोहनी लेदे री मैया ॥ तातउ हन सिखवन कहो स्यधो धोरी गैया ॥ हरि बिरखमां सन बैठिकें मृदु कर पय नलीनो ॥ धार अट पटी जानिकें ब्रजपति हसि दीनो ॥ गृह गृहें आई सबेरे रखा ब्रजनारी ॥ पितासं को च मन हरि लियो हसि घो खबिहार ॥ द्विज बुलाइ दछिना दई मिलि मंगल गायो ॥ परमांनंद प्रभु सांवरो सब को जिय भायो ॥२९२॥ ॥सारंग॥

कृस:
२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नालविनोदहेएकुठान्यो ॥ आपुनुबेठिमध्य
ग्वालत्रिभैंथहेभेखकटिबांन्यो ॥ जोजिहिं
भायोसोतिहिंदीयोसबहीकेमनमांन्यो ॥
संकरखनकोंसाथलेकृ आगेंचलेंकहांन्यो
॥ चल्योभैयाहोजैयेतालबनपीजमुनोदक
पांन्यो ॥ कांकृभैयानेंभलेउकारेरासभकौ
बलभांन्यो ॥ हसिकेंगंवनकियागोकुलकों
जबगोधूलिकजान्यो ॥ परमांनंद्दास
कोठाकुरसेतछजगहितान्यो ॥ २७३ ॥ ॥
आसावरीरागे ॥ एसेमाईअलरिकांनकों
आरेसकीजे ॥ हरिभएनेदेरिबियेदृरसन
पाइलागिमांगिकबुलीजे ॥ अबहीदारि
ढंढोरिमांटतेमाखनखाइमांनछबेठे ॥
ढीथोंदेतबदतनहीकाहूबिनतीकर
तजातएंठेएंठे ॥ सुनजूजमोदाकरतब
सुतकेचोरीकरिकारिसाधुकहावत ॥ ज
द्यपिवेगुनकमलनेंनकेपरमांनंददास
जियभावत ॥ २७४ ॥ ॥ सारंग ॥ सहजप्री

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

18

तिगोपालहिभावे॥मुखदेखतसुखहोत

सखीरीप्रीतमनेंननिनेंनमिलावे॥सह

जप्रीतिकंकमलनिअरुभांनहिसहज

प्रीतिकुमुदिनिअरुचंदहि॥सहजप्रीति

कोकिलावसंतहिसहजप्रीतिराधानंदनंद

नहि॥सहजप्रीतिचातकअरुस्वातिहिस

हजप्रीतिधरनीअरुघरही॥मनक्रमबच

नदासपरमांनंदसहजप्रीतिकृष्णअवता

रहि॥२७५॥ ॥आसावरी॥बोलनलागेमोंहन

मैयामैया॥बाबाकहतनंदराइसोंअरु

कृष्णः हलधरसोंभैया॥बोलनफिरतसकल

१८ गोकुलमेंघरघरहोतबधैया॥परमांनं

ददासकोठाकुरअजननकेलिकरैया॥

॥२७६॥ ॥श्रीराधाकेरसिककेलिकोच

हलजाकेमनयहआवे॥सुनतसुनावत

अतिरुचिउपजेपरमपुनीतकहावे॥ब

ड़स्योंनबसेगरभपातकमेंअतिअघपा

पनसावे॥जीवनिमुकतिसूरदासप्रभुह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रिंगुनलीलागावे॥२७॥ ॥बिलावल॥
नीकें आएगिरिधारनागर॥जियकीकृपा
तबहींहमजांनीभोरखुलाईआनिआग
र॥रतिकेसमाचारलिखिपठएसुभगक
लेवरकागर॥जिनकेरसतुमरहेजुबांधे
चतुरनारिकेंबागर॥हमारीचिंताअरु
नेनेंनभएसकलउनिसाकेजागर॥जिनि
तुमसोंयहरवलुकियोहेसुधोंवकोंमेंअबा
गर॥बलिबलिजांउमुखारबिंदकीसुरन
रंगरससागर॥परमांनंदप्रभुहमहिंला
जहेतुमतोसदाउतागर॥२८॥ ॥परमां
नंददासकृतभ्रमरगीतकेकीर्तन॥ ॥
गोबिंदबीचदेसरमारी॥उरतिनकुटीवि
रहदावागिनिफूंकिफूंकिसंधिजारी॥सो
चपोचअबछीनभयोतनकेसीदेहबिगा
री॥जोपहलेंहरिकेंहितकारनबिधिनांसु
हथसंवारी॥करुकगोपघरजननमुनलैंनी

रहती गरभमें आरी ॥ परमानंद इतनी क
नहोती नांउ धरयो ब्रजनारी ॥ २७९ ॥ ॥
सारंग ॥ मथुरा हूं काहे कों आंउं ॥ यह जू
ठी मनुहारि मधुप सुनि जो पे हरि हि न भाँ
ऊं ॥ महत हीन आदर बिनु खटपट ऐसी
बात बहाऊं ॥ तुम चलि जाऊं नंद नंदन पे
बऊरि संदेसे पठाऊं ॥ परमानंद स्वामी जो
बोलें तो पै यां लागि मनाऊं ॥ २८० ॥ ॥
काहे को
मधुपैं बार बार और कथा कहत ॥ हरि
की परतीति गएं नाहिनें कछु रहत ॥ तेज
बायु अरु अकास पृथ्वी अरु पान्यो ॥ तिन
क्रमः १९
में तें नंद नंदन कहा घालि सान्यो ॥ कम
लनैंन स्याम सुंदर देखत जिय भावे ॥ ता
कों तू पुहकरे और कछू गावे ॥ परमानंद
स्वामी गुपाल लीला रस भीनो ॥ निर्गुन
तजि सगुन भए भक्तनि सुखदीनो ॥ २८१ ॥
॥ ॥ हम नहिं गुपाल सों निर्गुनां तो ॥ ठा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

20

वृंदाबनमेंग्वालनिकेसंगकरतभोजन
खाँतो॥ठाढेआइकदंबकीछांहियांठाढेंकह
तोबातो॥चरनजुएकचरनपैंधरिकेत्रिभंगी
ललमुसिकांतो॥आंनिमिलाइभांवती
मूरतिनेगापांनकरिहांतो॥परमांनंददा
सकोठाकुरबेंनुनादरंगरातो॥दिवसदसरहि
चलिबोहरिदास॥बऊरिगोबिंदकथाकहां
सुनिबीबेठिकोनकेंपास॥इतेद्योसहमजा
तनजानेंसंततिसंगतिबास॥एकद्योसबो
आयोकुधोकृपाकरीखस्मास॥हरबककथा
संभारनलागीठाढीलेतिउसास॥परमांनंद
प्रभुकबहिंदेखिबेंजगतबिमोहनहास॥
॥२८४॥ ॥मधुरांहधेनुचरावतहैं॥रा
मसमेतजसोदानंदनवेसेंईबेनुबजाव
तहे॥कोंनेंग्वालकहतउद्धवप्रतिशृंगासं
गारबनावतहे॥मोरमुकुटगुंजाबनमाला
गोपवेसबनिआवतहें॥ब्रजकेनाथनं
दकेनंदनवछ्रवजातिकहावतहें॥करत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

20

नपातभाततताउपर संगकेसखाजिंवाव
तहे॥सुंदरभुवनमनोहरछायासबक्
रूकोंदिखावतहें॥परमानंददासकोठाकुर
रतिरसप्रीतिबढावतहें॥२८३॥ ॥क्यों
ब्रजदेखनहेंहरिआवत॥नवविनोदनई
राजधानीमेंतननारिमनावत॥सुनिय
तकथापुरातनउनकीसकललोकमेंगाव
त॥मधुकरन्याइसकलगुनचंचलरसले
रतिविसरावत॥कोपतियाइस्यामतन
सुंदरकैनवनेपरमननहिंचुरावत॥परमा
कुल: नंदप्रीतिपदअंबुजहरिअंतरगतिभावत
२० ॥२८४॥ ॥तेदिनचलिगएमेरीमाई॥इ
निकोंनमिमेंमिलिकेंखेलतकमलनेंन
लरिकाई॥वहरसुप्रतिबाललीलाकीत
बदेसेंनबुजाई॥मातपिताकाहूंनहिंजा
नीतेसेंहरिपेंआई॥नवयोवनधननंद
सुवनपियकरगहिकंठलगाई॥एसीमि
लनिस्यामसुंदरकीरेंनिनिकुंजबसाई॥

लरवेकोंनहमारेलागेनोरानथोंनीपाई॥पर
मांनंदस्वामीकीबातेंसमझिबधूपछिताई॥॥
॥२८५॥ ॥बऊरिवेदिवसकहोंमेरीमाई॥म
दनगोपालमिलतजबहसिकरिकोंमकेलि
सुखदाई॥एकबारबिहरतहरिसंगमेरीन
दकुमश्रमरूराई॥आपुनुहसनहरिभएठाढे
हठिहरिगारिदिवाई॥मांनुकरतमहलुरा
खोतबकरिमनुहारिमनाई॥परमांनंद
सुमिरिवेबातेंचितेरहीपछिताई॥२८६॥॥
आनुकछुनीकीसबातसुनावे॥केमधुवन
तेंनंदलाडिलोकेवहतुकोऊआवे॥भंवराए
कचरूदिसउडिउडिकोंनलागिकेंगावे॥भो
मिनिएकहसनिसखियनसोंनेननिनीरढ
रावे॥कुचेंचढिचढिसुंदरभाखाकागावचनसु
नावे॥परमांनंदस्वामीरतिनागरहेब्रजनाथ
मिलावे॥२८७॥ ॥तबजुपलटिदेतेबसन
॥आधीबांटिकेंमोकोंदतेबीरारवंडितदस
न॥अबवहप्रीतिकहांगईमोंहनकंठभुजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

21

धरिहसन॥ बारऊँ बारउंचो जु नाम उचारत
ठाली नंदे नेस्तरसन॥ यह कहि बीजंडु नंदन
आगें भूलि नाउन बनसन॥ परमानंद प्रभु के
बिछुरें कों मधुवंगमइसन॥२८८॥ ॥ तबवह कृपा
प्रीति अधिकाई॥ एको घरा नमो बिछुरह ते बा
लकदसा कछाई॥ एक घोससो ई आंगन में जे
गुठामो रिजगाई॥ उठि राधिका निर्मल मुख
देखो नैंननि परीजु जाई॥ नैं करि सांइ रहा जो पि
यसों करि मनु हारि मनाई॥ वे गुन सुमिरि दास
परमानंद है नैन दाऊ बुराई॥२८९॥ ॥ प्रीतिमा
ई बिनु रहें बरु रहतीं॥ मधुबन चलत गोपा
ल लाल के कत एतो दुख सहतीं॥ कत यह का
मकटक ई करतो कतवसंतरितु दहतीं॥ बिनुब
रिखा रितु नैंन जलद नें उरसरिता कत बहतीं॥ पर
मानंद स्वामी के बिछुरें कहूंनसुख सचु लहतीं॥
॥२९०॥ ॥ दिन हा दिन तोरन जागें नीतो॥ मधु
बन चलत गोपाल पियारो प्रेम कियो हठि हा
तो॥ इतनौं दुरिजु आवत मांहो मनु जुउहांठहरा

कृष्ण:
२१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नौ॥ गोकुलनाँथहमारेब्रजकीचलावत
नाहिनैंबातो॥ बिरहबियातनजारनला
ग्यो॥ चंडुभयोअबतातो॥ परमाँनंदस्वा
मीकेबिछुरैंमूतिगईअबसातो॥ २८१॥ ॥
पहलोप्रेमविचारिबो॥ कहियोजाइचरणग
हिलुधोमनकोहितुनउतारिबो॥ जद्यपिरा
जकाजमधुबनकोगोकुलकबहूँसँभारिबो
॥ कमलनैंनबारकचितुकोबोबनगोधन
कोचारिबो॥ हमब्रजलोगमयाकेमानुसइ
तमोकाजसँवारिबो॥ परमाँनंदप्रभुएकबार
मिलिबिपुहेलबिरहदुखटारिबो॥ २८२॥ ॥
प्रीतमतुबतुबैंनीगुहत॥ बोलतहँसिस्यांम
सुंदरधोरीहृथडुहत॥ अबतोमनऔरभयो
मधुबनकेरहत॥ आँनरुचिभईब्रजतुपरअ
बसंदेसकहत॥ देखेबिनुबदनरूपनैंननी
रबहत॥ परमाँनंदयहबियोगकहिनयों
नसहत॥ २८३॥ ॥ कतहरिआवनहैंब्रजबा
स॥ अबभएपुरीद्वारिकाराजाबहुनारीहैं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

22

पास॥कहिबेकोंरहीवेबातेंसुनिबेकोंगुन
ग्रांम॥इरसनमिलनभयेसुविठुलेसनु
मपरदेसीरांम॥जोवनसमलप्रेमपुलकि
ततनडूभीलेनिउसास॥कृष्नधांनलीला
गुनगावहिनपरमांनंददास॥२८४॥ ॥गुप
तमतेकीबातकहेमतिकाहूकेआगें॥केहमि
जांनेंकेतुमिऊधाइतनीएपेमांगें॥एकबारखे
लतबनमांहींमैंनुजनाईभूख॥पाकेफलसत
बदेखिकृपाकरिचढेमनोहररूख॥एकद्योस
विहरतहरिसंगकंटकचुगयोपाई॥कंटकहि
कारिकंटककाद्योअपनेंहाथलगाई॥एसीकि
तीहमारीउनकीजबहोगोकुलबास॥परमां
नंदप्रभुसबबिसराईमधुबनकियोनिवास॥
॥२८५॥ ॥मोहनबिसराईवहबानि॥जोमां
गतीप्रीतिकेनांतेसोईदेतेतबआंनि॥नीके
फलसुगंधकुमडूपरतोरिमनोहरपांनि॥क
मलनेंनमेरेसुखकारनभएसकलरसहांनि
॥सबकहिबीजउनंदनआगेंछांडिसंकोचम

कृष्नः
२२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नकोंनि॥परमानंदप्रभु नद्य पिराना बकबनि
ताकेमांनि॥२८६॥ ॥हरिबिनु अबएसेदिन
आए॥रूपसुभाउतेजयाननकोलेब्रजनाथ
सिधाए॥एकसमेंबिहरतकांननिमेंकंकन
कांऊतुराए॥हंहसिकेंजबमांगनलागीकु
सुमलताअरुआये॥सुमिरतबालदसाकी
बातेंनेंननीरभरिआए॥परमानंदकहोक्यों
जीवेंप्रीतमभएपराए॥२८७॥ ॥सराहतरा
धिकाकीबात॥सुरतिजुकरीबालनीलाकी
लोचनजलनसमांत॥मृगमदतिलकसरद
बिधुबदनीकनकलतासमगात॥जमुनाती
रसंगमिलिक्रीडतघोसनजानेजात॥ममम
दमगनरहतवेमांतीगनतनजननीतात॥पर
मानंदप्रभुसुमिरिसुमिरिगुननंदनंदनपछिता
त॥२८८॥ ॥मोहनवहक्यों प्रीतिबिसारी॥
कहतसुनतसमुझतचितअंतरदुखलागत
हेभारी॥एकदिवसखेलतबनभीतरवेंनीसु
हथसंवारी॥वीनतफूलगयोजुमिकंटकए
सोसहीबियारी॥मोपरकठिनहृदोअबकीनो

23 लालगोवर्द्धनधारी॥परमानंददवलबीरबि
नाँहूँमरतिबिरहकीजारी॥२९९॥ ॥जोपैं
कोऊमाधोसोंकहे॥तोयहकमलनैंनमथुराम
हिएकोपलुनरहे॥प्रथमहमारीदसासुनावे
गोपीबिरहदहे॥हाब्रजनाथरटतबिरहातुर
नैंननिनीरबहे॥बिनतीकरिबलबीरधीरसों
चरनसरोजगहे॥परमानंदप्रभुउतसिधारि
बोग्वालिनिदरसुलहे॥३००॥ ॥बारकगोकु
लतनमनकीबो॥गोपीग्वाईलबनचारी॥अ
पनोदरसनदीबो॥एसबलोगबिरहकेकातर
अंतकहांलोंनीबो॥मथुरानाँथरूपाकेसाग
स्क्ल: रतुमबिनुकोसमपीबो॥चरनकमलगहि
२३ बिनतीकीबायहसंदेसुमुखकहिबो॥परमा
नंदस्वांमीसुखसागरसुनिकैंनाँहिनैंरहिबो॥
॥३०१॥मेरोमनवाहीचाहकरे॥मृदुमुसिकाँनि
बंकअवलोकनिहृदयेतैंनटरे॥नवगोपाल
गोधनसंगआवतमुरलीअधरधरें॥मुखकी
धूरिदूरिअंचलनकरिजसुमतिअंकभरे॥संध्या
समैंघोखमेंडोलतवहसुधिक्योंबिसरे॥३०२॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मोहनमधुपुरीकतनानो॥बरुबेरीवहरहकुह
मारें असुरराजमरमानो॥बरुवहकंसनी
वनोरहतो बेरुचल्योवरुनातो॥हूहबासुवसु
देवदेवकी कतहूँ तयहनातो॥अवकाहेकौं
गोकुलआवें गोसुतवृंदचरावनि॥वहगुन
समुझिकियोनहिंफेरो दुखलदामबंधावनि
॥बिरहबियातनबाढनलागी मैंमनहदैंस
माई॥परमानंदनहीअंतरगतिहमहीउपरआ
ई॥३०३॥ ॥एठोरजहांहरिखेलते॥सुनिरीस
खीमोहिक्योबिसरेजवयीवांनुजमेलते॥यह
निकुंजजहांमनमोहनमिलिमनमथदलपेल
ते॥नवकतवहैंजातब्रजराख्योइंद्रकोपकी
ल्लते॥एकघोसनंदलालललकुटियाकाटि
करीयाबेलते॥परमानंदस्वामीकेबिछुरें उपो
टीयाविनुतेलते॥३०४॥ ॥मारगमाधोको
जावे॥उहिंअनुरागरिनदेखोंकोउजोबनेंन
दुखुखावें॥बालबिनोदकियेनंदनंदनसुमि
रिसुमिरिगुनरोवें॥वासरगृहपतिकाननभा
वलनिसिभरिनींदनसोवें॥अंतरगतिकोबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

24 थामांनसीसोतनअधिकबिगोवे ॥परमांनं
दगोबिंदचंदबिनु अंसुवनिउरजलधोवे॥ ॥
॥३०५॥ ॥हरिकोसंदेसोउनआयो॥बरख
मांसदिनबीतनलागेंबिनांदरसउरकुपायो॥
॥घनगरजोपावसरितुप्रगटी चातकपीउसु
नायो॥मत्तमोरबनबोलनलागे बिरहिनिं
बिरहजनायो॥रागमलारसह्योनहिं जाईका
हूंपथिकसुनायो॥परमांनंददासकहांकीजे
कोंहूमधुपुरीछायो॥३०६॥ ॥ब्रजकीओ
रानिभई॥प्रातसमेंजेबिनाहिनेंसुनियत
प्रतिग्रहहचलनतरई॥ससिकीकिरनितरनिस
छस्त: मलागतिजागतिनिसागई॥उन्नयभूपमकू
२४ रकेतनकी आज्ञाहोतिनई॥बृंदावनकीभू
मिभांवतीग्वालिनिछाडिदई॥संतगोपालला
लकेबिछुरेंबिधिनांओरठई॥३०७॥ ॥ताबि
नुबीततकठिनदिना॥हमरेंप्रीतमकोउनांहीं
एकगोपालबिनां॥मातपितासुजनसुतेबां
धवकरनहेंउपहास॥यहव्रतनेमनिबाहेबनि
हैजबलगुहेउस्वास॥तनमनप्रांनसमर्पने

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कीनौचितचातकज्यौंप्यास॥बालबिनोद
सँभारतिदिन दिनलोचनमुंचतिबारि॥परमानं
दप्रभुमधुवनगमनैंयाँमयामनुगचारि॥
॥३०८॥ ॥मिलतहीं लैधरियोपेपाती॥सन
मुखबचनकहौंमाधोसौं अतिदुखभरीमेरी
छाती॥बहुतकहालिखियेपतियनिमेंबि
लपतिरैंनिबिहांती॥परमानंदस्वांमीकेंबि
छुरैंबिरहाभयोसंघाती॥३०९॥ ॥नैंदनो
रीजाहिपरेताहिकोंअ्ननभावे॥वाल्योजाँम
बेठीनिसिजागेंकबहिंस्यांमघनआवे॥जा
कीछूटिजाइचिंतामनिसोबकोंनढंगसोवे॥
उपजीप्रीतिपपीहाकीसीसदागगनमगुजो
वे॥जाकोमनजाहीसौंलाग्योसोताहाथबि
कांनों॥परमानंदस्वीतिहेएसीकहारंकक
हारानो॥३१०॥ ॥सुरतिकरिउहाकिबरोइदि
यो॥पंथीएकुजातुहोमारगधाँबोलिलियो
॥कहिधौंबीरकहांतेंआयोपुहमिप्रनांमकि
यो॥वहपांलागिसिधारीमंदिरबहुदुखमांनि
गयो॥गद्गदकंठहृदाभरिआयोबचननस

25 होगयो॥ परमानंददास बूझे तेउतर फिरि नद
यो॥३११॥ ॥ संभारज माथव पहिले बोल॥ जे
तुम कहे सभेल पटा नें संग बन करन कलोल
॥ रचि रुचि के मोकों पहरावत मेरे ईनी लनि चो
ल॥ कसन कंचुकी बांधत कब हूँ हस्त कमल
अति लोल॥ बिसरि गए राज धानी पाए कोंकि
य कियेनि रोल॥ परमानंद प्रभु दासी और भई
ई लोग बऊ मोल॥३१२॥ ॥ बिरह बिनु नाहि
ने प्रीति को खोजु॥ बिनु लागे कैसें आवतु है इ
न आंखिन नैं रोजु॥ स्यां मम मनोहर बिछुरन
लागे बेरी भयो मनोजु॥ परमानंद निसूगें जे
नर ते हैं राजा भोजु॥३१३॥ ॥ माधो मुखें देखे
मीत॥ पाछें कोंन कोंन की चाल में उहातर के
न॥ सो प्रीतम जो और निबाहे सदा करे हियनीत॥
मथुरा मधु दे वकी नंदन सुनी कथा विपरीत
॥ सब हिं न प्रान समर्पन कीनो॰ अधर सुधार
स पीत॥ परमानंद प्रभु पाइ लागिए कंस मारि
रण जीत॥३१४॥ ॥ भए हैं पहार से दिनां॥ नि
घरत नाहि सुनें मेरी सजनी मदन गोपाल बि

पत्र: २५

नाँ ॥ स्याँमसमीपकछून हिजाँ नन । बीनतक
लपछिनाँ ॥ परमाँनंददविराहिनीं हरिकी नोरि
चली बतिनाँ ॥ ३१५ ॥ ॥ कीनैंमाईबारूकेस
घरुआ ॥ चलेउद्दारिपुदारि खेलमिसबाल
कनंदउजरुआ ॥ बमनसमीपसरमुनहिनाच्यो
जबठारेदधिचरुआ ॥ जमुमतिदाँवरिमूखलबाँ
धेसुतकेमाँनेहरुआ ॥ अबपछितातसकल
ब्रजबासीसंगनगएउहिगरुवा ॥ परमानंदस्वा
मीकेबिछुरैंसुमिरनसहकेतरुआ ॥ ३१६ ॥ ॥
नैंनामेरेरहटकीघरीभरहाँहि ॥ करिकरिसु
रतिस्याँमसुंदरकीभरिआवेढरिनाँहि ॥ बिनु
ब्रजनाँथकहोक्योंजीजे घरकाँननसुखनाँहि ॥
लेईबसननेईआभूखनभएभुअंगमखाँहि ॥
वामथुराकेदिसकीसखीरीबाउतोनबहाँहि ॥
परमाँनंदस्वाँमीकेबिछुरेहियराक्योंबिसराँहि
॥ ३१७ ॥ ॥ लिखिलिखिपठवनलागेजुहमराए
सीभईस्याँमघनसुंदरपतियनिहाँब्योहार ॥ न
तबवहरुपाप्रीतिगोकुलपरलेतेसबेअभार
॥ गिरिउधस्यो इंद्रबलिमेटीजबब्रजपस्योउख

26 भार॥ गईबातबहुरिनहिआवे गर्गबिचनभु
एसार॥ परमांनंदप्रभुब्रजैबिहीरीजननतिनक्यौं
कोनिस्तार॥३१८॥ ॥माधोनांनिजाऊवेब
तियां॥जेठमासजमुनांनलभीतरनबखेल
तहेलतियां॥निर्मलचंदजबहिंधून्योकोते
ुसरदकीरतियां॥परिरंभनअवलोकनिस
नमुखनिरतिकरतिहैंगतियां॥बृंदाबनबि
हरतनंदनंदनसुरतिकरतिहैंमतियां॥पर
मांनंदस्वांमीरतिनागरकहोसांचुपठएपतियां
॥३१९॥ ॥ऊधोतुमहोनिकटकेबासी॥यहपर
मांरथुसमुझिकरोकिनिमोंउबडेकिधोंकासी॥
ज्ञानध्यानजोगआराधानसाधनमुक्तिउदासी॥
कलनः २६ आंनप्रकारकछूसचुनांहीजेहैंस्यांमउपासी॥
परमांरथअहांजोंजेतेबिरहिनिकेदुखदाई॥
परमांनंदस्यामरंगराचेनांहितेंजोगसगाई॥ ॥
॥३२०॥ ॥बिहबल्लभईफिरतिराधाजीकोंनक
लई॥काकेलरेंबदनप्रेकुंभोंनोतनकीआव
गई॥कोएसोप्रीतमसनभावेजिनियहदसादई
॥मैंतनकीगतिएसीदेखीजानोंकुमुदिनिहेंम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हई॥कहाकरोंएकस्यांमदुटेंनांतासोंप्रीतिन
ई॥परमांनंदप्रभुत्र्यांनिमिलावोहरित्र्यानंदम
ई॥३२१॥ ॥कितेदिनकेगएबिनुदेखे॥तरु
नकिसोररसिकनंदनंदनकछुकउठतिमुख
रेखें॥वहचितवनिवहचालमनोहरवहबांन
कनटबेरखे॥वहसौभगकांतिबदनकीकोटि
कचंदबिसेखे॥सुंदरस्यांमसंगखेलनकीत्र्याव
तिजियउपेखे॥कुंभनदासलालगिरिधरबिनु
जीवनुजनमुअलेखें॥३२२॥ ॥रहिसखीबा
वरीनतुछीजे॥बिछुरनमिलनरचीबिधिएसी
सोचुकहालेकीजे॥अंबुजनेंननीरुकतढार
तिसखिउरअंचलभीजे॥परमांनंदधीरकुध
रिभांमिनिहरिचरननिचितुदीजे॥३२३॥ ॥
॥ ॥इतिभ्रमरगीतासंपूर्णा॥ ॥श्रीहरिः॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

27

२७

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥राग धनासरी॥ ॥बदनकी भांतिसबे
सविचारु॥सकललोककीबे मदनको
टिछबिलोचनभरिबनिहारु॥सुंदरतासिं
धुननीहेमनदरा बाध्यो श्रुतिबिस्तारु॥
जुवतिनिनें नरहेथकितामें तरतनपावें
पारु॥सरदकमलससिकीउपमाकों आ
वेनलीयबिचारु॥कुंभनदासलालगि
रिधरको अद्भुतरूपसुढार॥४०॥ ॥नं
दनंदभवनआवनकेकारनकोंनकों
नमिसठांनति॥नागरिबृथाकाजकीबा
तेंकेसीकेसीबांनति॥भोरहुतेंसंध्या
लगुदेखतिबारबारपयानति॥परमचतु
रबिधासबध्रनठाचेइतरुआनति॥
रहोनपरेभवनएकोछिनुबरज्योकहोन
मानति॥कुंभनदासलालगिरिधरसोंम
नअटक्योहोंजानति॥४१॥ ॥होंतोकहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

28 करोरीमाई॥सुंदरस्यांमकमलदलनैननिमे
मनुलीयोहेजुराई॥लोककुटुंबसबनिमिलि
केहोंबहुतभांतिसमुझाई॥जद्यपिमोहिनंदनं
दनबिनुआंहिनेपरतिरहाई॥अबयाकठिनहि
लगतकैकारनआजमवेविसराई॥कुंभनदास
प्रभुसेलधरनमोहिमनुकठगोरीलाई॥४२॥
॥ ॥अबहीएतेरेनेनांईकरलबसीठ॥यहना
गरिजाननिहोंनाते अबमेरीबातलागतिस
ठ॥कुंभनदासप्रभुनवरसबसभएकहिनस
कतिकरईमीठ॥गिरिधरलालकहिनचवति
तोहिनाचतइननीकहतिदिएंढीठ॥४३॥ ॥बो
लतस्यांममनोहर॥बैठेकदंबखंडकुमछहि
यां॥कुसुमितअलिकुलगुंजतिसखिकोकि
लकलकूजितनहियां॥सुनतदूतिकेबचन
माधुरीभयोहुलासवाकेचितमहियां॥कुंभ
नदासब्रजकुंवरिमिलनचलीरसिककुंवरु

कृष्णः
२८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गिरिधरपहियां॥४४॥ ॥आनुदधिदेखोंत
रोचारिव॥कहियोंमोलुकितनेंबेचहिंग।सत्यब
चनमुखभाखि॥जोईतकहेसोईहांदेहोंसंग
सखासबसाखि॥जोनपत्याइग्वालिनोंहमको
कंठसरीलेराखि॥लेबचनेंघरदांमदेंनकोंचि
तयोनेंनकटाखि॥कुंभनदासलालगिरिधरको
सरबसुहियोतनाखि॥४५॥ ॥बतियांतेराह
जियभावति॥तोहीलोंसुखुगिरिधरनछबी
लेज्योलोंरूहोंसुनावति॥तबहींउरूंचटपटी
लागतिजबहींहोंछिनुघरआवति॥एकनेंएकप
ठावतबोलनचेंननकोंहूपावति॥बारंबार
पहचरचा।सखिओरनतोयसुहावति॥कुंभनदा
सप्रतिप्रतिआतुरचितप्रेमसबोधिरहावति
॥४६॥ ॥कहतिलतोनेंननिरंसबबातियां॥
मांनोंकोटिकरसनांइनमेंरचीघालिबहुभ
तियां॥तुमसोंकोंनचाउश्रमभांमितिछाडिबे
कोनबिनतियां॥एईभएबसीठचतुरअति
जाननसकलजुगतियां॥जोईतरंगउपन
तिचितअंतरसोईमिलवनबिधिमतियां॥सु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

29 दरस्यांममदनमोंहनकोंतकेंरहतिसखिघ
तियां॥ आपुहीकरतिमनोरथपूरनसदापि
रमसुखछतियां॥ कुंभनदासलालगिरिध
रसोंबसतजोउदिनरतियां॥४७॥ ॥सुंदर
ताकीसींवानेंन॥ अतिहिसुअच्छचपलअनि
यारेसहजलजावतमेंन॥ कमलमीनखंज
नअधीनमृगतजिअपनेंसुखचैंन॥ निरखि
सखनिसखिरूअंसपरसर्वसुकीयोदैंन॥ अ
बअपनेंजियरूठभावकरिकछुकजनावत
सैंन॥ कुंभनदासप्रभुगोवर्द्धनधारीलालअनु
वक्तिनमनुहरिलेंन॥४८॥ ॥रागमलार॥
कूलः २९ मारीभीजिहेंनई॥ अबहींप्रथमपहरिआईहों
पितावृखभांनदई॥ अपनोपीतांबरमोहिउ
ढावोबरिखाउदितनई॥ सुंदरस्यांमजाइगोय
हबरंगबहुविधिचित्रठई॥ कहिहोंकहाजा
इघरअपनेंउरपतिहोइगई॥ कुंभनदा
सप्रभुगोवर्द्धनधरमुदितउछंगलई॥४९
॥ ॥काहेकोंमारतचातक॥ रोंमरोंमबेधतम
नमथसरबोलिबोलिदिनरातक॥ अतिनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रंपपरपीरनजौंनतरवगञ्चकुलीनकुजानक॥
तुम्हरोसहजसुभाउप्रगटयहविरहिनिकोंतन
वानक॥अबलाअबबधतुहेंहठिबरघाट
हेंक्योंसहपातक॥कुंभनदासलालगिरिधर
बिनुनिमखुभयोजुगसातक॥५०॥ ॥रागन
ट॥नैंनघनरहतनएकघरी॥क्योंहूंनघटतनि
सदापावसब्रजलागियेरहतिझरी॥बिरहइं
द्रबरखावतःनिसुदिनुहेअतिअधिकझरी॥
ऊरधस्वाससमीरनैंननलउरमहूउमगिमरी॥
बूड़तभुजारोरवअबरडुमअरुकुचतट्टुचयरी॥चलि
नसकतिपदरहेपथिकथकिचंदनकीरखरी॥
सबरितुमिटीभईअबएकेइहिंबिधिउलटिप
री॥कुंभनदासलालगिरिधरबिनुनीतिमजा
दटरी॥५१॥ ॥रागगौरी॥ ॥गोपालसख्वी
मखीलीयोमेरोमनचोरि॥नंदकुमारचतुर
अतिनागरनैंनचितैसोंनैंनजोरि॥कमलनैंनबै
ठेहेंदुरेरवांहूंआवतिहीरवोरि॥देखतस्यां
ममनोहरमूरतिमारीमदनसरजोरि॥कैसें
कमिलेंसुजानकहोसखिकिहिंमिसजाउंब

30

हो रि॥ कुंभनदास प्रभु गोवर्द्धनधारी लाल लई

हों अचानक मोरि॥५२॥ ॥हिलग निकठि

न हे या मन की॥ जा के लिये सुनो मेरी माई लाज

गांति सब तन की॥ धर्मु नाउ अरु लोक हसो स

ब अरु आगो कुलगारी॥ न कून रहे ताहि बिनु देखें

जो जा को हित कारी॥ रसलुबध एक निमख न छा

डें ज्यो आधीन मृग गाने॥ कुंभनदास सनेह मरमु य

ह गोवरधनधर जाने॥५३॥ ॥देखो वे आवत ह

रि धेंनु लियें॥ ननूआ ची दिसि धूरन स सिर जन नी मु

ख उदे कियें॥ मंडल बिमल सुभग बृंदावन राज

न धाम बिए॥ बालक बृंद न छिन समा मानों चेर

न हसरिए॥ गोपी नैन चकोर सी तल भए रूप सु

धा हि पिए॥ कुंभनदास स्वामी गिरिधर ब्रजजन नैं

आनंद दिए॥५४॥ ॥देखो वे आवत हरि धेंनु लियें॥

न नु भाची दिस धूरन स सिर जन नी राधे बदन ते

रो बिधि केर च्यो॥ त्रिभुवन की छबि छाडि बिधाता

बिनु भेद पयो॥ कमल इंदु बंधूक सुक पिक अलि

ब को रूप ले हाँई हे रयो॥ कुंभनदास प्रभु गिरिध

र को हे भेटन च्यो॥५५॥ ॥न्याइ री न अलक न

३॥निसिबासरगिरिधरनलालकेहिरदेमेंरह
तिचढी॥स्यामसुंदररहितोहौ।तोसुखनोलोंसम
परहेएकोनिमखुभावेनही।छड३॥कुंभनदासस
स्वामिनीराधाअनजुवतिनमांऊकबडी॥५६॥
॥ ॥नतोचालिरीवेगिरजनीजाइघटति॥न
करुबिलंबमिलिनंदसुवनकोंसमुझिचतुर
सुंदरिकाहेकोंसोबातहठति॥मदनमोहनबे
ठेबडीबारकेतूहीहेनटति॥कुंभनदासगिरि
धरनलालस्यामतमालसोंकनकलतासीक्योंं
नलपटति॥५७॥ ॥कहांनमाननतिजोबन
मांती॥जुतरुनदेतिमनावतितोहिगईअधरा
ती॥नपुनरूपगरबकितभूलतिजबरुआ
उगीतबरहिहेपछिताती॥कुंभनदासप्रभुगि
रिधरपियकोंअंकोंभरिभेटिजुडाईछाती॥
॥५८॥ ॥राधामाधोकोमुगकेदारो॥ ॥मोंह
नराइमानीरीतेरीबलियां॥गिरिधरपिय
एकांतबेठेहेमेंहीनीसुहथजोरपतियां॥अब
नातोहीलोंधीरजुबांधिसखी॥दिनगतजोंम
होइमोरतियां॥कुंभनदासहूतीकेबचनसुन

31

नहींपरमसीतलमईछतियां॥५९॥ ॥चारु
नटभेखधरैंबेठेगोविंदजहांतहांसघनगह्
बरनिकुंजभवने॥नागरीनबहिनेंननिसोंनें
नामिलेतबहिनागरिमुगितबिपिनगमने
॥रसिकबरनंदसुतसुहथसिंगारचीबिबि
धिगतिविबिधिपटफूलठवने॥हंसजातट
निकटबिमलजलबहततहांत्रिबिधचलश्री
खंडमलयपवने॥कुंभनदासप्रभुसुजाननतोहि
मिलनकोंबऊतआतुरनिघुखुनुगबितवने
॥जोवतपंथुएकटकजालसुकुमारसखिगो
वर्द्धनधरअखिलजुवतिरंबने॥६०॥ ॥छि

रूलः
३१

नुछिनुवानकओरेओर॥नबदेखियेतबनो
तनसखीरीहष्टिनरहेएकठोर॥कहाकरोंप
रिमितिनहिंपाईबऊतकरीचितदोर॥कुंभ
नदासप्रभुसोभगसीवांगिरिधरलालरसि
कसिरमोर॥६१॥ ॥सरदसरोवरसोंमध्य
गमेंवदनकमलचारुफूल्योरीमाई॥ताउ
परलोचननुगखंजनमनभएजानोंकरत
लराई॥सिथिलकेसमुदेसदेखियतभंव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रनिकी पंगति फिरि आई ॥ कुंभनदास प्र
भु गिरिधर नागर जुवतिनि अति सुखदाई
॥६२॥ ॥ माई कछु न सुहाइ मोहि मोर बच
न सुनि लागे मोरु करन ॥ सांझ घरा पंग
ति बगुलानि की देखि लागी नैंन भरन ॥ गर
जत गगन दामिनी कौंधति निसि अंधियारी
लाग्यो जीउ डरन ॥ नीदन परे वौं छिनौं छिन जा
गति सुनी सेज गोपाल घरन ॥ सूनी सेज चंद
नै चंद किरिनि कुसुमावलि भए बिरवमला
गी देह जरन ॥ कुंभनदास प्रभु कबे मिलेंगे
गिरिवरधर दुखकौं महरन ॥६३॥ ॥ सारं
ग राग ॥ ॥ यह तो एक गाउं को बासु ॥ केन
कुल बचियें सखी हिन प्रतिनि सुखु न छाड
उपास ॥ इहिं घटियां पे ओस बब्रज को नाहि
न ओरु निकासु ॥ नंद नंदन कौ सहज यातु श्री
बालक संग बिलासु ॥ कबहूँक माजन छौंनि
लेत हठि कबहूँ करत दधि नासु ॥ कबहूँक
भुज गहि चलत कुंज लै यह गति कहियै कासु ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

32 बोलिनमस्कोंमकुवञ्चतिजियमेंलोकला
जभयत्रासु॥गिरिधरलालजानिपाएहो
जानतुकुंभनदासु॥६४॥ ॥गोपालतोसों
खेलेकोंनवहोरि॥रहोनागरयहकोंनचा
तुरईमोतिनलरलईतोरि॥यहबिनोदु
कीनोबनमहिपांपकरतबांहमरोरि॥कु
नरूकहाजाइघरदेहोचुरीआरीसबफोरि॥
कुंभनदासप्रभुकहतखिरुतिकतलाडहें
उगोजोरि॥लालगोवर्द्धनधारीसोंमुसिका
इचलीमुखमोरि॥६५॥ ॥काहाकरोंमाई
मोंनुतोकरिरूनआवे॥वहचितवनिवह
हांसीमनोहरकोटिकदुखबिसरावे॥नि
मखकेअेतिलहोतिसखीरीतबहींचटप
टीनेंननिलावे॥कुंभनदासलालगिरिध
रसोंरूसेंहूंबोल्योभावे॥६६॥ ॥माईगो
पालहिचितेजुहसी॥नंदकुमारहेरिवेअति
रीझेमगनेंनीजियमांरुबसी॥गजगनि
चालसुदेसकृशोदरिकुचकठोरचोलीसुबि

कृस्नः
३२

धिकसी॥ कंचनबरननवलगुनसुंदरिबद
नचारुमनोंसरदससी॥ बोलीबेगिसुंदरब्र
जनायकजहाँनिकुंजकुमबेलीगसी॥ कुंभ
नदासगिरिधरमुखदेखतआरजपथतेंकोंन
खसी॥६७॥ ॥कहाकरोंवहमूरतिजियतेंन
टराई॥ सुंदरनंदकुंवरकेंबिछुरेंनिसुदिनुनीं
दनपरई॥ बहुबिधिमिलनप्रानप्यारेकों
एकुनिमखुनबिसरई॥ कछुनसुहाइतन
हितलबेलीमनुबिरहागिनिजरई॥ कुंभ
नदासलालगिरिधरबिनुसमाधानकोक
रई॥६८॥ ॥रागकेदारो॥ चलहिराधिकेसु
जानतेरेहितगुननिधांनरासुरच्योकांकूलट
कलिंदनंदिनी॥ नमनयुवतीसमूहरागरंग
अतिकुलाहबाजतिरसमूलमुरलिकाअनं
दिनी॥ बंसीबटनिकटजहाँपरमरमनभू
मितहांसकलसुखबहेमलयवायुमंदिनी॥
जातीईखदबिकासआनअतिसेसुवास

33

राकानिसिसरदमाँसविमलचाँदिनी॥कुँभ
नदासप्रभुनिहारिलोचनभरिघोखनारिन
खसिखसुंदरकामदुखनिकंदिनी॥बिल
सहिसुनश्रीवामेलिभामिनिसुखसिंधुझेलि
गोवर्द्धनधरनकेजिजगतबंदिनी॥६९॥ ॥

कृष्ण
३३

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रागकानरो॥ ताल संगरास रंग लेत मा
नुर सिकर वन गिरि गिरि ता गिरि गिरि तात
न न त थेई थेई गति लीने॥ सरिगमपद
निगमपधनि छबि ब्रजराज नरुभिगव
तिरी अति जति गति सहित त न न न न
न न अन अन गति कीने॥ उदित मुदित सर
द चंद बंद नूट कंचुकी के बैभव भवनि रखि
करत मदन हीनें॥ बिहरत बर सुख बिलास
दंपति रति ईख द हास छीत स्वामी गिरिवरध
र रसबस करि लीने॥१॥ ॥राग सारंग॥ श्री
वल्लभ श्री वल्लभ श्री वल्लभ मुख जाकें॥ सुं
दर नवनीत के पिय आवत हरि ताही के जियन
नमन नमन पन पुकरि कथहा भयो सुधा के
॥ मन व वच धन ले ताहि राह न को प्रगट जन
जपट न र कों सुर नर मुनि नाहिनें उपमा कों
छीत स्वामी गोवर्धनधारी कुंवर आए सदन प्र
गट भए श्री विठ्ठल भजन को फल ताकें॥२॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

34

जबतें भूतल प्रगट भए ॥ ता दिन तें सुखवर
खनस बहिनकों अनुदिन उदै भए ॥ श्री वल्ल
भकुल कमल अमलरवि आनंद अमित दए
॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल नंदनंदन
यजए ॥३॥ ॥ अपुनपें आपनी सेवा करत ॥
आपुतुम प्रभु आपु तुम सेवक है अपनों रूप उर
धरत ॥ आपुही करम धर्म सबही को फल अ
पनी यें बिधि अनुसरत ॥ छीतस्वामी गिरि
धरन श्री विठ्ठल भगत बछल दुख हरत ॥४॥
॥ ॥ राग आसावरी ॥ मेरी अंखियनि के
भूखन गिरिधारी ॥ बलि बलि जाउं छबीली
छबिपर सुंदर नंदनंदन सुखकारी ॥ परमउदा
र प्रसन्न कृपानिधि दरस परस दुखहारी ॥
अतुल प्रताप तनक तुलसी दल मांनत सेवा
भारी ॥ छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल नसुग
वति गोकुल की नारी ॥५॥ ॥ कहा कहों गुनगा
यनाथ श्री विठ्ठल हदें बिहारी ॥५॥ ॥ गोवर्द्ध

पत्र: ३४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नगिरि परठाढे लसत॥ चहूं दिस धेंनु धरनि
धावति तब नमुरलिमुरवर सत॥ मोरमुकुटब
नमालमरगजो कछुकफूल सिरखसत॥ नव
उपहारलियें वछ्वत्रियनिरखिछाकचलहस
त॥ छीतस्वामीबसकियो चाहतुहैं संगसरवासब
गसत॥ जूठेंमिसककरिफिर तहैं इतउत ब्यावि
लसनबसत॥६॥ ॥पियनवरंग गिरिगोवर्द्ध
नधारी॥ अभिनवरसश्रृंगारसरसस्त्री विठ्ठल
प्रभुचितचारी॥मधुरस्वरूपदेखि अतिसुंदर वृंद
विपिन विहारी॥ छीतस्वामी सुखसुलभसमीप
श्रीवल्लभमतअनुसारी॥७॥ ॥रागभैरव॥
अतिहीकठिनकुचकेपेरेठुतुंबिनासेगाढेउर
लाइकें मेटीकांमहूक॥ खेलतमैंलरटूटीउर
परपीकपरीउपमाकोंबरनतभईमतिमूक॥
अधरस्रमतरउपरतेअचवायो अंगअंगसुख
पायोगयोदुखद्वंदहूक॥ छीतस्वामीगोवर्द्धनरा
नालुघोमनमथवृंदावननिकुंजनिमेंमेंकू
सुनीकूक॥८॥ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

35

क्रम:
३५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

श्रीकृष्णाय नमः॥ ॥राग बिलावल॥ नंद
सुवन ब्रज भांवते फागु संग मिलि खेलै जू॥
आजु हमें तुमें जांन वीजो जुवती दल पेलो
जू॥१॥ रसिक सिरोमनि सांवरो श्रवन सु
नत उठि धाये जू॥ वलस मेति सब टेरि कें
यह यह तें सखा बुलाये जू॥२॥ विविधि
भांति वाजे सजे ताल मृदंग उपंग जू॥ डुं
डुमि झांझ रझालरी आवज करमुख चंग
जू॥३॥ इतने नवसत साजि कें निकसीं स
कल ब्रजनारी जू॥ झुंड नआई झूमि कें गा
वति मांठी गारी जू॥४॥ सोभित बालक वृं
द में हरि हलधर की जोरी जू॥ इतहिं चतु
र चंद्रावली सब गुननिधि राधा गोरी जू॥
५॥ अगर गजकुंकुम घोरि कें भाजन भरि भ
रि लाईं जू॥ छूटीं सनमुख स्याम कें कर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

36 निकन्नकपिचाईज्यौ॥६॥इतनहिंसमाजगोपा
लकैंमरेमहारसबेलैंज्यौ॥चोवामगदमसं
निकैंजुवतीजूथपरमेलैंज्यौ॥७॥हिकेपरस्प
रदेरौंखीयेंबेलमचोउतिमारीज्यौ॥इतउत
हारिनमांनहींचौंपपरीनरनारीज्यौ॥८॥
सोंवद्दयेललिताकहेपगनपिछौंडेटास्यो
ज्यौ॥इतनायकउतनायिकाकोजीतेकोह
रेज्यौ॥९॥जुवतीजनतबपेलिकैंछेकि
सुबलकहिलीन्योज्यौ॥कंठउपरेंनामेलि
कैंषैंचिश्यापबसकीन्योज्यौ॥१०॥सुनहुंसु
बलसांचीकहूंतोमलेंछूटनपाश्योज्यौ॥
छलबलबांनकबांनिकेंहलधरकोंपक
कृस्न: श्योज्यौ॥११॥वहुरिसिमहिब्रजसुंदरीसं
२६ करषनमिलिघेरेज्यौ॥फेंटगहेंचंद्रावली
उलहिमसमतनहेरेंज्यौ॥१२॥सोंषोना

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वैंसीसतें एक काजर लै आई जू ॥ मौंहन ह
सि सुरि कें कहें देषो राज आधि अंजोई जू ॥
॥१३॥ फिरि प्यारी नागरि राधिका तके स्यां
म जहां ठादे जू ॥ औरसषि इन ओट ह्वै गहे
अंचांनक गादे जू ॥१४॥ देषि सखी चहूं ओर
ते होरि आरलपटांनी जू ॥ अंग अंग बहुरं
ग सुरंगी करत बात मंन मांनी जू ॥१५॥ के
सरि सों पट बोरि कें श्री मुष मांड्यौ रोरी जू ॥
तारी हाथ बजाइ कें मुष बोलत होहो होरी
जू ॥१६॥ मगन भई ब्रज सुंदरी नवरसभी
नों हीयो जू ॥ इत अग जउत स्यांम पें दो
अदि सफगु आली यो जू ॥१७॥ परसपर
म सुष उपज्यो मयो त्रियन मन भायो जू
॥ सादर कुमुद चकोर ज्यों मानों विधपी
तम पायो जू ॥१८॥ नागरि अलि अंगुरा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

37

गसं मुदित वदन तंन हे स्यो ॥ सरसु वारें
वारनें खंच रहि दियर फेरें ॥१८॥ चतुर्भु
ज प्रभु संग षेल हीं इहिं विधि गोप कुंमारी॥
॥ सब ब्रज छायो प्रेम सुं सुख सागर गि
रिधारी ॥१९॥ ॥ गोष निपति सुत गाइ
ये जाके बसाये गांउं ॥ बहुरि सुहागिनि ग
इये जाको श्रीराधा नांउं ॥ लाल बलि कृसि
का हो ॥१॥ चलिं मक लब्रज सुंदरी नव सत
साजि सिंगार ॥ गावत षेलत जहां गई त
हां गोपराय दरबार ॥ नाइ नैंन भरि देखि
यो सुंदर नंद कुमार ॥ लाल ॥ स्याम नील पी
त पट मंडित स्त्रक गज मोतिन हार ॥ लाल ॥
कृस्न: ३१ आस पास संग युवति रस भरे पहरें विविध रं
ग चीर ॥ गीत विचित्र कुलाहल ॥ थुल ब्रज
वासिन भीर ॥ लाल ॥३॥ कुंमकुमी जांऊ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्यामलरीझंकमुरझडफताला॥मदनमोरि
रायगिरिगिरीबिचबिचबेनुरसाल॥ला॰
॥५॥पहलोऊंमकताहीकोजाकोश्रीमो॰
हनहूत॥देषतपरौंसिरमोहनीनुवती
जनमनहूत॥६॥ला॥ला॥दूसरोऊमकता॰
हीकोजाकेंश्रीराधानारि॥प्रियप्यारीरोषे
रहीमनमेंदोषविचारि॥७॥ला॥ला॥इतनु
वतीकदंबसिरोमनीसुंदरवरसकुमार
॥इतमसगनव्रजनायकाबलछलगिरि
वरधार॥८॥ला॥ला॥श्वतिरसमरीझनसुं
दरीहेतपरस्परगारि॥श्वंचरपटमुखदे
हसींसुंदरवदननिहारि॥९॥ला॥ला॥रत
नरवचितपिवींकाईयांनवकुंअरस
योरि॥प्रियमनहठखद्देछोरकहींतकित
किनवलकिसोरि॥१०॥सांमसुमगतन

38 सो मन हीं नव केसरि के विंदु॥ जानों जलध
र में देखियें उदित भये बहु इंदु॥११॥ एक
नि कर बूका लीयें एक गुलाल अबीरा॥ प्रम
दा गन पर बरषहीं कूकें देत अहीरा॥१२॥
इहि विधि होरी षेलहीं ग्याति बंधु संगला
इ॥ भरन मनि मुष डहडहो भन्यो होरील
गाइ॥१३॥ परिवा रसि मरि मव घोष जन
चले जमुन जल न्हांन॥ अरगज अंगव
टर कें विमल वसन परिधांन॥१४॥ दुतीया
वंदन वंदीयो सिंघासन व्रजराज॥ छत्र
चमर गोविंद गहें श्रीवत्स व कौस्तुभ रता
ज॥१५॥ ॥ बरसांने की गोपी मांगन फगु
आई॥ कीयो जुहार नंद जू कौं भीतर भव
न बुलाई॥१॥ एक नांचें एक गावें एक ब
जावें तारी॥ काहे मोहन राइ दुरि रहे

लक्ष्मः
३८

मेयाद्विवावोगारी॥२॥अर्घदेतिनंदरांना
पहनिसुभागपहमारे॥शीतमसजनक
लनथूदेषहिदरसतिहारे॥३॥सुनहु
ऊंवरिमेरी राधेअबहीजिनिमुषमांडो॥
जेंवतऊंवरमषनिसंगजिनिएवारीन
छांडो॥४॥ छकेसरिओरअरगातकिगिरि
धरपरटास्यो॥शीतलगेकोमलतनतुम
हींचित्तविचारो॥५॥अंचरऊपरदेरहीहो
ऊमाततानितोरा॥बरजतिमरतिऊक
मानिरदयनवलकिसोरा॥६॥कहतिरो
हिणीजसोमतिओलओडतिहोंआगेंगाज
रमरोव्रजराजेमोहनदौर्‌योमांगें॥७॥मो
हनमागेंपाइयतदिनदसहमहींदेहो॥
गोपऊंवरकेपलटेंजोमावेसोलेहो॥८
सुबलसुवाहुश्रीदामासुनतअवांनक

39 आ१॥ कनकमाटभरेदधिके गोपीनपरढ
रका१॥८॥ गोपीगोपसषासंगहसतदेत
किलकारी॥ दूधलीयोभीतरतेंछिरकी
सबब्रजनारी॥१०॥ भयोनिरंतरअंतर
ब्रजवल्लवीब्रजबाला॥ गिरिगिरिपरतग
लीनमेंहारडोरिमनिमाला॥११॥ प्रमुमु
ऊंदब्रजवासीअटकौनकीमांने॥ कहि
भइयामाधोजिनिजाइभरोहषमांने॥ ॥
॥ ॥ गोपीनंदराइघरमांगनफगुआ
आई॥ प्रमुदितकरहिकुलाहलगावेंगा
रिसुहांई॥१॥ अवलाएकअगमनीआगें
दईपठाई॥ जसोमतिअतिआदरकरिमा
कृष्ण: नेचंदनचुआंई॥२॥ पतिनमेंमुष्यराधिका
२८ लागतिपरमसुहाई॥ षेलोहमोनिसं
कमंकमांनोजिनिकोंई॥ आवहुमोला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

मनिमाल सबनि रे हूं मनभाई॥ मनि माला लेक
हाकरें मोहन्व रे छुदिखाई॥४॥ विनु देषें सुंद
र सुष नाहिन परति रहाई॥ मात पिता पति सु
त ग्रह लोग तुरीविष माई॥५॥ सुनि कें प्रेम
वचन रामो दरर दई दिषाई॥ घर में ते घन स्या
म सु जा भरि मां मिनि लाई॥६॥ नखसिख सुं
दर सीव रूप लाव नि अधिकाई॥ रही ब्रजनव धू
निहारि रंक मांनों निधि पाई॥७॥ दुरस पर
स पियँ अति सुंदरि सब लपटाई॥ अरगज
चंदन वंदन चहूंदि स नेंले धाई॥८॥ भर
ति भांवते लालनहि करनि कनक पिचकाई
मंडित करहि कपोल एक लेकाजल ल्याई
॥९॥ अंचर सों पट जोरि तिरा धिस कुंची स
नाई॥ आलिंगन चुंवन रस नहि सुरझति सु
रझाई॥१०॥ दंपति सौभग संपति कोक पीव

सों

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

40

तनअघाई॥कुचकंचुजबीचकीचमचीअति
श्रमकीरूपटाई॥११॥पहलीलाअतिललि
तसुतोअमरांनभाई॥हरषितउदित
मुदितसबहिनकीकरतबडाई॥१२॥
नैंनश्रवनसुषमयोलालजुकीकीरति
गाई॥पटदुकूलविभूषनचोलीहिम
मगाई॥१३॥नसोमतिमनप्रफुलितअ
तिसुंदरिसबहंपहरांई॥इहिंमेरेआं
गनयहआवोरीनिमाई॥१४॥निकसीं
देतिअसीसजीवोचिरमोहनराई॥इ
हिंब्रजमाधोदासरहोनितनंदडुहाई॥
फल: ॥१५॥ ॥४॥रागकाफी॥ बांमनब्रषभांन
४० कोहोआयोहोहोहोरीकेबीच॥ध्रु॥नंदद्वा
रलैंदेब्रजनारीउरआनंदनसमारमपोहि
तजबनियरेंदेरयोहेलागनसबमिलिप

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२॥५॥ तन्नतेंव सन्न उतारिलीये है उउ दपि
ठी लपटाइ॥ एकसषी वेनी गंथी है ऊ उ
कमेया वी चलगाइ॥२॥ कंउ की अल सारी
पहराई अवन निजांज बनाइ॥ तव ही उ
दीपहराइ घनों वा सो म्राकही यनजाइ
॥३॥ लागा गरि भरी की चलाइ कें सिर तें
देत नवाइ॥ गीवर लेउ रव सों लपटायो का
जरु आंषि अंजाइ॥४॥ मव गहन री मांलमं
गाई पांडे कों पहराइ॥ मिलि सव नारिन
चौव हि वाकों वोलत हो हो आइ॥५॥ और वा
पे भंडतार वजाई गारी देत मन्न भाई॥ सोहि
त तव ही उकारन लाग्यो आए मो हनधाइ॥
६॥ यह गति है तिन्यांमघन सुंदर रहै मउ
चि उसिकाइ॥ वहु मोले चुंवर मगवाए देत
हे वधन वुलाइ॥७॥ अति सुगंध उवटनां

५। छीनो है जो हित कुं तुम्हवा इ॥ वहु विधि
सों पकवांन मिठाई संतोष सों वाहि षवा
इ॥८॥ तव षां चो क परा पहरा ए फूल्यो ही
स ये नँमाइ॥ पाछें विपरत न मन थन सो हो
गो ऊलन न पवा र लो जा इ॥९॥ ॥५॥ माइ
सम धां जे ते वां मन न आयो मरि हो री के वी
च मन न वा॥ घेरि लीयो घर मां हि तुगां
ई तु मूं ऊलव पैठी की चा॥१॥ का हूं लई षु
स काई पर द नी का हू की यो क ज रा री॥
सि ठी पिठा गों छुल पटाई वां मन को कहु
चोरो॥२॥ का हूं गुदी न ल गा पहरा यो का
हूं रुलरी मा ला॥ तारी दे तु वती गन गावें
कलस: हा सि हसि व्रज की बाला॥३॥ जसुमति ली
५१ यो वचाइ बाहु रो निर्मल नीर न्हवायो॥
न एव सन पहराइ गुदी तें ऊलगा उतरा यो॥४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तब वां मन निधरक ह्वै बेठो पहरि जरे
कपरा ॥ एक ग्वालिनी आइ उलें ओसरा की
च कौ मरिय [illegible] परा ॥ ५ ॥ देखि बि मलिगयो च
तुरग वै लो मलो मलो कहि गा वे ॥ अति खि
लवार मो धुआ पांडे बेलें ही सुख पायो ॥ ६ ॥
पेज वां धिन्यों सुरपति ना वे ऐसो फगुन मां
वे ॥ पेट फुलाइ बदन टेढो करि छिरक्यो वां
मन नं वे ॥ ७ ॥ गहने जोर मारि दे मन वा
ह मतो फगुवा चाहें ॥ काहू कां न पकरि कें
गुलच्यो काहू एंठी बां दें ॥ ना भां मिसासु
रे को यह बांमन मोहन कछु वे नक हैं हां ॥
कल जीवन हरि लछी राम मगुसकावि
सकावि जीय रहें हां ॥ ८ ॥ ॥ ध्या आयो
फागुन मास सबै कहें होरी हो आइत की
ओर हरख मां नंद नंदिनी उत की ओर हल

42 घरकोजोरा॥१॥नवनागरीगाढीहेवेऊंम
जिमजिआवतितजितजिषोरा॥जोनन
देऊपकरोजुस्यामकोंसबेधरतिजोब
नकोतोरा॥२॥आपुनेआपुनेयहरहिन
सकतिहेंमांनोकामकोफिस्योहेढंढोरा
॥कैसजीवनलछीरामकेसंजुसोंहोति
हेनकजोरीजोरा॥३॥ ॥७॥मनमोहनल
लनांमजुहस्योहो॥मोहनसकलघोषसि
रताज॥टेक॥यहयहतेंसुंदरिचलीदेष
नव्रजराजकुंवार॥निरषिवदविधुकित
मईहेंठाढेहेंसिंघदुवार॥१॥वीनावेनमं
डफबाजेंमृदंगउपंगताल॥गावतच
कृष्ण: रितअद्भुतश्रीमाधोहेरंगअपार॥२॥
४२ रतराधिकासन्मतिचंद्रावलिललिताजो
पसुकुंवारि॥उतहलधरगिरिधरहो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ऊमिलिषेलमच्योद्रवारा॥मन॥१॥रत
नजटितपिचकाईकरलीयेंछिरतगो
पऊंवारा॥मदनमोहनपियरसमदमा
तेकछूवनअंगसंभारा॥मनमोहन॥४॥
प्रमुदितछिरकिसबसषीयनमिलिमो
हनपकरेथा॥३॥अधरपांनरसपिवत
पिवावतसुरलीबलैहेछिंडा॥३॥मन॥
४॥मोहनप्यारीसेंनादेहलधरपकराये
था॥३॥[illegible]सुनहमतपीतपटसुखदे
ह॥ऊचाएहेअंषिअजा॥३॥६॥सियल
तकटितटबसमेषलाउरगजमोतिन
हार॥विधुरीअलकबदनछबिराजित
गलितऊसुमसिरभार॥७॥परिवामि
मिटिसकलब्रजवासीचलेजमुनजल
तांना॥बारिऊंवरपरनंदरानीहोदे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

43

त्रिविधि विधि उहांना॥ मनमोहनना॥ दादु
तीयापाट सिंघासन बैठेव र छत्र सि
र ताज॥ राजत सबे सकल श्री रामाव
लि व्रति व लि जुग राज॥ मनना॥२॥ स्यांम
सुभग तन अति राजत हैं॥ श्र र गज पी
त सुवासा॥ गोविंद प्रभु परम कल दे व
तां बरषत ऊ सुमन आकासा॥ मनमोह
न लल ना॥ मनु हस्यो हसो हो॥ मनु ह
स्यो सकल पो व सिर ताज॥१०॥ ॥८
॥राग आसावरी॥ ॥धनि धनि नंद जसो
मती हो धन्य भाग गोकुल गांउ॥ धंन्य ऊं
व र होऊ लाउ लेव ल मोहना को नांउ॥
॥छबीले हो ललनां॥ श्री गिरिवरधारी
लाल छबीले हो ललनां॥ गोकुल के रा
इ छबीले हो ललनां॥ श्री वृंदावन के चं

स्या: ४२ गो

द्रुछबीले हो ललना ॥१॥ सखा नांउ लै लै
बोलिहीं हो सुबल तोष स्रीदांम ॥ घर
घर तैं सब उठि चले हो बोलत सुंदर
स्यांम ॥२॥ छं ॥ भेष विचित्र बनाइयौ
हो भूषन बसन सिंगार ॥ निज मंदिर
तें सजि चले हो बालक बलबनवार
॥ छं॰॥३॥ श्री गिरिवरधर अतिरस भ
रे हो मुरली मधुर बजाइ ॥ श्रवन सुन
त सब ब्रजबधू हो जहां तहां तें चली
धाइ ॥ छं॰॥४॥ रुंज मुरज डफ डुंडुभी
हो बाजे बहु विधि साजि ॥ बिच बिच भे
रि सु बाजही हो रव घोष सब गाजि
॥ छं॰॥५॥ एक ओर सुबती भई हो एक
ओर बलबीर ॥ कमलनि मार मचाइयै
हो रुपै सुभट रनधीर ॥६॥ छं॰॥ पिच

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

44

काईकर कनककी हो श्रगजकुम
घोरि॥ श्रांनपिया कौंछिर क हीहो नकि
तकिनववैानकिसोर॥छं॥७॥ हसत
हसतसव श्राव ही होलीने सुबलन
जोइ॥ हाहा करिसव वे कहे नेकमो
हनकों पकराइ॥छं॥८॥ बहुरिसिम
टिसव सुंदरी हो मोहन पकैरै लीने घे
रि॥ नैंननि काजर श्रांजिके हो हस
त बदन तन हेरि॥छं॥९॥ निकसि श्रा
इठाढी भई हो श्रपने श्रपने टोल॥ कु
मकविवबगावही हो विचबिच मीठेबो
ल॥छं॥१०॥ इहिविधि होरी षेलही हो
ब्रजवासी संगलगाइ॥ गोवईन
धर रूप पर जननी विंदवलि बलि
जाइ॥छं॥ वीलेहोलनना॥११॥ ॥८॥

कृष्ण:
४४

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रागबिलावल॥ ॥नंदगांवकोपांडेब्र
जर्वेसानेआयो॥ अतिउदारब्रषभांन
नंजिसनमांनकराइयो॥१॥पांडेजू
केपायनकोंहसिकैसीसनवायो॥पा
रधुवायन्हवायषटरसभोजनकरवा
यो॥राधाइआईब्रजनारीजितिपहमो
योपायो॥मांनमेवननमैं[illegible]फगुको
बेलमचायो॥३॥सीसीसिरतेंफुलेल
संगनिफलकायो॥हनूमांनकीरति
मामांनोंतेलचढायो॥४॥काजरमों
मुखमांज्योवंदनबिंदुवनायो॥कारेक
लसहिश्रवतमांनोचपराविपकायो॥
५॥गजगांमिनिगेंछनतकितुकमांने
नपटायो॥देहधरेंमांनोंफागुषेलनब्र
जमेंआयो॥६॥कहूंचंदनकहूंबंदन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

45 कहूँचोम चरचायो॥ रितुबंमंत जांनौं
केसरकोदुम फूलन छायो॥७॥ काहूं
गूलरीनमाल काहूंरुलगापहरा
यो॥ मानोंमजपाटोल बीचग
नेमा सवनायो॥८॥ रंगरह्यो चोंहु
दिसन स्रंगरातो केछायो॥ गुंजन
कोगहनोमांनौं शोहितपहरायो॥९
मांथेतेमोहनी छाहिकोमांदहुरा
योमांनौंकाचेदूधसौंशिवन्हवायो रहिं॥
॥१०॥ सोरबोरमईशोरिलागतेजल
धेरओदररायो॥ महादेवकीजटा
जूरिचरणोहिकछायो॥११॥ लागत
श्लो: दंतसोंदंतडिगडिगीछुंगलगायो॥
४५ मानहुंसुघरसंगीततारकठतार
बजायो॥१२॥ श्रीराधाराधाकहिसु
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१नो बोल सुनायो॥ अरी मान कीऊं
व रि सर न हों ने री ओ यो॥१३॥ सुनि
के प्रेम बचन सुग रो रा धा म रि आयो
बा बा जू को दग ल ल ली सो हि त प ह
रा यो॥१४॥ कीर ति जू पाइं लागि ली
नी ता तो प य पायो॥ तो लों षे ल न हो
री ब्रज में दू है ले आ यो॥१५॥ मो चे स्वां
ग ने सा जे सब से स र हू सु हा यो॥ तप
व्यास को रत पत सुष दे व बनायो॥१६
म न का दिक चा स्यो नि सि ज्यो स न्यास
सु हा यो॥ पर मत आ यो इंद्र स्वां ग ठ न
म न ब चा यो॥१७॥ ब्रज की बी थ नि बी
च की च में लो टि लु टा यो॥ चा रि वद न
को स्वां ग च तु रा न न न जा यो॥१८॥ पां चा
न न पां चो मु ख मों सं गी त सु जा यो॥

चमुरैर

कौ० हरिकेबाबरोसोनारदनांचनच्यायो॥१९
46 देषिनंदकेजालहिजंत्रधरिगालब
जायो॥महादेवपटनारदेनपरसपट
प्रभुजायो॥२०॥होहोसोहोहोरीकरि
सो०हम हरिहोंसीसनेंबांधो॥मायानेंमुहिंमो
नारदलहलहरायो॥२१॥कांमकांमि
नीमयोमबनिकोचित्रचुरायो॥मलि
नोजोरीगांठिलालकोव्याहरचायो॥२२
गठजोरीब्रषभांनकुंवरिमोंजायजु
रायो॥नवलस्यांबकेमोरकोमोरीमोर
बनायो॥२३॥पातपिछोसतांनिछबी
लोमंडपछायो॥होरीकीअगियारी
कल्य: करिहूलहूपरनायो॥२४॥फागुनमा
४६ गारीनकोसाषाचारपठायो॥होरी
कोपकवांनसुमनरिझोरीननांयो॥२५

फलिफालकी फागफब्यो जिनियहजस
गायो॥ जनेहरीयापन स्यांमवासबर
सांनेपायो॥२६॥ ॥५॥ रागविराडी॥ ॥
तुमच्यावोरी तुमच्यावो मोंहनन्दकोंग
रीसुनाच्योरी रसरंगवढाच्यो॥१॥ हरिप्या
रोरी हरिकारो॥ देपनबीचवारो॥२॥
रसरंगवढाच्यो॥२॥ हरिनदुवारी हरिन-
दुवा॥२॥ धान्ह केच्या गेलदुवा॥ रस०॥३॥
हरिमधुकररी हरिमधुर॥ रसचारवतडो
लेतघरघर॥ रस०॥४॥ हरिनागररी हरि
नागर॥ जाकें बाबानंदरउजार॥ रस०॥५॥
हरिषंजनरी हरिषंजन॥ ब्रजनुवतिन
के मंनरंजन॥ रस०॥६॥ [redacted] रंजनरीम
नरंजन॥ ललिताले च्याई खंजन॥ रस०॥७
हरिमावेरी हरिमावे॥ ग्धानुकोंगायसुनावे॥

47

हरिप्यारो री हरिप्यारो॥ राधाजू नें नकोता
रो॥ रम.॥८॥ हमसरि है री हमसरि है॥ बजी
जीजीकहे सोकरि हेरी॥ रस.॥१०॥ सुख
मां डोरी सुखमां डो॥ हमारो फगुआ देंहि
तव छांडो॥ रस.॥११॥ हरि हो हरि हो री॥ रा
धामो हनजु की जोरी॥ रस.॥१२॥ यहजनप
रमानंद गावे॥ कछूरहसि वधाई पावे॥ र
सरंग बढ़ायो॥१३॥ ॥११॥ राग रायसो॥
सकल कुंवर गोकुल के निकसे षेलन फा
गु॥ हरि हलधर मध्यनायक कंचन रत्न
तिच सु राग॥१॥ ओलिन रुका बंदन रो
री हरद गुलाल॥ बाजत मधुर मदहरी
मुरली और उफताल॥२॥ कनक सक
ल केसरि भरे का वरि किंकर कंध॥ छो
रक हां लो कहीये भाजन भरे सुगंध॥३॥

कम:
४९

हमतहमावतगावतछिरकतमरत
अबीरा॥गीजिनगेतनसोमितअंगअं
गराजितवीरा॥३॥लेकुसुमनिकीगेंदु
ककरतपरस्परमारा॥छूटतफेंटलटप
टीविषरिपरतधनमारा॥४॥कोलाहलस्वा
लनिकोसुनिगोपिकाअपारा॥टोलनिटो
लनिनिकसीकरिसोरहश्रंगारा॥५॥रूप
माधुरीजिनकीकविपैंबरनीनजाइ॥ते
जरवीरतिरंभापगहूंपरतलजाय॥६॥
अतिहींसरससुरगांवहींकोकजीलको
ऊघोरा॥काहसुनियेनहींमावेवीनानार
कठोरा॥७॥ललितगलीगोकुलकीहो
तुविविधिबिधिरवेला॥अगरसतऊंक
मकुमाकीचलीहैंधरनिपररेला॥८॥
गयोहेगुलालगगनचढिमयोव्रजसद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

48 नसुरंग॥ मानौं सुरवेद उडी है मेनां मजी
हे स्यंग॥१०॥ लग्यो बनि ताव दुनिपर कल
सा गरको पंक॥ परि हरन चंद्रा तें जनौं
द्वे चल्यो है कलंक॥११॥ छिरकत हरिना
नारंग मीज गोपिन गात॥ मानों उमगि
बसन नितें स्यंचल श्रेम सुबात॥१२॥ बो
लीग्वाल वराती हमरें हरि को ब्याह॥ दुल
हनि गोपकिसोरी मोहन सब है नाह॥१३॥
यह सुनि गोपी गोपी हलधर पकरे जाइ॥
स्यंजन दे हग छांडे मृगमद सुष लपटा
इ॥१४॥ बहुरि सिमटि सुरि आई पकरे है
मदनगुपाल॥ कनककदली मंडप में लष
कल: सोभित तरुन तमाल॥१५॥ तब वृषभा
४८ नदुलारी हरि मरिली नैं स्यंका॥ कहीनज हेर
रतासुरव कीजा नौं निछिपाई है रंक॥१६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहि न सकत कोऊ हरि के अगनित
चरित्र विचित्र ॥ जिहिं तिहिं भांति गजा
धर रसना करहु पवित्र ॥१७॥ ॥१२
राग त्रिवंग राय सो ॥ ॥ निकसे मोहन
लाल षेलन ब्रज में हो फागु ॥ हो रंग हो
री ॥ गुमड्यो है अबीर गुलाल मानों न
यो अनुराग ॥ हो रंग होरी ॥१॥ काछें का
छनी लाल लालन वोली रंगीन मों ॥ रंग ॥
मोरमुकट छवि देत कटि बांधें पटि
सों हं ना ॥ रंग ॥२॥ करपिचकें भरि ले
त वं कहूं एमां नो देषने ॥ रंग ॥ सब नि
को मन हरि लेत अंन मेन मांनो पेष
नों ॥ रंग ॥३॥ आई इत ब्रज नारि स
ग नैंनी गजगामिनी ॥ रंग ॥ छिरके
सांवरे लाल घन हेरें जे सेहांमिनी ॥ रंग ॥४॥

छिरकतपियनंदनंदत्रियापटओट

बचांवेही॥रंग॥मोनोंघनसूरनवंद

डुरहीनिकसिफुनिआंवही॥रंग॥

प॥बद्योपरस्परंरंगउमगिउमगि

रंगभरनमों॥रंग॥निरषिमदस

बपंगपीलांबरफहॅनमों॥रंग॥छा

जबगहरैरंगनमरे॥मोहनसूर

तिसांवरे॥रंग॥हरहरहरहसिनु

परेमुनिमनकेगएवावरे॥रंग॥७

मईसरस्वतीमतिबोरी॥ओरषेल

केसेंकहुं॥रंग॥रंगमीनेसांवरगो

रनंदहासकेहियरल्यो॥रंगहोरी॥

॥८॥ ॥१३॥ ॥रागमालूं॥चाजुब

निठनिब्रजषेलनफागु॥निकस्यो

नंदडुरलारो॥फब्योहेलालमालति

लकजरितलालटिपारो॥३॥ बडे
कबंकविसाललनेंनछविमहेस्तो
ड़॥ बन्योहेमनुलमोरचंदचलत
हेषतछांई॥२॥ [illegible]तबनीव्रजनव
किसोरीजेरी[illegible]मोरी॥ बोराहेप्रे
मरंगमेंमानोंएकहीडारकीतोरी॥३॥
बन्योहेजलजंतनषेलछुटीहेरंग
कीधारेंमानोंपतुधरिसरनलर
तधारसोंधारमारें॥४॥ ब्रजकीवाल
लेगुलालमोहनलालछायो॥ मांनोंनी
लघनकेऊपरश्चरुनचूंबरआयो॥५॥
ताहीधूंधरिमध्यमतनभ्रमतमोंवरए
सें॥ बनीहैछविविसालप्रेमजालगो
लकजेसें॥६॥ गावतसुकसारदनारद
प्रेमरसकीमत्तली॥ सुरनरहुनिय

कितमए शिवसमाधिलीना॥७॥जा
50 हीयेंहरिचरितअंमृतसिंधुसुंर
तिमांनी॥नंददासताहिसुकति
लोनकीयोपानी॥८॥ ॥१४॥राग
विलावल॥ ॥सुंदरस्यांमसुजांनसि
रोमनिदेउंकहांकहिगारीहो॥ब
डेलोगओगनवरनतमऊचहोति
नीयभारीहो॥१॥कोकरिसकेपिता
कोनिरणोजातिपांतिकोजांनेहो॥जा
केजियजेसीएआवनिसोसीएभांति
वषांनेहो॥२॥मायाकुटिलनटीतन
चितवतयहथोंकोनबडाईपाईहो॥उ
लक्ष्म: हिंवलसबजगतविगोयोजहांतहां
५० मईहसाईहो॥३॥तुमधुनिप्रगटहोय
बारेंतेंकोनभलाईकीनीहो॥सुकति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

बसुउत्तमजनलायक लेअधमनकों
दीनी हो॥४॥ बसे दसमांस गर्भ माताके
उनिश्वासा करि जाए हो॥ सो घर छांडि
जाम के लालच के गए हृतपरा हो॥५॥
बारे हो तें गोकुल गोपिन सूने मदन
बंढौरे हो॥ ह्वै निसंक तहां पैठि रंकलों
दधि भाजन चाटे हो॥६॥ आपु कहाई धनी
के ढोटा मातकंपन ज्यों मांग्यो हो॥ मांनमें
गपरहू जैजाचतने कुसंकोच लाग्यो हो
॥७॥ लरिकाई तें गोपिन के तुम सूने भ
वन ढंढोरे हो॥ जमुना न्हात गोपकन्यनु
के निपट निलज पट चोरे हो॥८॥ सबको
जकहत नंदबाबाघर बिस्वरत्नसुमो
ले हो॥ गरें गुंजा सिर मोरपषौवा गायन
के संग डोले हो॥९॥ बेंन बजाइ बिलास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

51

कीरवन बोलि परांई नारी हो॥ ते कानें
सुनि राजसभा में कैनिसंक विस्तारी हो
॥१०॥ राजसभा को बैठन हारो कौन
त्रिया संग नाचै हो॥ अथन महि तरा
जसभा में ऊब जाहे खतरावे हो॥११॥
ले ले मनजे राजन की कन्या पहधी कौन
म लाई हो॥ सति मां मानु गोत में व्याही
उलटी चाल चलाई हो॥१२॥ अपुनी सु
मझाआ पुहीं छल करि अर्जुन संग भजा
ई हो॥ भोजन करि दासी सुत के घर जा
हैं जाति लजाई हो॥१३॥ वह नि पिता की
मासुक हावे नेक हूं लाज न आवे हो॥

कस्मः
५१

॥१४॥ मोहन वसी करन चट चेटक जंत्र मंत्र
सब जांने हो॥ ताही तें तुम मसले मसले कहि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नलै मलै जगजांने हो॥१५॥ बरनौं कह
जथा मति मेरी वेदौ पर न पावे हो॥ वास
गजाधर प्रभु की महिमा गुन गावत त
रन्यावे हो॥१६॥ ॥१५॥ मोहन प्रषमीन
केन्या॥१॥ तब न्यति रसन्यो ति जिवा॥१॥
२॥ नाना विधि भई रसोई॥ ताहि जेंवत
न्यति सुख होई॥२॥ तहां मित्रीं जुवती
बड भागीं॥ गावहिं कृष्ण चरित्र अनुरा
गीं॥३॥ तहो बोली एक ब्रैं नारी॥ अब देहु ज
कृष्णजी कों गारी॥४॥ इन्हें गारि कहा क
हि दीजे॥ गुन न्यौ गुन सरस लहि जे॥५॥
है बाप सबै जग जांने॥ कहें व्यास पुरांन
बषांने॥६॥ तुम वसुदेव देव की जाये॥
सुतो नंद महरि के कहाये॥७॥ मेरी माय
आंन आंन जाती॥ तुम हि लि मिलि बैठ

हुपांतीं॥८॥ तेरीकुपापंचमरतारी॥
ताकोजसुपावेनहीपारी॥९॥पतिपां
डुसवेजगजानें॥सुतअंनअंनके
अंने॥१०॥तेरीद्रोपदसुतासीभामी
सोतोपांचपुरुषमिलिनामी॥११॥
ताकीजगविदतिबडाई॥सोजमनकी
सिरोमणिगाई॥१२॥ तेरीबहुनिसु
मझाकवारी॥ सोतोअर्जुनसंगसि
धारी॥१३॥ छांडेदुरयोधनराजा॥ते
रेऊंचहिनआवेलाजा॥१४॥ तुमक
रिकरिअपनोमायो॥ अपनोजसुजग
तसुनायो॥१५॥ हमेंहसांवेंगोरी॥प
ऋ.स: टओटहसीसुखमोरी॥१६॥ नलि
५२ तायहमंगलगायो॥ दुनिसरस्या
मसुखपायो॥१७॥ ॥१६॥ ॥हरिः॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रागसुहोविलावल॥ ॥नंदरायलला
तुमराधारसवसकीनेहो॥नंद॥गुनदे
मरूपरसभीनेहो॥१॥नं॥यासुरतस
मागमनीकेहो॥नं॥होंकहतिनिहारेंजि
अकीहो॥२॥नं॥वहकोककलासब
जानेंहो॥नं॥तातेंतुमारोमनमानेहो॥
३॥नं॥वहप्रतिछिनवतनलागेहो॥नं
॥भयोविकलमदनफिरिजागेहो॥४॥नं॥
वहगोरवदनतनसोहेहो॥नं॥मुरली
धरकोमनमोहेहो॥५॥नं॥वहनषसि
खपरमसुदेसा॥नं॥कलमदनमनोहर
वेसाहो॥६॥नं॥वहभागसुहागकीहरी
हो॥नं॥धनसांवलजीवनमूरीहो॥नं॥
॥७॥नं॥वहषेलतसौंसोहेहोरीहो॥नं॥
वरसंगललीयेंसतगोरीहो॥८॥नंद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

53

मिलिबंसीबटतटआंई होौ॥नं॥ सबसा
जफागकोजाई होौ॥८॥नं॥ सुतोउलिनभ
लिरछीआंई होौ॥नं॥ करकनकगहेंपि
चकाई होौ॥नं॥१०॥ गिरिधरनकलप
तरुतीरा होौ॥नं॥ संगगोपकुंवरबलवी
रा होौ॥११॥नं॥ उफताल वांसुरीआनाजे
होौ॥नं॥ कोउखेलतहसतनचाजे हो॥
१२॥नं॥ जहांउडतगुलालअबीरा होौ॥नं
॥ चोवाअरगजउभनीरा होौ॥१३॥नं॥
नवसतसजिआंईगोरी होौ॥नं॥ पतिमा
तपिताकीचोरी होौ॥१४॥नं॥ कलगावत
मीठीगारी होौ॥नं॥ रसबेलमच्योअतिभा
री होौ॥नं॥१५॥ मिलिमरतमरावतनारी हो॥
नं॥ रंगरंजितभीनीसारी होौ॥नं॥१६॥
क हो हो हो री बोलें होौ॥नं॥ लटकतपिय

संगडोले हो॥१७॥नं॰॥वहकुचकपोलक
रपरसे हो॥नं॰॥सबसुखपियप्यारीवरसे
हो॥१८॥नं॰॥एकनाचतगावतधावतहो॥
नं॰॥पकरनपियकोंनहीपावतहो॥नं॰॥१९॥
श्रमछूटिगईछरगाती हो॥नं॰॥सुंदरमोह
नरंगराती हो॥२०॥नं॰॥वेंडावलिपियसंग
दोरी हो॥नं॰॥राधापकरेगहिकोरी हो॥नं॰॥
२१॥खेंखेंचरसोंपटजोरी हो॥ललिताहिसषी
तितनतोरें हो॥२२॥नं॰॥तबगहगहेगोपाल
हो॥नं॰॥छीनीमुरलीअरुमाला हो॥२३॥नं॰
नेंनअंजिमांजिमुषरोरी हो॥नं॰॥हसिता
रीदेतकिसोरी हो॥नं॰॥२४॥तुमहनननैननि
केतारे हो॥नं॰॥धनजीवनप्राणहमारे हो॥
२५॥नं॰॥मनकोमांन्योहमकरिहें हो॥नं॰॥
नहींलोकवेदतेंडरिहें हो॥२६॥नं॰॥तब

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

54 मषाछुडावनआए हो॥ नं॰॥ कमलनुलीयें॥
गोपिनधाए हो॥१७॥ नं॰॥ फगुलेमोहनमेले
हो॥ नं॰॥ यह फागुमनलाविधिषेले हो॥ नं॰
॥१८॥ नं॰॥ अब भांनकुंवारीजीती हो॥ नं॰॥
यहर्षमैंगटसेमरसरीती हो॥ नं॰॥१९॥ कें
तुकीबंदलटलटछूटी हो॥ नं॰॥ मानोंमदन
सुरतिपतिलूटी हो॥ नं॰॥२०॥ विथुरीमनि
मोतिनमाला हो॥ नं॰॥ फिरेंसुदितवदनब्र
जवाला हो॥ नं॰॥२१॥ अंगअंगअनंगनमो
हे हो॥ नं॰॥ लटकटतप्रियकेसंगसोहै हो
॥२२॥ ब्रजुगोपनकोधनजीयो हो॥ नं॰॥ रा
धावसमोहनकीयो हो॥२३॥ इहिंलीला
कम: त्रिभुवनभावे हो॥ नं॰॥ जसमाधोजुगजु
५८ गगावे हो नं॰ हरराइलाला॥२४॥ ॥१७॥ ॥
॥ रागजैतश्री॥ ॥षेलतफागुसंगमिलि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होऊ आनंद भरिपियप्यारी हो॥ नंदकिसोर
नंदनंदन दतनव वृषभानदुलारी हो॥१॥
नवरितुराज लतादुम फूले बरन बरन छ
बिन्यारी हो॥ गुंजित मधुप कीर पिक कूजित
श्रवन सुनत सुखकारी हो॥२॥ तेसेई सुभग
गोरस्यांमलतनवनी हे जोतिदकसारी हो॥ क
मलनैंनपर बूकामेलत हसिसकुचतिसुकु
मारी हो॥३॥ भरिरिझरगजा कनकपिचाईधाई
सबब्रजनारी हो॥ भरतिभांवते गिरिधरला
लेब घोरंगछतिनारी हो॥४॥ बहोरि मिलीद
सपांचसखी गोविंदजेरेखूंकवारी हो॥ चोवा
चंदनअगरकुंमकुमारीयो हे सीसतेंढारीहो
री॥५॥ देसमगन मोहन सुखचितवति त
न कीदिसाविसारी हो॥ चतुर्भुज प्रभु सुर
नर मुनिमोहे उनिधांनगिरिधारी॥६॥ ॥१८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

55

माईमेरोमनमनमोह्योसांवरेंऋबधरहोमोपें
रह्योनजाइ॥चपलतिरछीमोंहकीसरबमु
होमेरोलीयोचुराइ॥मेरोमनमोह्योसांवरे॥१
माईरीडुंगोरसलोनीकसीहूंराहोबिपनम
झार॥आइअचानकसीसतेंमटुकीहोमेरी
दीनीडारि॥२॥गहिअंचरामोसोंयोंकह्योको
नबहोतूकाकीनारी॥कैबरीयांइहिमघगई
हांनबहोहमारोमारि॥३॥मे॥कंचुकीपटगहि
योंकह्योलीनीबहोतेंकेतेमोल॥तिलकछुंमी
केव्याजमेंपरस्योहोमेरेपानकपोल॥४॥जो
यछोरेमिसदांनकेंरतिछितुहोमोहिरोकेआ
इ॥करतबसीठीमेनकीसनमुखहोमेरेंनें
ननचाइ॥५॥हसिबीरीकरमुखदईयीवांहो

कल्म:
५५

मेरेंमेलीबाह॥मिसहीमिसमोहिलेचले
गहबरहोअंधियारीमांह॥६॥माइरीश्रो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

-शोरकहारतिवरनीयेकहतवहोमोपेंअ
वेलाजा।जनतिलोकप्रभुयेंकयोब्रजब
नहोतनमनकेमाऊं॥०॥ ॥१९॥ रंगीले
होछबीलेनेंनारसभरे॥नांचतप्रभुहित
ने रे॥बंजरीटमानोंमहामनुजुगकेमंडु
फिरतनफेरे॥१॥स्यांमसेतरातेरंगरंगेमा
नजुचित्रचितेरे॥ऊंमनदासप्रभुगोवर्ध
नधरस्यामसुमगतनहेरे॥२॥८॥२०॥
रागनटनारायण॥ ॥जुवतीजूथसंगमिलें
षेलतनंदलालकुंवर होरीहो होरीहो होरीबो
लनां॥टेका॥गावतनटनरायणरागुसुदि
तदेतचेतफागु॥ चहुंदिसजुरिगोपबाल
हंदटोलनां॥१॥वाजतथाबजेउपंगवांसुरी
सबेनचंगसंषवंसगंकउफमद्दंगढोल
नां॥ चलतसुरअनेकचालसुधरराइश्री

56

गोपाल बैंनुमध्य गांनकरत होरी होलनां ॥२॥ पहिरें ललमांतिमांति मोमाकछुकही नजाति भूषनआमरनविविधिपटंभमोल नां ॥३॥ मनक्रमास्तुरंगछिरकतपिचकाइन मरिमरि परस्पर देत कूकवजकी षोरिषो रिडोलनां ॥४॥ कान्हकीचितुकचारुपरासि कान्हकीबेसरिषुंमी कान्हकेकरतकंचुकी के बंधषोलनां ॥ कान्हकोजेतहारतोरिका न्हकीगहतभुजमरोरि कान्हकोंपकरिछो डिदेतकरिकंजोरनां ॥६॥ गोकुलबीचकी चमचीमोरमचहूंओरबजोमवतनअनु रागउमगिरसञतोलनां ॥७॥ मनदासप्र भुगिरिधरप्रेमसिंधुप्रगटकीयोसुरवि मानदेषिविथकितमजकलोलनां ॥५॥ ॥२१॥ होहोहोरीकोओसरजिनिकोछ

कलः ५६

रिसमानें॥ काहूकोहार तोरें काहूकीचुरी फोरें काहूकीछुंमालेमाजें अरुपिचकाईनु तकितानें॥१॥ काहूकीनकवेसरिपकरें काहूकीचोलीवेंनागहेंकंठसरीनटक आनें॥ ऊंमदासप्रभुरहिविधिषेलषेलें श्रीगिरिधरकुंवरसबरंगजानें॥२॥ ॥ रराागनट॥ ॥ वहुरिडफबाजनलागेहे लीषेलतसुंदरसांवरोहोकिंहिमिसदेष नजाइ॥सासुनेंनंदवेरनिमईअवकीजेकौ नउपाइ॥१॥ श्रीजतगागरिढारि लयोहो जमुजलकेकाज॥इहिमिसबाहिरनिकं सिकेंहमजाइमिलेब्रजराज॥२॥ अबहुं व छुरामेलिदेहोवनकूंदेहुविडारि॥ वें देहेंहमहीपठेंहमरहेंघरीद्वेचारि॥३॥ हाहारीहुजतहोमोपेंनाआनपरतुरह्यो॥

न

57 नतोसो वँहीर हीपें मान्यो न मेरो कह्यो ॥४॥
घरि घरि आनंद होतु है हो जीवन को यह
सार ॥ ग ॥ इ घेलि हसि लीजिये हो फागु ब
ओ त्यो हार ॥ ५ ॥ राग रंग अति गहग ह्यो हो
मच्यो है नंद दरबार ॥ तिन मे मोहन अति
बने हो नाचत ॥ मर समुवार ॥ ६ ॥ मुरली
मुकट विराजही हो कटि पट बांधे पीत ॥
नैन तिआवत तां नसें न प्रभु गावत होरी
गीत ॥ ७ ॥ ॥ २ ॥ आगा री हरि देत दिखावत ॥
ब्रज में फिरत गोपिकन भावत ॥ १ ॥ हूष द
ही को मां त्यो डो लें का हे न हो हो होरी बोलें ॥ २ ॥
बगलनि में पिचकाई दाबें ॥ बांधत फेंट सं
वारत पागें ॥ ३ ॥ रुकि गए बगर निन्यारे पेंडे
मानों के सरि के माट उलें डे ॥ ४ ॥ छाजें ते छू
टा पिचकारी ॥ रंगि गई बाखरि अटा अटारी ॥ ५ ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रि॰ ११२

चोवा चंदन की चमचाई। मानूं ब्रज मे ब
रषा आई॥६॥ मोहन छैल छबीली राधा॥
अबीर गुलाल रंगी रंग सारी॥७॥ गोपीग्वा
ल सब रंग राचे॥ वे सब नंद पोरि पे नाचे॥
८॥ खेलत आए जमुना जल तीरा॥ कन्ह
और बलभद्र दो ऊ वीरा॥९॥ परमानंद
यो सुख दाई॥ जुगल किसोर हैं छवि बलि
जाई॥१०॥ ॥२४॥ राग देवगंधार॥ ॥आजु
माई मोहन खेलत होरी॥ नैनन मे षका छि
ठाढे भए संग राधिका गोरी॥१॥ अपने मेवते
आई देषन श्री व्रषभान किसोरी॥ चोवा चंदन
और कुमकुमा सुख मांडत ले रोरी॥२॥ छूटी
लाज तब तनन संभार तब जाति विचित्र बनी
जोरी॥ मां ओबेल रंग मचायामारी पाउपमाको
कोरी॥३॥ देतअसीस चली ब्रज वनिता सुं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

58

गअंगमबमोरी॥ परमानंदप्रभुप्यारी की
छबिपरगिरिधरदेतअकोरी॥४॥ ॥२५॥
रागटोडी॥ ॥ होहोहोरीखेलेनंदको
नवरंगीलाला॥ अबीरभरेंभरिझोरी
हाथनिपिचकाईरंगबोरीतैसीएरंगी
लीब्रजकीबाला॥१॥ सूरतिधरेंरागरं
गगावततानतरंगअंगतालमृदंगमि
लेबजावतवीनांबेंनरसाला॥नंददास
प्रभुप्यारीकेषेलतरंगुरह्योछबिबाढी
गाढीछूटीहेअलकनटीहे माला॥२॥
॥२६॥ ॥ मनमेरेकीइछाहजीआयो[redacted]
मासफागुनकोनीको॥ लाजसकुचत
जिसासुनंनदकीडोरिगयोकरसोंक
रपियको॥१॥ अबमेरोकोकहाकरे
गोयहतोहेचोसरहोरीको॥ मेंनभरी

कसः:
५८

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सूरति व्रजपति की देषें दुष मिटे गोजा
को ॥ ३१ ॥ ८७ ॥ राग काफी ॥ ॥ निकसिकुं
वर खेलन चले रंग हो हो हो री ॥ मोहन नंद
को लाल रंग नि रंग हो हो हो री ॥ १ ॥ संग ली
ने रंगमीनें ग्वाल बाल ॥ रंग ॥ वेणु नसू
पर साल ॥ रंग नि ॥ १ ॥ कंचन माट भराय
॥ रंग ॥ सोंधें भरी हे कमोरी ॥ रंग ॥ रतन
जटित पिचकारी ॥ रंग नि ॥ अबीर भरें भ
रि झोरी ॥ रंग ॥ २ ॥ सुरमंडल डफ नांकता
ल ॥ रंग ॥ बाजत मधुर मृदंग ॥ रंग नि ॥ ति
नमें परम सुहांवनी ॥ रंग ॥ मनोहरि बांसु
री मुरचंग ॥ रंग नि ॥ ३ ॥ खेलत खेलत व
रंगीलो लाल ॥ रंग ॥ गए वृषभान की पोरि
॥ रंग नि ॥ जे हुती नवल किसोरी ॥ रंग ॥
ते आई सब दौरि ॥ रंग नि ॥ ४ ॥ सुनि नि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

59 नवलाडिली॥रंग॥राधा राज किसोरी॥रं
गनि॥ओलि न पोहप पराग मरें॥रंग॥रू
प अनूप म गोरी॥रंगनि॥५॥मंग अली रं
ग रंगीली सोहें॥रंग॥ करनिकनकपि
चकारी॥रंगनि॥ मोहन मनकी मोहनी
॥रंग॥ देत रंगीला गारी॥रंगनि॥६॥ति
नकों छिरकत छबीलोलाला॥रंग॥ राज
त रूप गहेली॥रंगनि॥ मानहुं चंद सों च
त मसा॥रंग॥ अपने प्रेमकी बेली॥रंग
नि॥७॥ नवल बधून के रंगीले वदन॥
रंगम अबीर घुमड मेलो लनि॥रंगनि
छुटि निमके अरुन घन मे॥रंग॥ हिम
रु.ला: किर निकरत कलोलनि॥रंगनि॥८॥इ
५९ तने मांझ छपि छबीली कुंवर॥रंग॥ए
करे मोहन अंगनि॥रंगनि॥ छबिसों पर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

स्परक कजोर नि॥ रंग॥ कापेंपरत बषानि॥
रंग नि॥९॥ गुपतमीतिमगटमई॥ रंग॥
लाजतिन मीतोरि॥ रंग नि॥ ज्योमदमाते
चोर भोरा॥ रंग॥ बलकतनि मीचोरि॥ रंग
नि॥१०॥ सषियन दे खनके काजे॥ रंग॥ गं
ठि डुहन की जोरी॥ रंग नि॥ निरषि बलैया
लेत वसबे॥ रंग॥ छबि जुबटी कछु थोरि
रंग नि॥११॥ कोउ छे लछटि छबीलेलाल
रंग॥ छिरकत रंग अमोला॥ रंग नि॥ कोउ
कमल करलेपरा गा॥ रंग॥ परसत रुचिर
कपोला॥ रंग नि॥१२॥ बने हे प्रियके चंचल
लोचन॥ रंग॥ जब गहि आंजे अंजन॥ रंग
नि॥ मनो अरुणात कमल मंडलमे॥ रंग
फंदन परे जुग षंजन॥ रंग नि॥१३॥ देषिवि
वसलह षभांनघरत नि रंग॥ हसत हसत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तहां आई॥ रंगनि॥ वरजी आंनि नवल वधू
रंग॥ भुजभरि लीने कन्हाई॥ रंगनि॥१४॥
पो छत मुख अपने अंचल॥ रंग॥ फुनि फुनि
लेति बलाई॥ रंगनि॥ मुसकि मुसकि छो
रत सु गांठि॥ रंग॥ छवि बरनी न हीं जाई
॥ रंगनि॥१५॥ छोरन न देहु नव बधू॥ रंग
॥ मांगे ऊवर पे फागु॥ रंगनि॥ जो पें फागु
दीयो न जाइ॥ रंग॥ प्यारी राधा के पांइ लागि
॥ रंगनि॥१६॥ औ र कहां लग बरनाये॥ रंग॥
ब ढ्यो सुष सिंधु अपार॥ रंग रंग हो हो हो री
॥ प्रेम कल्लोल हल्लोल न मे॥ रंग॥ कान्हू न र
ही संभार॥ रंगनि॥१७॥ रंग रंगीली ब्रज
लल: बधू॥ रंग॥ रंगीलो गिरिधर पाया॥ रंग
६० नि॥ यह रंग मीने नित बसो॥ रंग॥ कृष्ण
दास के हीयां॥ रंगनि रंग हो हो हो री॥१८॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

।। ।।२८।। त्रिभंगी मोहन मन हस्यो हो।।
मोहन सब ब्रजजन सुषदेंन ।। टेक ।।
यह यह तें वनिक ब्रजवनिता चली
हे नंद दरबार ।। देषन रूप मदन मोह
न को कीनो हे प्रेम विस्तार ।। त्रि ।।१।। तंन
तनक सूंभी सारी पेंहरे श्रुति रोटा छबि
देत ।। नील कंचुकी श्रुति राजति हे कस
बी के फुल सहेत ।। त्रि ।।२।। गजगामिनि
भामिनि श्रुति प्रभु दित रव नूपुर झंका
र ।। मानों मराल मंडली मोभित रह्यो हे
निरत आकार ।। त्रि ।।३।। छुद्र घंटिका रा
जति कटितट सम सुरन कलबाज ।।
आतुर है आंई धाइ सब मनहुं मत्त गज
राज ।। त्रि ।।४।। च्यारि च्यारि चुरी पोंहुची
न पर ऊपर विराजत घाट ।। कर पहेवक सु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

61

दरीखतिराजितबाजूबंधबनेसुपाटा।

त्रि॰।५।। मुक्तमालचोकीहमेलषगवारो

डुलरीपोति।। कंठपदकरीजगमगातु

हेमषतूलजावाकीज्योति।। त्रि॰।६।। वि

भुकचेनरसेंदेषियतमधुकरजेसेहो

इ।। करिमधुपांनसांनसुषदाहेंरह्योहे

कवलदिगसो।। त्रि॰।७।। अरुनअधर

जुमधुरीवांनीसुषसुसकनिवरषत

फूलदसनतडितकेबीजवोएहेंमध

सुधकिंउत्ता।। त्रि॰।।८।। नासावेसरिज

लसुतराजतकहीयेकहाबनाइ।। नं

नहुचंदनिजबंधजानिकेंलीनोहेनि

सभा: कटबुलाइ।। त्रि॰।।९।। नेंननिरंजनष

६१ जनमोहेचंचलताथकेमीना।। चकि

तचितवनिम्रगमोहेहेंपुतरीकचंन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अति आधीन ॥ त्रि० ॥१०॥ पंकजलो वजपर
अकुटी मन हुं कांम के बांन ॥ छुटत नहीं
अब सकरि राषे मदन राइ की आंन ॥
त्रि० ॥११॥ मृगमद आट लिलाट विरा
जित मधि चंदन को विंद ॥ कही न जाइ
ए सी सोभा मांनों बन्यो हे राहु परि अंद ॥
त्रि० ॥१२॥ पविध बांहन मष मांग विराजि
त सीस फूल की कांति ॥ करनो टी अरि
करन फूल मांनों ससि उडगन की पांति
॥ त्रि० ॥१३॥ रतन जटित पाषडी विराजि
त वेनी सोभा देत ॥ कनक षंभ मांनो च
ढ्यो भुअंगम आयो हे मणि कें हेत ॥ त्रि०
॥१४॥ सकल सृंगार की व्रजवनिता
उपमा कही न जाइ ॥ कोटि कोटि राके स
मनोहर नगट मष हें आइ ॥ त्रि० ॥१५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

62

चौवा. चंदन ओर अरगजा सो पगु लाल

अबीर॥ नईमहु की नरिके सरि यों री

निरमल जमुना नीर॥ त्रि०॥१६॥ छिर

के जाइ गोपाल ग्वाल सब बाध्यों मन आ

नंद॥ खेलत हसत करत कौं तूहूल

राजत आनंद नंद॥ त्रि०॥१७॥ गोपी ग्वा

ल एक तम एहैं खेल मच्यो सुरवरास॥

मगन भये बप आपनो संभारत परे है

प्रेम के पास॥ त्रि०॥१८॥ सब गोपी नु

मिलि मोहन पकरे छाडे आंषिन्ह जा

इ॥ तव तुम वसन हरे जु हमारे दाउ

परे हो आइ॥ त्रि०॥१९॥ डुहूं दिस तें बा

कल्प: जित्र व जावत मुरली चंग उपंग॥ उ

६२ रज मुरछज फ नांन नाल री बाजत

मेरिम दंग॥ त्रि०॥२०॥ ता लग हैगा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इनगावतगंधर्वसेगुनीअपार॥ मोहन
रीझिदेतपीतंबरराधाजीउरकोहार॥
त्रि॥२१॥मुषमंडितअजितअहलोचन
सुंदरसुभगसुदेस॥ हरषिहरषिहरि
रूपनिहारतहोतप्रेमआवेस॥ त्रि॥२२
हरिनारायणस्वामीफगुआदीनोमेवा
बहुतमगाइ॥ गावतिचलीसकलब्रज
बनितास्यामदासबलिजाइ॥ त्रिभंगी
ललनामनुहरयोहो॥२३॥ ॥२५॥ ॥
रागसारंग॥ ॥ माधौ वाचरिषेलेंहीषेल
तरीजमुनाकेतीर॥ मदनमहोछिउ
लघोसुंदररीहलधरकोबीर॥१॥ झूंम
झूमकरनीगोपिकातेसेरीघनस्यांमस
रीर॥ नीलपीतपटमंडितानाचेंरीवेपें
मगंभीर॥२॥ बीचबीचगोपीबनीबि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

63

चविचरी वेबने मुरारि॥ मरकतमणिकं
चमनी मालारी वहगुही संवारि॥३॥ किंकि
नीनूपुर बाजेंहीं सबदिनरी कोलाहलके
लि॥ करतबेंनब्रजसुंदरी लटकतलाल
मुजागलमेलि॥४॥ चंदम्रलिकोतकरचो
हरिणारी मुरलीकेनाद॥ याक्योरथकेसं
चले ब्रजजनरीवहलायोवाद॥५॥ एकसुपं
नषवावहींएकजुमांगेंदेहुत्रगारा॥ एकन
मुखचुंबनकरेएकनिम्रलेटूटेहार॥६॥
सुरविमानचढिदेषहींबर [redacted] खनरी वेला
जेफूल॥ जेजेजेजदुकुलनंदनारासरचो
रतिनायकक्रूल॥७॥ सोप्रसादहमकुंभ
कथाः योहरिपरिरंभनबांहपसारि॥ परमानं
६२ दप्रभुश्रीपतिपुन्यपुंजक्रितगोकुल
नारि॥८॥ ॥३०॥ अहोपियलालडेंन

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कोऊ मिका हो॥ गमरसमसुर गावति मिलि अज

बालत्र हो कलकोकिलकं रमाला॥ लव

लिऊ मिका हो॥ नवजोबनी मरसैदसमसि

बदनी जुवती जूथ जुरि आई॥ नवमतसा

जि सिंगारि सु जगतन करनि कनकपि

चाई॥ एकनि सुनजूथ नवसा सेलासी

दामिनि सी दरसाई॥ एक नि सु गंधसवा

रि अरगा जा मरन कुंवर कोई॥१॥ पहरें

बसन विविधि रंग नि रंग अंग मह। रस

मीनी॥ अंतरोटा अंगी या अमोलतन

सुखसारी अति झीनी॥ जगमगाति मं

दमराल चाल रुनक ति किंकिनि कटिषी

नी॥ चोकी चमकि उरोज जुगल पर आ

नि अधिक छबि दीनी॥ हाहो॥ रा रुरक

त हार सुढार जलज मनो पोति उंज अ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तिसो है॥ कंठसरी दुलरी दमकनि चो
64 कीचमकनि मनमो है॥ वेसरि थर हर
तिगजमोतीरतिमूल्योगतिजो है॥ सी
स फूलसीमंतजटितनगबेनकरनक
विको है॥ ऋहो॥३॥ मृगमद आडललला
ट ऋवनताटंकतरुनदुतिहारी॥ खं
जनमांनहरनऋं खियांऋंजराजित
ऋनियारी॥इहिबांनकसंगसषीलीं
नेंवृषभांनदुलारी॥ इकटकद्रिष्टच
कोरचंद्रजुनिरषेलालविहारी॥४॥ऋ
हो॥ नवलनिकुंजमहलरसपुंजमर
श्लो: पियप्यारीबेलें॥ केसरिऋौरगुलालऋ
६४ गुमजलपोरिपरस्परमेलें॥ मधुकर
न्यूपनिकटऋावतरुकिऋतिसुगंधक
रि लें॥ प्रीतमऋमितजांनिप्यारीतव

स्यामसुजामरिकेलैं॥ अहो॥५॥ बहुविध

िभोगविलासरासरसरसिकविहा

रतिरंनी॥ नागरनृपतिनिकुंजविहा

रीसंगसुरतिरतिमांनी॥ जुगलकिसो

रभोरनहिंजांनतइहिंसुषरैंनिविहांनी

॥ पियप्यारीदोउमिलिविहरतललित

दिकगुनगांनी॥ अहो॥६॥ ॥३१॥ ॥

दोउराजतजुगलकिसोरअतिआनंद

भरे॥ ब्रजजुवतिनकेचितचोरपरमवि

चिचषरे॥ टेक॥ इतश्रीमदनगुपालम

धाअंसनमुजदाने॥ उतराधिकाप्रबीन

मेलअपनेसंगलनि॥ कंवरकंवरिदो

उआपुमेंहोवाघोअतिअनुराग॥ निक

सिगांउकेचोहटेंहरिषेलनलागेफागु

॥१॥ दोउ॥ बाजतडफवांसुरीतालनि

65

लिमधुरमृदंग॥ गावतसारंगरागुसुत

तसुषउपजतअंग॥ नरनारिनमेनेक

हुहोलाजतैरहीनहींगात॥ कछूअकह

तकछूवेकहैंहोसबेस्यामरंगरात॥प

तवसबगोवालनउमगिलईहाथन

पिचकारी॥ जुवतिनकोमुखमरतदेत

होरीकीगारी॥ यातकायेंचितवतफि

रैंहोजितसेअलिकेवाग॥ सावधान

सबगोपकोंहोदेतनलागनलागी॥कृ

तवउनिग्वालिनधाइगयोसंगीहरि

पियको॥ नैंनआंजिमुखमांजिदीयोसि

दूरकोटीको॥ चलतआपनेकुंडकंवे

कलपरतहैंपाई॥४॥ तबहींनंदकेनं

दपलकएकबातचितविचारी॥ धस्यो

त्रियाकोभेषजाइभेटीब्रजनारी॥ ता

कांनवेंदिगुलचाकेहोतबदीनोछिटकाई॥४

छैं सऊँचीसबे हो जब जांन्यो यह माउ॥ता
रा दे हरि हसि चले हमलायो सखा को दा
उपा॥ तब हीं सह चरी जाइ मेष हलधर
को कीनो॥ गोऊलतन तें आइ पहरि नीलो
पटजीनो॥ ताहि मिलन के सो चले हो करि
स्यजकी कांनि॥२ तचितवत दुचिते भ
ये तब गहे ग्वालिनी आंनि॥ ६॥ एक घराघ
रि करैं एक सुष सुसुषजोरैं॥ एक अलीसु
ज मेटि एक पीतंबर छोरैं॥ एक नैंनकी सें
न दे हो एक नैं सुसिकाई॥ एक न बातन सुष
लाइ लालकी मुरली लई छिंडाई॥७॥ छू
टन पाए जब हीं दैं न हरि फगुआ मान्यो॥ ^
मदनलजांनो देषिके हो कमल नैंनकी के
लि॥ गंजलप्रसु आए घर हो सब सुष
सागर केलि॥८॥ ॥३॥ ॥नवलकि
रंग रंग व मनमगाए दीयो जाइ जे सोवं सो ४
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

66

मोरकि सोराजोरी हो हो हो षेलत होरी॥
ग्वाल बजावत डफ म्रदंग मोहन मुरली
धुनि थोरी॥१॥ इत ब्रज नारि गारी देत पर
सर रंग बढ्यो चहुं ओरी॥ दोरि आई गिरि
धरन बदन लगांवन चंदन बंदन रोरी॥
२॥ बलत डंभ को छलु करि लाई गांठि स्या
मसों जोरी॥ तेल चढावति गात ब्याह के
सबे सयांनी भोरी॥३॥ मोर बनायो मोर
मुकट को दई चंद्रका कोमोरी॥ हल्त हप
र बत सेन को ठाकुर दुलहनि राधा गोरी
॥४॥ ॥३३॥ अहो खेलत बसंत पियप्या
री॥ मों थे भरि लेपिचकारी॥ टेक॥ चोवा
कल्लः चंदन औरअरगजा केसर कुंवरि पर डा
६६ री॥ केसरि आदि जवादि कुमकुमा भी
जि रही रंग सारी॥१॥ छीटत छिरकत म

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रतपरस्पर देत दिवावतगारी॥ मुरली
छिनिलई पीतंबर रंगरह्यो अतिभारी
॥ ३॥ देतिनहीं उहकावति सुंदरि हम
तदेदेकरतारी॥ हितहरिवंस दुहुंनी
या मुरली तुमजीते हं महारी॥ ४॥ ॥
॥ ३६॥ राजतिहे ब्रषभांनकिसोरी॥ ब्रज
के अंगनखेलेपियसंगरितुबसंत
आगमजेसें होरी॥ १॥ तालमृदंगबेन
चंगबाजें राजें मरसबांसुरीधुनिथो
री॥ अगरजवादिकुमकुमा केसरि
छिरकतस्यांमराधिकागोरी॥ २॥ ज
बहीरवकिपीतपटपकरतपहरस
रसिकदेतऊकजोरी॥ परमानंदच
रणवंदितराधास्यांमबनीहेजोरी॥
॥ ॥ ३॥ ॥ ३५॥ होसनायकषिलवा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

67 रि होरी की करलीयेउ कहि बजावे हो।
पां नमरें मुषचमकत चोका-ग्रो रहीये
वें दी रोरी की।।१।। तनतनमुषकीसा
री पहरें ग्ररु कसिगांठि दई डोरी की।
ग्रंगीयाष्टुबकिरही कटाव की कहा
कहों छबिया गोरी की।। च्या च्यारि च्या
रि चुरीरहा पुहँची पर छुटिलावे सरि
ग्रति मोरी की।। देतबनाइ गारिफगु
ग्रा की कहा कहों छबि याजोरी की।।३
ग्रबीर गुलाल कुमकुमा केसरि लेत
बनाइ केमरि झोरी की।। गोविंद प्रभुकुं
घेरि लीये व्रषभांनकुंवरि किसोरी की
कल्य: ६७ ।।४।। ।।३६।। माई होरी षेले सांवरो लीये
गुलाल ग्रबीर।। वनि बनि चली सकल
व्रजबनिता पहरि विविधि रंग ची र।।१

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अरगजा बंदन उकमकुम केसरि वरवे स्याम
शरीर ॥ अरगुलिका इ परस्पर सुंदर दरस
न वलकत मुषहीर ॥२॥ प्रेम प्रवाह परिवकां
ई छूटति अरु जमुनाजल नीर ॥ सूरदास
प्रभु रस वस करि लीये हरि हलधर के बी
र ॥३॥ ॥३७॥ नंदराय को कुंवर कन्हैया
होरी षेलि न जांने हो ॥ रस में विरस करे
अरनी लोल घुदार घप हछांने हो ॥१॥ आं
ज्यो चाहे अबीर के नेंना अउनेनेंन छिपावे
हो ॥ देखि बिराने श्री फल ऊपर लाल चमन
ललचावे हो ॥२॥ पकस्यो चाहे सुधानिधि हा
य निऊ धर सुधा को पाव हो ॥ अंगुरी गहत
ग हे कर प हुंचा भुज मूलनि अंग लावे हो ॥
३॥ तेल फुलेल जु लेले सिर पर धंघि दुकू
ल निज छोरे हो ॥ बहुत नजु लाल डारि आंषि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

न मैं हसे खंगर रुकजोरे हो॥४॥ मकरपत्रि
68 कारचितकपोलनिमरु वदिमुखहिं बना
वे हो॥ कुलहनिमीकरिपठवत उततें हूल
ह आउ कहावे हो॥५॥ जो हसि जाइ रूठि ह
र बेठे तो सषी हमहिं मना हो॥ मकतिस
नेह करे जु वतिन सों सें न निठुर थजूना
वे हो॥६॥ राजामि त्रमयो नहीं रे षो मयो
पषा नो सांचो हो॥ तु रारि रासमनु सों जिनि
बोलो कोटि नाचकिनिना चे हो॥७॥ ॥रू
तें लाल नकी मनु हस्यो तु मबिनु रस्यो न
जाइ री प्यारी॥ कुंज मह बेठे पिया नवप
ल्लवतल पमं वांरी प्यारी॥ बी च जुहीं बिच
वन्नः सेवती विचविच नवलनि वारी प्यारी॥१
६८ तुव पंथ वेठे निहारें हीन व कुंज कुटी मे
वारें री प्यारी॥ जो चनम रिमरि रे षं ही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सुंदर ब्रजराजकुंवार री प्यारी॥३॥ अ
पनेकर नव रंग्यही विविध कुसुमकी
चोली री प्यारी॥ तेरे उरपद्दरां वे ही बेगि
चलो पिय बोली री प्यारी॥४॥ चंद देषि
आनंद ही तुम मुख की अनुहारि री प्या
री॥ यह छवि ज्यों इन बूझही निरषि कर
क विचार री प्यारी॥५॥ नंदपि सकल ब्र
ज सुंदरी काह्न मन न अरुझाइ री प्यारी॥
चात्रिक जलधर बूंद ज्यों तुव जल त्रिषा
न जाइ री प्यारी॥६॥ पिय को प्रेम सखि मु
ख सुन्यो तब ही चली उठि धाइ री प्यारी
॥ गोविंद प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ
लपटाइ री प्यारी तेलाल को मनु हस्यो
तुव बिनु रह्यो न जाइ री प्यारी॥७॥ ॥३॥
॥ ॥राग गौरी॥ ॥रुत बसंत मिलि

69

षेलियो हो आयो फागुण मास होरी डांडो रे
पियो सब ब्रजजनमनहि हुलास॥ गोकु
ल के राजा॥१॥२ जनी सुख बनत आवही हे
गो धन पूरिकनि वारि॥ सषा संगसब बो
लि कें घर घर दे तब गारि॥२॥ बड़े गोप ब्र
षभांन कें हो सब मिलि आए पोरि॥ अ व
न सुनत प्यारी राधिका चढ़ी चित्रसारी
दौरि॥३॥ उन किंउ रो खां जा कियो हो दे
षन मंन आनंद॥ एसी छवि मनों लागही
हो निकसि घटा तें चंद॥४॥ बासर षेलम
चाईयो हो नियरो आयो फागु॥ मक चे
तब गांव ही पिय मोहन गोरी राग॥५॥
सा.गः अगनित बाजे बजावही हो संजसुर रून
६८ सान॥ उफ डंडु भी अन गजरी पै कछु व
न सुनी जे कांन॥६॥ नरनारी एक तम इ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हो घोरवरा य ह र वार॥ पिचकांईकरकन
क की हो अरगजकुमकुमघोरि॥७॥प्रां
नप्रीयाकोंछिरकही हो तकितकिनवल
किसोर॥८॥बहुरिसषासननसुखमए हो ब
लमोहनकेसंग॥जुवतीजनपरवरषही
होनवलगुलालसुरंग॥९॥ललित
विसाषामतोमत्यो हो लीनोसुबलबुला
इ॥वेरीतेरे बापकी नेकुमोहनकोपक
राइ॥१०॥तहांसुबलकोतिगरच्यो हो सु
नो सषाएकबात॥इनकोंमीतरजांनदे
बोलतिजसोदामात॥११॥हरेंहरेंसवरें
गिचलीजबनियरेंनिकसीआइ॥सैंन
निदेसबदोरियोमनमोहनपकरेधाइ
॥१२॥प्यारीकोअंचरालीयो हो अनपिय
कोपटपीत॥सकतजुठगांठिबजोरही

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

हो मलै बनै दोऊ मीत ॥१३॥ फगुआ कों मु
70 रलीलई हो ओरु कंठ को हार ॥ प्यारी प्या
मा कों पहरावही हो दे तसबे करतार ॥१४
मेवा बहुत मंगाइयो हो फगुआ लै हैं निब
रि ॥ मनमायो करि छाडही हो हसत वदन
तन हेरि ॥१५॥ इहिं विधि होरी षेलही ब्रज
वासी संगलगाइ ॥ श्री गोवर्द्धनरूपपर ज
न गोविंद बलि बलि जाइ ॥१६॥ ॥४०॥ हो गो
वर्द्धनराइ ला ला ॥ जाके चंचल नैंन बिसा
ला ॥ जाके उर सोहे वनमाला ॥ टेक ॥ षेल
षेलत जहां गए तहां पनिहारी की वाट ॥
गागरि डारें मुंड तें मरकन पावें घाट ॥१
अरगज कुंमकुम घोरि कें ला लो करल
पटाइ ॥ अचकें अचकें आंवही ब्रज जु
वती न कपोलन लगाइ ॥२॥ नंदराय कें

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जाइलेबलिएसोषेलनिवारि॥मनमेंआ
नंदमरिरहीसुषजुवतीसकलब्रजना
रि॥३॥इहिंविधिहोरीषेलहींब्रजवासी
संगलाइ॥जुगलकुंवरकेरूपपरजन
गोविंदबलिबलिजाइ॥४॥२॥ ॥४१॥
कछूदिनब्रजओरोरहोहरिहोरीहेअ
बजिमधुरांजाऊंअहोहरिहोरीहे॥टेक॥
परबकरोघरअपने॥हरि॥कुसलकेलि
निरवाहि॥अहो॥१॥फागुनमदनमही
पती॥हरि॥इहिविधिकरहोराजा॥अहो
पांनन्तरयपरिवनवो हरि॥सुंदरिकर
तिसमाज॥अहो॥२॥परिवापियचलीये
नहीहरि॥सबसुषकोफलफागु॥अ
हो॥प्रगटकरोसबआपनोहरि॥अंत
रकोअनुराग॥अहो॥३॥मानहुदेज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

७। हिनसोधिकैंनृपतिकीजेकांम॥सयेबा
सिरतिलकदेसबकौंकरेप्रनाम॥हरि॰
॥४॥कनकसिंघासनबैठहीजुवतिनके
उरआनि॥हरि॰॥अलपुचवरअंचलधुजा
अतिछत्रबटतांनि॥अहो॰॥५॥नीजत्रिहू
पुरप्रगटहीअपनेआंननरेस॥हरि॰॥
सुनमगनमगडफडुंडुभीसबकौंहोतअ
वेस॥अहो॰॥६॥चौपिचहूंदिसचालही
यहअपनीएकरीति॥सबकौंगहेंनिल
जताछाडिसकुचकुलनीति॥७॥पांचें
परमितपरहरोसबनमतोमत्तोएक
॥नृपजुकहेसोकीजियेजिनिकोउक
कल्म: रेविवेक॥८॥छठछरागिरसरागिनी
७१ तानतांनबंधांन॥चटलवरितरतिना
थकेसषीसारसंधांन॥९॥सातैंसुनि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सबसङमएराजकीरुचिजांनि॥ कहितक
रततेसेंसबेआइसुमांथेंमांनि॥१०॥ औठें
औरउनमांनकेसबनिकस्योमतोएक॥
मरेंमरावेंनांचहीहां॥साजेंस्वांगअनेकअ
हो॥११॥ नोंमीनवसतमाजिकेंलेसुगंध
उपहार॥ मनोबल्लेमिरैमारकेमनसिज
करनसुहार॥१२॥ इसमीहिमोहिमसो
धिकेंबोलेराणेराइ॥ केलिकरीरुचिआ
पनीज्ञानवेरागतिपाइ॥१३॥ सुनिआईए
कादसीसबबोलेसिरनाइ॥ नरनारीसब
बसकरीआएकाजमराइ॥१४॥ सुनआइ
सभूपालकीबोहरआसंकादेत॥ राजाक
स्योरतसुरतहरिराधिकासमेत॥१५॥ दे
खिमटआपनेंहारहिदिवसविचारि॥ केजि
करोरुचिआपनीकेनिसंकनरनारि॥१६॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

72

मेरि ढोल डफ बांसुरी बाजे पट हनी सांन ॥ मिले नाजपति छाडि कें नहीं ओर नकों तां न ॥१७॥ रचकें पिवर बातें सबे मएष र नित्र्म सवारा घेर घेर घेरें मतु धरे जंत हथियार ॥१८॥ जहां तहां सेना चली सुब न को छसिर के सा आइ परी समरु तन हीं राजा रंक आवे सा ॥१९॥ जहां सुन्यो व्रत सं जमी घर में धरें आचार ॥ छाके जाइ तिसं क के पकरे तोरि किंवार ॥२०॥ जो काहूं हे षो नही कबहूं सुनी न कांन ॥ तन नारिन के डर न लगे पुरुष पद्मो हांन ॥२१॥ मात पिता पति बंधकी तजी सबन की कांन ॥ मर जा राषि नहीं कहि पहिले हैं तान ॥२२॥ ते रासि ची हसि दीऊ स में जगजी तो जन डारा ॥ स ठ पंडित वेश्या वध्र सबे मएइक सारा ॥२३॥

क्षम:
७२

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पुन्योप्रगटिप्रतापतेंवोरिमिलैपांइन्नागि॥
जहांतहांहोरीलगीमनोमवासेंआगि
॥२४॥सबगांवेंचनांचेंसबेसबहितडावें
छा२॥साधऋसाधनदेषहीवोलतब
चनविकार॥२५॥अतिअनीतिकांमदे
षिकेंपरिवाप्रगटीआनि॥आवतहींवि
नतीकरीहसेजोरिकरपांनि॥२६॥ना
रधर्मअपनेरह्योवसोहमारीवांहा॥सा
धुकहांलुंबरनीयेमनसजकेगुणछां
हा॥२७॥सूररसिकमणिराधिकाकहे
केसोसंवात॥स्यामकृपाकरिघरिरह्यो
बरजेनमथुराजात॥२८॥३॥ ॥४२॥
श्रीगोकुलराजकुंवारकमलदललोच
नाठाटेगिरिंपहुवार॥कु॥नरसिषमेष
वनाइ॥सुंदरताअतिसार॥१॥कमल॥

रसभरनंदकिसोर॥निकसे षेलनफागु॥क०
73 मधुर बेनकलमांना॥गावतगौरीराग॥क०
॥२॥या गोकुलकेचोहटे॥क०॥लीयेसषा
सबसंग॥क०॥नए मखनयेबसन॥क०
सोभितसांवरेंअंग॥क०॥आउपमाकही
यनजाइ॥क०॥सुंदरसुखआनंद॥क०॥बा
लकवृंदनछत्र॥प्रगटीपूरनचंद॥क०
॥३॥बाजततालमृदंग॥क०॥आवज डफ
मुखचंग॥क०॥मदनभेरिसुरबेना॥क०॥
गिरिगिरीझांझउपंग॥क०॥४॥सुनतश्र
वनचलीदोरि॥क०॥ग्रहग्रहतेंब्रजनारि
॥क०॥तामेंपरमसुदेस॥क०॥प्यारीराधाअ
कल्प: तिसुकुमारि॥क०॥५॥बनेचीरआभरन
७३ ॥क०॥फुंदरताअतिसार॥क०॥करकंक
नकटिकिंकिनी॥उरगजमोतिनहार॥६॥

नकवेसरिताटंक॥ कंठसरीअनभां
ति॥ चोकीबनीजडाव॥ हरिकरतरवि
क्रांति॥ क॥८॥ सुंदरतिलकतंबोल॥
पुठिलावनेविशेष॥ क॥ सोभितकेसरि
आड॥ कुंकुमकाजररेष॥९॥ प्रफुल्लि
तआनंदमयो॥ चितवतप्राचीनुखओ
र॥ क॥ मांनोंविधप्रीतमभिल्यो॥ सुंदर
चारुचकोर॥ क॥१०॥ रूपनेंनरसमरे
कारंवारनिहार॥ गावतकुमकचित्र॥
बीचसुहाईगारि॥ क॥११॥ चोवाचंदनअ
गर॥ सुभासजेंअनेक॥ पिचकारीभरि
लाये॥ धाईएकतेंएक॥ क॥१२॥ अतिभ
रिबांधेफेटा॥ सुरंगअबीरगुलाल॥ क॰
डुहुंदिसमांचोषेल॥ इतिगोपीउतग्वा
ल॥ क॥१३॥ नरनारनांषरीचोक॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

74

छिरकत तकि तकि छैहा॥क॰॥ भरि तभ
रि तमई मीरा॥ मानो बरखत मेहा॥ क॰
॥१४॥ बरन बरन मए बसन॥ रंग निरहे
लपटा इ॥क॰॥ प्रेम रूप रसमग्ना॥क॰॥ श्या
नंद उरन समाइ॥ क॰॥१५॥ ब्रजजुवतीन
मतो मत्यो॥क॰॥ सुखन जनावत बेना॥क॰
पकर नकों घनस्याम॥क॰॥ मिलवत इत
उत सैंन॥क॰॥१६॥ जुवती न्हयत बपेलि॥
दीनै सषा भजा इ॥ कह्यो कहा मत्यो करें हो
श्रब तो कछु न सुहा इ॥ क॰॥१७॥ कहत न
वां च्यो कछु॥ बवन गारि श्रुक गीत॥ क॰॥
श्लो: कुंडन जुरी वहूं श्रोर॥ जाइ गह्यो पट पी
७४ त॥क॰॥१८॥ नवल कुंवर जानबो॥ अब
जो मुर लीले हैं॥ प्यारी राधा कह्यो जु हारा॥
के मेरी फगुवा दे हैं॥१९॥ फगुआ दे हु मं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रे होनहां छटो चोरउपाइ॥ हमारी भा
यो करि हो॥ ठाढे मांथी नाइ॥ क॥२०॥
तव प्यारी पिय सो कहें॥ अतिमाठे मृदु
बोल॥ काजर आंजे नैंयन॥ सुंदरवरी रीह
रहीक पोल॥ क॥२१॥ मुख मांडें छबि मई
कोटि मदन सिरताज॥ त्रिभुवन सो मगजी
ये॥ मानो व्याहन आए आज॥ क॥२२॥ की
रति अबि चलर हो॥ गुनगुनयह व्रजबास
॥ श्री गिरिधर को जस गांन नित करी चतु
र्भुज दास॥२३॥४॥ ॥४३॥ मनको मोहना
बोले हो हो हो री॥ हलधर मिलें मनोहर
जो री॥ नवल फागुन वकेलि नयोरंग न
व समाज सब साजुनयो री॥१॥ वाजत ता
ल मृदंग झांझ डफ गोरी रागुन्हर ली धुनि
यो री॥ गावत चेलगुपाल ग्वाल संग कि

न कहत फिरत घोष की षोरी॥२॥ आवन
75 सुनत सब गोकुल नारी साजि सिंगारि भ
ई एक ठौरी॥ निकसी नहां मुदित मंदिर
तें जुवती जूथ संग राधा गोरी॥३॥ एक अ
रगजा अगर लीऐं कर एक मिलाइ हरद अ
रु रोरी॥ एक ताकि पिचकाइन छिरकत एक
भरति भरि कनक कचोरी॥४॥ खेलत अति
रस भरे परस्पर नवकिसोर अरु नवल कि
सोरी॥ इत रंग रंगी कंचुकी सारी उत हीनी
न अरु पीत पिछोरी॥५॥ अति रंग मगी पाग सि
र सोभित उत कुसमावली और कच डोरी॥
कृष्ण: ७५ इत बंदन अबीर बल मोहन लीये कुमकु
मा के सरि घोरी॥६॥ आ मिल परसत
सुंदर अंग गहि पट रो रा नंक जोरी॥
कहत नबने रो रूपां की छबि मानों त्रिभुव

CC-0. Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

नसोमाचोरी॥७॥ मगनमईतनकीसुधि
भूलीसमझिनपरेकौंनहेकोरी॥ अंतरतें
अनुरागअगटभयोप्रेमसिंधुमरजादातो
री॥८॥ सुरविमांनकौतूहलभूलेलीला
ललितदेषतसुखसोरी॥ चतुर्भुजप्रभु
गिरिधरनचंदमुखचितवतवधूसमूह
चकोरी॥९॥५॥ ॥४४॥ नवलकन्हाईहो प्या
रे॥ ऐसोबकजारोनिवारे॥ हांनकहांकोहोला
गे॥ चलेजातअपनेमांगे॥ टेक॥ आवतजा
तसदारहीहोकबहूंनसुनीयोकांन॥ अ
बकछुनईचलाईहेहोदूधदहीकोदांन॥
१॥ सदासदाहमदांनलीयोहोसुनिहोन
वलकुंवारि॥ ओ[illegible]वालिनुमकेरहीदा
नहमारोमारि॥ ॥ठालेठूलेफिरतहो
चलोमोहिघरकांम॥ अनोतयांनचला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

76

जाइ रहो रखा जी सुंदर स्याम ॥३॥ स्यांम सषनि
सों यों कह्यो हो घेरो सब निकुं जाइ ॥ दीठ बहु
तइ ग्वालिनी मठुकी लेहु छिडाइ ॥४॥ गाइ
चरावन मिस विपनि मे हो लूटत हो ब्रजना
रि ॥ कह्यो गी जाइ ब्रजराज सुं ए सोबात निवा
रि ॥५॥ मधुमंगल कहे स्याम सुं हो दान ले
उ कछु छीडि ॥ इन सों दिन दिन कांम है हो
जिनि बीजो अतिबाढि ॥६॥ मांची कहे के
हसत हो हो हमहिं होति अवार ॥ सब स-
षियन सैंनि निसिं न वेंन देंग हने दे प्यारी
को हार ॥७॥ मदन मोहन पिय हरषिकें
ही त्री यो हार पेंतें हार ॥ अपने कंठ करि
मेल हीं गज मोतिन उर चार ॥८॥ सब
सषनि मिलि मतो मत्यो हो कीनो एक उपा
इ ॥ प्यारी कुं गहने दीजिए चोर न ही कोउ

कंठ
कल्मः
७६

नलिबिसाषाभाज हीं हो प्यारी तमीत्र्केलि॥१

दा ३॥ दीनूगोविंद प्रभु नवकुंजमें पियप्या

री केलि॥१०॥६॥ ॥४५॥ षेलतमदमोहन

पिय होरी॥ लरिकासकलसंगलीकुलके।

करतकुलाहलव्रजकीषोरी॥१॥ नवनमव

नतेंनिकसिसुंदरीत्र्लिमफुलितमुष

नवलकिसोरी॥ सोंधोलायेंकनकक ल

सनभरित्र्रगजाकुमकुमसुवासिघो

री॥ २॥ एकगुवालगुलालीलीएंकरएक

नलईबहुतहीरोरी॥ एकपलासकुसु

मरंगबरषतएकनत्र्बीरलीएभरिझो

री॥३॥ बाजततालमदंगझांझडफबी

चबीचमुरलीधुनियोरी॥ मधुरबचन

हसिकहतपरस्परगोविंदप्रभुलालनोखि

नचोरी॥४॥७॥ ॥४६॥ श्रीराधारवनसु

भावकहूंउनिहूनीरी॥टेक॥ कोमल

बातगातकोमल॥ सुनि हूतीरी॥ मेपाएपहुं
११ चांनि॥ कहुं सुनि हूतीरी॥ ११॥ चितवतकम
ठकठोरकुटिल॥ सुनि॥ मृगवषानसेजां
नि॥ कहुं सुनि हूतीरी॥ २॥ मुरलीनादव्या
धघंटा॥ सुनि॥ दीपकमुखमुसिकांनि॥ क
हु सु॥ ३॥ भ्रुवधनुकलोचनसायक॥ सु
वेधतवधूहरनांन॥ कहुं॥ ४॥ स्यामजितेक
तपनतिते॥ सु॥ प्रगटदेषियतमांन॥ क॥ ५॥
षटपदकीइहहालचाल॥ सुनि॥ कुसुम
कुसुमलपटांनि॥ कहुं॥ ६॥ अहिताहीको
प्रांनहरे॥ सुनि॥ जोपावेपयआंनि॥ कहुं
॥७॥ घनप्रियपंषिविषावाकल॥ सुनि
कप्सः जलवरषतकरनांन॥ कहुं॥ ८॥ पहलेम
७९ नपाछेंसर्वस॥ सु॥ होजजनसंगसु
जांन॥ कहुं॥ कहुं॥ ९॥ गोविंदप्रभुनंदसुत

तकिसोरा॥चरणछुकोजिनिपा॥नि॥क
हूंसुनिहूतीरी॥१०॥ ॥८॥ ॥४७॥ ॥
जागतसबनिसिगतभईरंगभीनेहो॥
मलीबीनीमलेंआएप्रात॥लाल रंगभी
नेहो॥१॥इतलोहितदृगरंगमगमे॥रं
ग॥मनहूंमोरजलजात॥लाल॥सकु
चतहोकतलाडिलो॥रंग॥दुरतनउर
नषयात॥लाला॥२॥बोलहुबोलप्रतीति
के॥रंग॥सुनहूंसांवरेगात॥लाल॥३॥
प्रियाअधररसपांनमत्त॥रंग॥कहतक
हूंकीकहूंबात॥लाल॥४॥केससिथल
बेलेवेससिथलरंग॥सभिमुषसिथ
लअंमात॥लाल॥६॥चालसिथिलसु
वमालसिथिला॥रंग॥विदुमसिथल
सोहात॥लाला॥७॥गोविंदप्रभुनंद

78

सुतकिसोरा॥रंग॥ बहुनायकाविष्णा
त॥लालरंगभीनेहो॥ ८॥ टी॥ ॥४८॥ प्ररि
वासथमकुंञ्चरकुंदेषनचलिंव्रजनाभ
रि॥ञंगञंगछबिनिरखतलीयेलाल
मनुहारि॥१॥ जदांमकुसुमनकीपे
हरेंश्रीगोपीनाथ॥रचितविगुंथिसंवा
रीश्रीराधाञ्चपनेहाथ॥२॥ तीजतरून
ननतरलितउरगुंजामनिहार॥३॥
कुचपरलरलटजटकतपियसंगक
रतविहार॥३॥ चोपिचतुरचितचंदन
चरचितमांवरेञंग॥विविधिभांतित
नपेहरेंनानावसनसुरंग॥४॥ पांचें
कृष्णः ७६ प्रमदाप्रमुदितसबमिलिगावेंगीत॥
हावभावकरिरिझवतिरसिकसीहा
मांमीत॥५॥ छठिकोंछेलछबीलोछि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रकतहांहैंअनूप॥ सोभावरनीनजाइजे
गोकुलकेभूप॥६॥ सातैंसकलसषासंग
घरघरदेतबगारि॥ सुनतकेलिक्योंनह
लनिकसींघोषकुंवारि॥७॥ आठैंअतिश्र
तुरकेअबलीनोपियघेरि॥ मुरलीपीत
पटरूटकतआंइबदनतनहेरि॥८॥न
वमीनवलनागरीनवकुमकुमरसघो
रि॥ आयपिचकाइनछिरकततकितकि
नवलकिसोरि॥९॥ दसमीदसौदिसातें
अतिप्रफुलितबनराइ॥ मदनबसंत
मिलिषेलेंअलिपिकसेनासाइ॥१०॥ एका
दसीएकओरराधासंगसबनारि॥ उतहीं
कुंवरबलमोहनग्वालकजूथमझार॥
११॥ द्वादसीदोऊदिसातेंषेलेंराइदरगाहु॥
मेरिदमामेंधोंसाकोकाहूनसंभार॥१२॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौर तेरसितरनीगनपरबरषतसुरंगनबी
राइतत्तेंकै उततैंमईपरस्परमीरा॥१३॥
चौदसि चहूंदिसातैंउठत्तसुपरमलमो
दा॥गनततनकाहू जगमेंब्रजजनकरत
किलोल॥१४॥ दन्योपरिदूरनमसिग्रानं
देसबलोक॥ योषराइबलछायोकरतस
कलसुषमो॥१५॥ इहिविधिहोरीषेलैं
बरषतसकलग्रानंदा॥जनगोविंदबलि
बलिजाइजेगोकुलकेचंदा॥१६॥ ॥१०॥म
होहोहोरीबोलतब्रजबालकसंग॥षेल
तफागुगोवर्द्धनधारी॥ग्राईबनिनवलन
लब्रजसुंदरिसुमगम्मंवारीसुठिमेंडुर
मंगे॥१॥वाजततालमृदंगग्रघोटीग्राव
जउफसुरबेंनउपंगे॥ग्रधरबिंबबिचवें
नुमधुरधुनिमिलतसमसुरतांनतरंगे॥२॥
कल्प: ७८
79

तेतंगुलालश्वीरकुमकुमाविहि
खिमांतिरखिमंडितखंगे॥ॐमनदास बीसुवेन नरक
सनुनेषसिषसोहनबलरूपछबिको
टिखनंगे॥३॥ ॥१॥धनीनगनिला
वला॥ ॥जापानैदसापवर
पागनकगुका:साई॥भसुद
नकरनिकुलाहजगावनिगा
टिलुणाई॥१॥सबलाटकुप
गमना:पागोंदईहैदिखाई॥
जसुमति:नति:पादरसंमा
तरनवनबुलाई॥२॥तिन
सेसुखनापिकालागानपर
मसुणाई॥निकलिहसलिन
संकसकमांनुमतिकाई
॥३॥बहुमोलीमनिमालास
बनदेहमनिजाई॥मनिमा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तोलेकहाकरेंमोहनदेइदिखाई
॥जाबिनदेखेंसुंदरसुखनांहि
80 नेपरतरहाई॥मातपितापति
सुतगृहलागतरीबिखसाई
॥५॥सुनिकेंमेंमबचनतामों
दरदइहेदिखाई॥घरमेंतेंघ
नस्यामसुजानरिजरिकांगि
नीलाई॥६॥नखसिखसुंद
रस्यामरूपलोबनितराधिकाई
रहीभ्रजबधूबनितारकेंकुनि
छिमांनहुंपाई॥७॥अरगजा
चंदनबंदनचहुंदिसतेंलेधाई
॥नरतगांवतेलालहिंकरनि
कनकपिचकाई॥८॥मंडित
करहिंकपोलसुएकतेंकाजरसुं
ई॥दरसपरसपायप्रतिस
यसुंदरिसबलपराई॥सास्य
८० हलोलाइपतिललितसोतोनंद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सांनीनाई ॥ आलिंगन चुंबन
रस नहीं सुरझत सुरझांई ॥१०॥
कुच उरु जंघा वक्री चम चोऽप
ति श्रम की रूप टांई ॥ पंचल
सों पट जोर के रा के सकुचसि
रनाई ॥११॥ दंपति सौं नग स
पति को इपीवत नेऽघाई ॥
जसुमति उठ तमुदित सब हि
न की करत बडाई ॥१२॥ पट
द कुल ऽपान घन चोली दि
म गाई ॥ जसुमति ऽपति प्रफुलि
त मन सुंदरि सब पहराई ॥
१३॥ यह मेरे ऽआंगन रहै सो
बहुरी नित माई ॥ निकसी दे
त ऽअसीस जीयो तेरो मोहन
राई ॥१४॥ नंदनवन सुख
गयो लाल जी की कीरत गाई

यह ब्रज माधो दास रहो नित मैं
81 दहु हाई ॥१५॥१॥ ॥ बरसां
ने क्रौ जोद मो गन कउवा प्रांई
॥ कीयो हे उहार नंद जाको नीतर
नवन छुसांई ॥१॥ एकु नाचत
एकु गावत एकु बजावत तारी
॥ काहे मो हनरायकु दिरहे मै ये दि
का वति गारी ॥२॥ आरदादेस
ब्रज रानी प्रबनि जनातिह मा
रे ॥ जीतम सजन कु सब धूपा
ए हरस नु सारे ॥३॥ रुनकु
व रि मेरी राधा प्रब हीजि न मु
र व मांडो ॥ जेंवत कु वैस खन र
संग जेन नि चक्रारी छांडो ॥ ग
के सर बोर न आरगजा कित मोह
८१ न परडाको ॥ सीत लजो कोम ल

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तनं तु महीं दितना बिचारो ॥५॥
छांवतजऊपर देरहीं दोऊ माता
तिन्हु तोरी ॥ बरजतनारतकुम
कुमोत्न जैनवत्सा किशोरी ॥६॥
करतरों हनीजसोदाश्रोली
ज्यों डे़त्र्याजों ॥ जायनरहु ब्रज
राजे मोंरनदीजे मांजो ॥७॥ मो
रनमांजो पैयेतोादनदसहम
हादेंहो ॥ जोपकुंवरक्वेपलटें
जो चाहे सोलेहो ॥८॥ सुबल
सुबाहुश्रीदामासुनतश्रया
तकज्याए ॥ कंचनमांटलरे
दाघिले गोपानसिरनाए ॥९॥
ग्वालगउपालसरवासबहसत
देदेकिलकारी ॥ दूधलीयोनी
तरतेंछिरकीसबबजनारी ॥
१०॥ जोरसुरवसोनाबाढीकहत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कहत करि आवेगा सखि लिता कुंव
82 रि कुंवर कौं संच रग हि राहि ला
वे ॥१॥ जहँ हैं गिरिं तरंगात र
तजि वृह्य वंत्र ज बासा ॥ गिरि
गिरि पर तजा सिनमें ऽ र डोर
न भि मासा ॥२॥ प्रजू भृ वृंद
अज बासी ऽ अटक कौंन की मौ
ने ॥ कहत नैया माधौ जन जाय
चरहु अरव जाँ मैं ॥३॥ इत नैं
मांग्यौ पांऊं देहु वृंदावन बासा
॥ कुंवरि कुंवर तहां विहरहिं
वर रंग कमल की आसा ॥१४॥
२॥०॥ सुंदर स्याम सुजांन सि
रोमनि देंऊं कहा कहि गारी हो
॥ बड़े लोग न के ओगन बरन
त सकुच होत जीय भारी हो ॥१॥
८२ कौंन रिस के पिता कौं निरखो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जातिपांतिकोजांनेंहे॥जाके
जायजेसीयेआवतसोतेसी
येजांतिबखानेंहै॥२॥माया
कुटिलनटीतननचिनवतयह
धोकोंनबडाईपाइहै॥ऊंहि
वंचलसबजगतबिगोयोज
गंतलंनाईहसाइहै॥३॥तु
मतुनिप्रगटहोयबारेतेंक्री
नचलाईकोनीहै॥मुक्तोबधू
उतमजनलायकलेआधम
नकोंदीनीहै॥४॥बसेदस
मांसगर्भमाताकेउनआसा
करिजाएहै॥सोइरछाउजी
नकेलालचहिगएपूतपरा
एहै॥५॥बारेहातेंजोकुल
कोपीनस्तनेसदनबडाएहै
॥तिनिसेकनरांपेठिरंकसों

राधे के जन चारे हो॥६॥
83 आप कहां यध नीके तेरा
तक्रप नसों मां ग्यो हो॥मां
न जंग परतु जे जाचत तेक
सैं कोय न जाग्यो हो॥७॥ल
रिकाई तें जो चिन के उम
रू में नवन ढहो रहे॥ज
मुनां रू तजो पकन्यन के
निपट निसजा पट चोरे हो
॥८॥सब कोऊ कहत नं
द बाबा घर बिस्वेरत न
प्मो ले हो॥जरें ऊजसि
रमोर परवो बा जांयन
के संग डोले हो॥९॥बेन
ब जाया विसास कीये बन
बोसिपराई नारी हो॥
83 ते बातें सुनि राजे सजा

मेंछे निसंकबिस्तारी हो
॥१०॥ राजसभाको बैठन
हारो कोन आया संगनां चे
हो॥ पुर जेस हि तराजस
भामें कुवजा देखत राचे
हो॥११॥ लेलेन जे राजन
कीकन्या यहधी कोनन
लाई हो॥ सातनामा उ
गतमें ब्याही उलटी चास
चलाई हो॥१२॥ अपनी
सुनद्रा आपुहि छलक रि
अपर जनसंग चजाई हो॥
जोजनक रिदासी सुन के
घर जादीजा तिलजाई
हो॥१३॥ बेहन पिताकी
सासक हावे नें कलंलाज

84 नःपावेहो॥१॥ तेपरदीनोउ
विधाताःपरिवलजोकठकु
राईहो॥१४॥ मोर नवसीक
रनचटचेटकेजंत्रमंत्रको
जोमेहो॥ ताहीतेंतुमनसे
नतेंकहिनसेनलजगजो
नेंहो॥१५॥ बरनौकहाजो
थामतिमेरी बेदोपारन
पावेहो॥ दासगज्ञाधर
प्रभुकीमहमाग्नगाव
तउरःपावेहो॥१६॥३॥
॥ रससरसरस्योबर
सोनोजु॥ राजतरवनीक
रवांनोजु॥१॥ मरिमिमेमें
दिरतहांसोहेजु॥ रविस
सिउपमांकोंकोहेजु॥२॥
८४ ब्ररवजानिजोपतहांराजे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

जू॥ कीरति जाकी जग गाजे
जू॥३॥ नित पर मकुलाहे
लो नारी जू॥ जावत मंगल
ब्रज नारी जू॥४॥ जब दिन
होरी को आयो जू॥ नो तो
नंद गांव पठायो जू॥५॥
सु तिके मन मोद बधाए
जू॥ सब सखा संग लोए
आए जू॥६॥ तब जसु मति
न्यों ति बुलाई जू॥ सम थे
नि सम धाों नैं आई जू॥७॥
कीरति आजें हे लीनी जू॥
मनुहार बोहत करि की
नी जू॥८॥ अपति के पाइ प
नु गहे कीनें जू॥ हम तो प

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

85 पनें करिसीनें जू॥८॥
उजगनें नपरें कछु गाया
जू॥ कीनो अजसकलस
नाथा जू॥१०॥ तुम तो सब
कौ सुखरासी जू॥ एसु प्र
सकीए अजवासी जू॥
११॥ जो जो निजनाव न
विराजो जू॥ वरसां नो
सकलनिवाजो जू॥१२॥
तुम तो सब कौ सुखदाई
जू॥ मुखकीजे कों न बडा
ई जू॥१३॥ तुम तो यह नि
ज व्रत लीनों जू॥ जे रिजो
८५ जाच्यो सो दीनो जू॥१४॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

यह जासु तुम्हारो जगजी
नैं जू ॥ मुख पर कहि क्यौंन
बखांनैं जू ॥१५॥ तब कु
रु जाहि ढिग ब्योहारी जू ॥
गावत गारी व्रज नारी जू
॥१६॥ तुम सूं पूछै ए कुवा
ना जू ॥ तुम सां च कहो
सब गाथा जू ॥१७॥ जब
नर नारि हारें प्यारे जू ॥
बहु नां मन्न ष्म के गए जू
॥१८॥ सुनि वासुदेव करि
लेखे जू ॥ बसुदेव कहैं तु
म देखे जू ॥१९॥ यह सु
नि सुनि बात निहारी जू ॥
श्याचरज उपजो जाय नारी
जू ॥२०॥ श्योरो सै का जाय

आवे जू ॥ चंन्देद कोऊ न
86 हीं पावे जू ॥२१॥ पनिसा
घपरमतु मपायो जू ॥
यह फलकहां तेजायो जू
॥२२॥ याकेगुनरूप न
न्यारे जू ॥ यह मिलि हैं कु
लनतिहारे जू ॥२३॥ ब
लिकेसबकोंसुखदीजे
जू ॥ कछुकहोहमारो की
जे जू ॥२०॥ रहाये कछु
दिवसहमारें जू ॥ हम तो
हें सकलतिहारे जू ॥२४॥
एतोऊपरकरि जानो जू
॥ नंदगांवसोई बरसानों
जू ॥२६॥ जांनत जैसें हरे
८३ जू ॥ तैसेई अखजानतिहा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

र जी॥२७॥ एतो ऊरें पर
म स नेही जी॥ एक प्रां
ण देही जी॥२८॥ सुनि
सु न जसुमति सुसिकी
नी जी॥ बोली मधुराए क
बांनी जी॥२९॥ बसिहैं क
छू दिवस तिहारें जी॥ श्री
राति चालि बस हू हमारें जी
॥३०॥ तब हसिहिं सकल ब्र
ज नारी जी॥ जसुमति की
ओर बिचारी जी॥३१॥ ब्रज
नयो कुलाहल नारी जी॥
नांचत दे दे करतारी जी॥
३२॥ यह रस बरसे बर
सोनें जी॥ बिनकुं बरि क

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

87 पाको जानें जू॥३३॥ की
रति जसु मति जसु गा
यो जू॥ श्री जे वास माधु
री पायो जू॥३४॥ ॥
॥राग जैतश्री॥ ॥ध्या
रसिक कुंवरि मन सोंह
रि होरी खेलो जू॥ [illegible]सु
नाती रसघन कुंजन में
मिलि जुवतीदल पेलो
जू॥ [illegible] उलाल ऽपचार
ऽपरग जात क्रिऽपौरिवन
में मेलो जू॥१॥ तब श्री जा
केसरि का घर घर तैं टेरि
<9 टेरि सब बोले जू॥ ऽपाए
हें ऽअपने थोक न उरि जो

सोगउमन मोकलछोडे ज
॥२॥ जैसेम नजाए वाग
ले सवहिन कों पर राए ज
॥ तैसे इपपनें का जैस
बसों धेसह तम गाए ज
॥३॥ पहलैं सबन कन
कतिचकाई परम मुदि
तमन दीनीज॥ तापाछें
धैरतन जरित बालिह
ऊ इपापन सोनीज॥४॥
इपतिरुरंग बहु सरकेरस
सोंकनक कलस नरिसी
नेज॥ फेरन सुरंग गउल
लदबीर नराय नरेरंग
मीनेज॥५॥ चोचाम ६ ज

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

88

कादसाखिवगोरामगनदद्य
सिखोरीज्॥ चलेहैंसिवा
यज्ञरगजाकुमकुमचंदन
वंदनसोरीज्॥६॥जोरगज
कज्ञावजडफमनवरिजां
झतालमुरवचंगाज्॥बी
नरबाबकिन्नरीजालरि
बाजतसारसमदंगाजू
॥७॥सबसमाजलेजाय
जुरेभरवजीनजोपकोपो
रीजू॥तबराधासोंकह
नमुदितमनजहांतहांतें
उठिहेरीजू॥८॥आवनसु
नतभरवजीमनंदनीज्ञ
त्तसातुरउठिधाईजू।

८८

सखी सकल छोरें चहुंदि
स तें देखि स्याम मन की
ई जो ॥९॥ पंच लखी च
दुराय कनक पिचकाई
नारि नारि लाई जो। ताकि
ताकि सुंदर मुखकु पर
छिरकी पोर छिरकाई
जो ॥१०॥ बलसमेत सब
सखाउ मति तरुनी जन
कु पर धाई जो ॥ हो हो कर
त परसास कुसमर गन
रि नारि कलसनि नाए
जो ॥११॥ करि विचार म
न में ललिता तब मधुमंग
ल की द्विज-पाई जो ॥ तेरे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

89 पायलागतिहौंप्यो लि
नंदलाले सकराई जू॥
१२॥ तब मधुमंगल क
ह्यो सरव नसौं रुजन लिए के
खिधि कीजेजू॥ हमसब ए
क ओर ह्वैके पकराय स्या
म कों दीजेजू॥१३॥ लै लै
रुरंग उलाल अपरु नसों
ब रसिहूं ओसर ह्वीनों जे
॥ देखत अपचरज होत घों
सजातें कुरू नि सासिसि
हीनों जू॥१४॥ एक दोरत
ओसकहीरी लेगई स्याम
४९ जरिकोरीजू॥ सोंधे सों

मुखमांडि कहतं=सबकसी
बनायह जोरा ज॥१५॥पी
तांबरमुरलीकरतें लेल
लिताविसारवाजाजीज
॥तिहिं=ओसरपकरे छैल
सोबलक रगारिले=सख
यां=पांजी ज॥१६॥कलो
कलफगुवादहोतु मसु
नहुंजो कुलके राईज॥
फगुवा देन कहो तु खसं
न बमुरली=आनिगह
ई ज॥१७॥ तो सेई=सबउ
जपागे रसरुं सबनंदबा
स्पे=सार ज॥ बारि=परनी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

सो बिबिधिभांतिसौंजसुमति

९० जसुमतिकरतबधाईजी

॥२८॥हौंनचलौंजमुनां

किलकतसबसोंनाबर

नीनजाईजी॥देखतही

अमरेसथकितनयोपो

रपनिअछिकराईजी॥

२९॥खेलिफागुअनुरा

गसिंधुबढ्योसबजा

जनसंगलगाएजी॥सुं

दरबदनकमलमुखकु

परखुबीरबारनैंजाई

जी॥प्रेमहरिहारीखेलै

८० जी॥३०॥१॥ ॥श्री॥

तिनवतरसिक किसोर कों

खेलतरी प्यारी राधा फागु

॥ पद ॥ रैंनबरंगचूनरी॥ प

गीयारो॥ पाछी॥ अंगहिलाग

॥१॥ कनककरवचितसु

चीआँबनो दुलरीरी मोति

नविचलाल॥ किंकिनी

नेपुरमे खलालोचनरी

सुनासुरवदबिसाल॥

२॥ जौरगातकी कहाकहौं

केसररीरहीकचंपकेगा

य॥ सब सुंदरी मिलिगीव

हीदेखतरी मनमथपुर

जाय॥३॥ मदु मुसकनि

मुखदुंदयो सिचकाईकर

लईदुराय॥ बंदनबूका

अंउसी नागर रीसे हुई
९१ हे उठय॥ जा मी जत सो
चन नागरी पकरयो री पी
तां बर धाय॥ सखी उरि
सब आय जाई द्वेरे रा मो
हन बल आय॥ ५॥ मुरली
छीनि चूं बन दयो की नौरी
अधरा मृत पांन॥ कमल
कोस ज्यों भृंग को छांउत
नहीं बिन जाई बिहांन॥ ६॥
मां न हुं बहुरंग बिकसित
पदमनि मधुकर री मानो
मोहन लाल॥ नैननि स्वा
८५ द सबे गरी पीवत री मक
रंद रस साल॥ ७॥ रिउ बसी

तबजहराज्यौं कू जतरी सुक
त्रिकरा लिमोर।। तांनमौंनग
तितेदसों जाव तरो तिरछार
पीयजारा।।। बेंनकांऊ
फकालिरी गो मुरव तालमुर।
ऊमुरवबैसा।। ऊबताजाय
बजांबहीले ततरीमाधिसी
बलऊपीगपसी।। मिरखिवमि
रखिवसऊपाँबहीहमनलाए
रवगमरगभजभोमा।। मीबि
ललापदरजभतापबलग
बतविसादसभजरासोाल-
मर।। ।। रागविसगडे।।
बरसांनेकीग्यालनीरवेल
तफाऊबसीतहे।। सांकनमे

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

९२ तें नकालकीमातपेतासु
तकंतहे ॥१॥ वेदजगायं
त्रवतीमधिनाथवृतारा
तदाधाहे ॥ सहजसरूप
सुहांवतोंसोनासिंधुःप
गधाहे ॥२॥ सकलसमाज
साजेंचलीज्योंईबटसंवे
तहे ॥ पठईसखीएकःसा
पचीतेंदकुंवरकेहेतने
॥३॥ चलीसबचतुरानि
हेमनीखेलनकोरसम
गहे ॥ रसिककुंवरिश्रा
५५२ खचींनवीतुमसोंःपति
सुनागहे ॥४॥ रामक
ासहसियोंकसोसुनेक

ਨਚਾ ਸੀਦਾ ਮਨੋ ॥ ਨਮਧ
ਰਣਾਂਈ ਸਬੇ ਕੁਲੀ ਤਨਮ
ਰਰਤਿਸੰਨਾ ਮਨੋ ॥੪॥ ਬੇ
ਗਿਚਲੋ ਸਭਜਾਨ ਲੇਹਿ
ਚਾਵਨ੍ਹ ਅਪਰੇ ਣਾਘਨੋ ॥
ਜੇਸੰ ਬੋਣਹਿ ਨਣਾਂਵਲੀ ਲੇ
ਗਿਸਬੇਣਾਵਸਾਘਨੋ ॥੫॥
ਮਨੰਤਣਾ ਬੀਰਗੁਲਾ ਲਲੇ
ਦਕ੍ਰਿਸਾਂ ਨਕੁਰਾਯਨੋ ॥
ਬਾਹਤਕ ਨਾਸਸਾਂਘੇ ਮਨੋ
ਕੁਮਕੁਮ ਨਾਰੀ ਦਿਚਕਾਂਈ
॥੬॥ ਦਲਬਾਦਲ ਮੇ ਦੇਖਵੈ
ਸਅਮ੍ਰਤਚਣਾਈਆ ਯਨੋ ॥
ਮੇਹ ਬਰਸਾਬਰਸਾਈਣ
ਭਤਸਵਲਮ ਚਾਯਨੋ ॥੭॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कमलनकीसेनचलासी
93 कुसमजेंददेमारहो॥मुर
लाजेबरवमेंनांहोहायें
सबलारीहो॥४॥चंद्राव
लीबलिजगईस्यामाजी
गईस्रीस्यामहो॥सखाग
लसबलाजिकेंलायेछिड
पदमामेहो॥५॥संकरख
नसोंपेचरेस्यामचरेस
कुमारहो॥प्रांनसिरीस
स्यारेकेंजेरचबलायो
लालहो॥६॥रसबसचई
८३ ब्रजसुंदरीलीलाकरीयन
जायहो॥ब्रजजनसुंदर
नवसकायेपीजिनगाव

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

रथ नराय से ॥२॥१॥
नेरी करया न विचय र व्या
की ना॥ मैं कोनाय छडी कु
कोदी सिरते हूं हाट रखो ति
कोना॥१॥ पाया गुज न
म्हां रवों वि च मैं दरव न
[illegible] सुख सोना ॥ म रवी दे
स्यदी लाज मरेंदी कं ब न
जाकोंदी ना॥२॥ एसे नवी
जे मीज र नंद दे कल्यो वे
ने ब्राजजन मैं ना॥२॥ रवि
कब्रा नम सों ना ना रवांदी
तंना री तेजी ना॥३॥
राज कुड ओ॥ ॥जावन
घमारे लां ब्राजको स कु
CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ਸਾਰਿ ਵਾਰਿ ॥ ਚਿਤ੍ਰ ਪੁੰਕਿਤ
94 ਤਪ ਸੈ ਵਾਰਿ ਗ੍ਰਨਰ ਕੋਟ
ਤ੍ਰੀਹ ਵਾਰਿ ॥੧॥ ਕਨਾਵਤ
ਰਿਨ ਵਾਰਿ ਤ੍ਰਵਾਰਿ ਸਤੁ ਮਿਮ
ਕੈ ਸੁਖਰਨਾਪ ਤ੍ਰਰਨਕ
ਨੀਨੈ ਕੁਨਾਇ ॥ ਸੰਰਖਪੀਗ
ਵੀਗ ਤੰ ਪੀਗ ਮਹੁ ਵਰਿਖਮੀ
ਸਹ ਨਾਥਾ ॥੨॥ ਕੰਚਨ ਹੋਦ
ਚਿਆਰ ਕੀਸ ਨਾਲ ਕਠਨਾ
ਰਹੈਂਕੁੰਨੀਮਦਗਰਾਗਹੋਨ
ਨੈਰਖਾਰ ॥੩॥ ਵੰਦਨਮਗ
55 ਨਦਗੁਨਾਲਭੁਖਸੰਭਤ
ਕੀਏਤੁਪਾਲ ਕੈਸ ਕੈਸਰ
ਤੁਨ ਕਿਪੁਨ ਕੇਚਨ ਕਰ
ਸੀਖਵਾਰਿ ॥ ਚਿਚਕਾਂਈ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

करजांईरथाछरतसउती
ईासऽचरीतमीपतांईं
किरकतिरंनीतारिताहि
॥५॥ इतिश्रीचित्रबोल
चित्रबिऽरतमितिउव
तीजत्रथकऽतेंसखीसर
नजत्रथहोतीहेगीतगारि
॥ कुतारिहासदऊबिचा
रिकउवातोंतकारिदे
प्रसीसउतरिचतींकप
माधुरीनितारि॥५॥१॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥८५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

301

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative